



Sarada to Devanagari Transliteration

॥ लल्ल द्यद – वाक् (वाख) एवं संस्कृत समीक्षा ॥





Sarada to Devanagari Transliteration

Table of Contents





Sarada to Devanagari Transliteration

Brief introduction to Manuscript

Title	लल्ल द्यद – वाक् (वाख) एवं संस्कृत समीक्षा
Identifier	
Place	
Topic	
Pages	
Subject	
Language	Kashmiri, Sanskrit (काश्मिरी, संस्कृतम्)
Script	Sharda (शारदा)
<p>This Manuscript is about sacred sayings of Yogini Lalleshwari (योगि नीलल्लेश्वरी /लल्ल द्यद), adored by all Kashmiris and revered by saints all over the country. The Manuscript has sacred sayings in Kashmiri (वाक्) and commentary in Sanskrit and is about 200 years old.</p>	

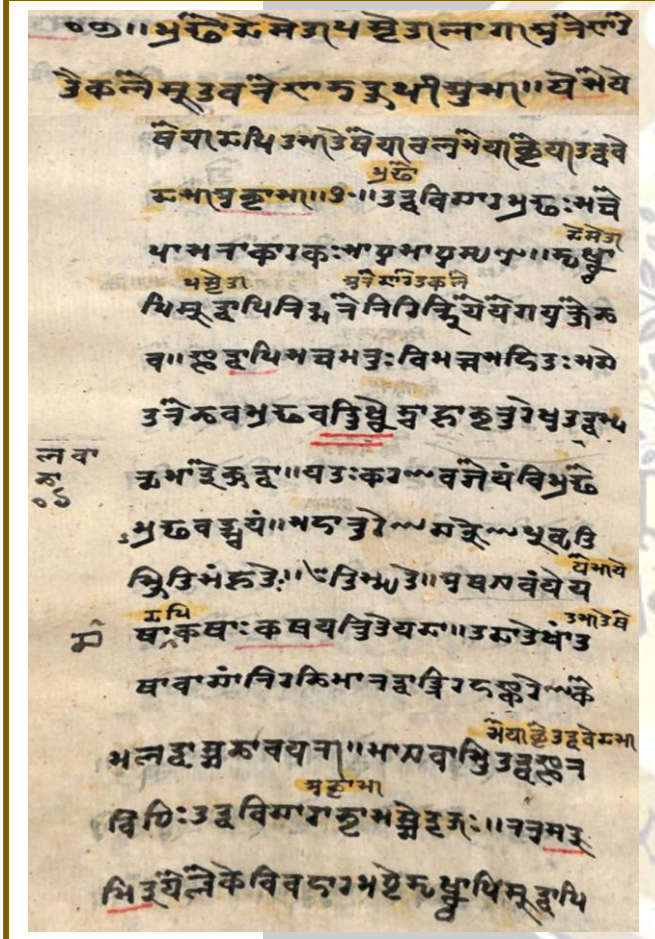


Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 02.09.2020

Page 32

Consonant by consonant transliteration



मू ढौ दे शे त् प श्ये त् ला ग् अ नो ज रो
 तै क लो, श्रु त व नो ज ड रू पी आ स् ॥ ये सो ये
 थो य् द पि त स् ते थो य् ब लु सो य् छ्यो य् त त्व वे
 द स् अ भ्या स् ॥20॥ [मू ढौ] त त्व वि चा र मू ढः स र्वौ
 पा स ना का र काः सा धु सा धु शृ णु ॥ [दे शे तु] दृ ष्ट वा
 पि [प श्ये त्] श्रु त्वा पि [अ नो ज रो त क लो] निर् म नो नि रि न्द्रि यो यो ग यु क्तो भ
 व ॥ ज्ञा त्वा पि स र्व स न्तः वि म र्श स हितः स चे
 त नो भ व मू ढ व त् ति ष्ठे द् बा ह्या भ्य न्त रे षु त त्व स्प
 न्द मा त्रो भू त्वा । यतः क र ण व र्गो यं वि मू ढौ
 ऽमू ढ व त्स्व यं। म हान्त रे ण च क्रे ण प्र वृ ति
 स्थि ति सं हतेः ॥ इ ति स् मृते ॥ अ थ ए वं ये य [यो स् ये]
 था च [द पि] क थाः क थ य न्ति ते य दा। त दा ते षां त [त स् ते थो]
 था वा चां नि र भि मा न न्वा ल्नि र ह इक रे ण को
 म ल त्वा श्च भा व य न् ॥ : सा ए वा स्ति [सो य छ्यो त त्व वे द स्] त त्व ज्ञा न
 वि धिः त त्व [अ भ्या स] वि चा रा भ्या स श्चे त्य र्थः ॥ न नु श त्रु
 मि त्र यो र्लो के वि वि हा र म ध्ये दृ ष्ट वा पि श्रु त्वा पि।

- Website page link is Page 50

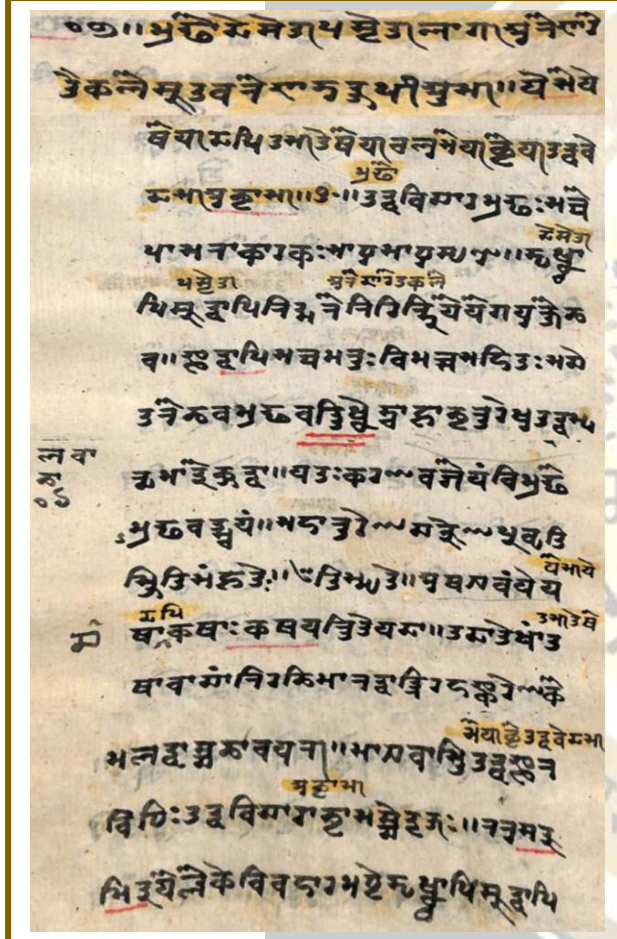


Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 02.09.2020

Page 32

Line wise sentence



मूढो देशेत् पश्येत् लाग् अनोजरो
तैकलो, श्रुतवनो जडरूपी आस्॥ ये सो ये
थोय् दपि तस् तेथोय् बलु सोय्छ्योय् तत्व वे
दस् अभ्यास् ॥20॥ (मूढो) तत्वविचारमूढः सर्वो
पासना कारकाः साधु साधु शृणु॥ (देशेत्) दृष्ट्वा-
पि श्रुत्वापि (पश्येत्) निर्मनो निरिन्द्रियो (अनोजरो त कलो) योगयुक्तो भ
व॥ ज्ञात्वापि सर्वसन्तः विमर्शसहितः स चे
तनो भव मूढवत् तिष्ठेद् बाह्याभ्यन्तरेषु तत्व स्प
न्दमात्रो भूत्वा। यतः करणवर्गोऽयं विमूढो
ऽमूढवत्स्वयम्। महान्तरेण चक्रेण प्रवृत्ति-
स्थितिसंहतेः॥ इति स्मृते॥ अथ एवं ये (योस् ये)
था च (दपि) कथाः कथयन्ति ते (तस् तेथो) यदा। तदा तेषां त
था वाचां निरभिमानत्वात् निरहङ्करेण को
मलत्वाश्चभावयन्॥ सा एवास्ति (सोय् छ्यो तत्व वेदस्) तत्वज्ञान
विधिः (अभ्यास्) तत्व विचाराभ्यासश्चेत्यर्थः॥ ननु शत्रु
मित्रयोर्लोकै विविहार मध्ये दृष्ट्वापि श्रुत्वा पि।

- Website page link is Page 50



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 02.09.2020

Page 32

Final version

मूढौ देशेत् पश्येत् लाग् अनो जरो

तै कलो, श्रुतवनो जड रूपी आस् ॥ येसो

येथोय् दपि तस् तेथोय् बलु सोय् छ्योय् तत्व

वेदस् अभ्यास् ॥ 20॥

तत्वविचारमूढः सर्वोपासना कारकः साधु साधु शृणु॥ दृष्ट्वापि (देशेत्) श्रुत्वापि (पश्येत्) निर्मनो निरिन्द्रियो (अनो जरो त कलो) योगयुक्तो भव॥ ज्ञात्वाऽपि सर्वसन्तः विमर्शसहितः स चेतनो भव॥ मूढवत् तिष्ठेद् बाह्याभ्यन्तरेषु तत्वस्पन्दमात्रो भूत्वा॥

यतः करणवर्गोऽयं विमूढोऽमूढवत्स्वयम्॥ महान्तरेण चक्रेण प्रवृत्तिस्थितिसंहतेः॥ इति स्मृते॥

(योस् ये) अथ एवं ये यथा च (दपि) कथाः कथयन्ति ते (तस् तेथो) यदा।

तदा तेषां तथा वाचां निरभिमानत्वात् निरहङ्कारेण कोमलत्वाच्च भावयन्॥

सा एवास्ति (सोय् छ्यो तत्व वेदस्) तत्वज्ञानविधिः (अभ्यास्) तत्वविचाराभ्यासश्चेत्यर्थः॥

ननु शत्रुमित्रयोर्लोके व्यवहारमध्ये दृष्ट्वापि श्रुत्वापि।

- Website page link is Page 50. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak.



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 02.09.2020

Page 32

Notes

1. Line **32.09**, I think either it should be इति स्मृतेः or इति स्मृतौ.
2. In Line **32.12** – that is कोमलत्वात्
3. In Line **32.14** - that should be - व्यवहारमध्ये

- Website page link is Page 50. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak.



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 03.09.2020

Page 33

Consonant by consonant transliteration

- 33
- 1 निरिन्द्रियेरुवभिकषमभृत्तृभभृत्कष्ट
 - 2 रुवतिउट्टमदू॥१०॥गालाकडेनिकुलप
 - 3 कुनिमयेनिडेयभावेरुमि॥मदरुत्तमभृत्
 - 4 एकोरेनिहुपुमलाटीकभाज्ञादुभिमि॥१०
 - 5 ॥पुववापुवमृवामाकषयतिरुत्तवववव
 - 6 रुवयतिमभकेपयतिमरुत्तनःमभरुत्तः
 - 7 भाषाभेदिताः॥यष्टकष्टयषामिमिउषा
 - 8 करेतिमेरुवेवामवः॥येकेष्टिदरुत्तमभे
 - 9 प्रियरुत्तमेवैपुएकरेतिमे॥नममदरुत्तम
 - 10 यातिमेकंवाकिष्टिदरुत्तमिउ॥यमामरुत्तम
 - 11 मृत्तमृत्तमिनिदनेनिरिन्द्रियेभिमुत्तमि
 - 12 नामउभृत्तमविममृत्तम॥उषेणननेय
 - 13 मृत्तमिदृष्टादियउंउंउषासिदुत्तम॥
 - 14 मृवगामृत्तमदेवीरुत्तकमृत्तमपुः॥उ
 - 15 तिभृत्तः॥नउत्तमृत्तमरुत्तमृत्तमपुः॥उ

नि रि न्द्रि यो भ वा मि क थ म स्य दुर्लभस्य सा म र्थ्य क स्य
 भ व ति इ त्या शङ्क्य ॥२०॥ गा ल् क डे/मु निं भु ल् प
 डे निं द पे निं ते य स् ये रु चि ॥ स ह ज क्त स म पू
 ज् क रे निं भु अ म ला न्यी क स् क्या ह् मु चि ॥ २१ ॥
 ॥अ थ वा अ [गा ल् क डे निं] वा च्य वा चा न्क थ य न्ति दु र्भा व भा व ना
 भा व य न्ति म म को प य न्ति च दु र्ज नाः सं सा र स क्ताः
 मा या मो हि ताः ॥ य स्य क स्य य था रु चि स्स त था
 क रो ति में भा वो वा भा वः ॥ चे त्क शि च त्स ह ज कु स मै
 प्रि य भ क्ति भा वै पू जा क रो ति में ॥ न म म ह त्प मा
 या ति शो कं वा कि ङ्चि त्क दा चि त् ॥ य स्मा द ष्ट्वा
 श्रु त्वा जा त्वा पि नि र्म नो नि रि न्द्रि यो स्मि [भु अम ला न्यी] शुद्ध नि र्म
 ला मृ त स्व रू प वि म र्श त्वा त् ॥ ते षां ज ना नां य
 स्य [क/ स् क्या ह्] क स्य चि द्य था क्रि या तं तं त था स्ति फ [मु चि] ल म्
 स्था व रा ज इंग मा दे वी कृ ति क र्म फ ल प्र दाः इ
 ति स्म तेः ॥ न नू त त्व स्व र्थ प द र्श नार्थ म् पा यं क थं

- Website page link is Page 51. **Note:** Lines in blue font colour and in brackets are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak.



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 03.09.2020

Page 33

Line wise sentence

1	निरिन्द्रियो भवामि कथमस्य दुर्लभस्य सामर्थ्यं कस्य
2	भवति इत्याशङ्क्य ॥२०॥ गालाक मुनिं भुल् प
3	डे निंदपे निं ते यस् ये रुचि ॥ सहजक्त समपू
4	जा करे निंभु अमलान्यीकस् क्या ह मुचि ॥२१॥
5	अथवा अवाच्य वाच्य वाचान्कथयन्ति दुर्भावभावना - [गा ल्क डे निं]
6	भावयन्ति मम कोपयन्ति च दुर्जनाः संसारसक्ताः
7	मायामोहिताः ॥ यस्य कस्य यथा रुचिस्स तथा
8	करोति मे भावो वाभावः ॥ चेत्कश्चित्सहजकुसमै
9	प्रियभक्तिभावैर्पूजा करोति मे ॥ न मम हत्वा मा (न मम हत्ष)
10	याति शोकं वा किञ्चित्कदाचित् ॥ यस्मादृष्ट्वा
11	श्रुत्वा ज्ञात्वापि निर्मनो निरिन्द्रियोऽस्मि [भुअमलान्यी] शुद्ध निर्म-
12	लामृतस्वरूपविमर्शत्वात् ॥ तेषां जनानां य-
13	स्य कस्यचिद्यथा क्रिया तं तं तथाऽस्ति फलम् [क स् क्या ह] [मु चि]
14	स्थावरजङ्गमा देवी कृतिकर्मफलप्रदाः इ
15	ति स्मतेः ॥ नन तत्वस्वरूपदर्शनार्थमपायं कथं

- Website page link is Page 51. **Note:** Lines in blue font colour and in brackets are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak.



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 03.09.2020

Page 33

Final version

निरिन्द्रियो भवामि कथमस्य दुर्लभस्य सामर्थ्यं कस्य भवति इत्याशङ्क्य ॥२०॥

गाल् कडेनिं भुल पडेनिं दपिनिं ते यस् ये रुचि ॥ सहज कुसम पूज् करेनिं भु अमलान्यी कस् क्याह् मुचि ॥
21॥

अथवा (गाल् कडेनिं) अवाच्य वाच्य वाचान्कथयन्ति दुर्भावभावना भावयन्ति मम कोपयन्ति च दुर्जनाः संसारसक्ताः
मायामोहिताः॥

यस्य कस्य यथा रुचिस्स तथा करोति मे भावो वाभावः॥

चेत्कश्चित्सहजकुसमैन् प्रियभक्तिभावेन् पूजा करोति मे॥

न मम हत्वा मा याति शोकं वा किञ्चित्कदाचित्॥

यस्मात् दृष्ट्वा श्रुत्वा ज्ञात्वापि निर्मनो निरिन्द्रियोऽस्मि (भु अमलान्यी) शुद्ध निर्मलामृतस्वरूपविमर्शत्वात्॥

तेषां जनानां यस्य (कस् क्याह्) कस्यचिद्यथा क्रिया तं तं तथाऽस्ति (मुचि) फलं स्थावरजङ्गमा देवी
कृतिकर्मफलप्रदाः इति स्मृतेः॥

- Website page link is Page 51 **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak.



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 03.09.2020

Page 33

Notes

1. In Line 33.08 the word **चेत्कश्चित्सहजकुसमै** – Some scholar needs to check this, because **विसर्ग** is followed by a hard consonant and then there is **रकार** that does not seem to be correct
2. In Line 33.09 the word **प्रियभक्तिभावैर्पूजा** needs to be verified

Website page link is Page 51. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak.



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 04.09.2020

Page 34

Consonant by consonant transliteration

1	धुषभगमेमेडासङ्ग ॥१०॥दिनच्छिजि
2	उररनीपुभिङ्गुत्तागगनभाकनेविकसि
3	॥मङ्गेरुदगमेनाभवेभिसिवप्रुरेगसु
4	कामिगङ्गुभृ॥११॥धृङ्के उडुमुङ्गयथी
5	दृउरुभउगुदभाउंभृङ्गुगं उत्रिनथ
6	यंरकषुडे॥उडुयंयोगभंसिङ्गुः कलेनङ्गु
7	निविङ्गु डिङ्गिभु उः॥उभृङ्गुगाङ्गुभाङ्गु
8	नङ्गु ०१ ॥यभङ्गुदुषभगमेधुषभगामि
9	मंरउत्रभृङ्गुवल्भुमेरुवडिय
10	डिविनयभा॥गङ्गुवल्भुमेनाभनरु
11	भभउरुङ्गुडुयभा॥भवेङ्गुउलगाउ
12	रिङ्गुगवेङ्गुडियेथमंकेडिविकभमे
13	केङ्गुङ्गु॥ङ्गुडियेथमंभवेभयेमङ्गुभेथि॥
14	उषङ्गुडियेथमाउरेभुडिङ्गुवनेभेभे
15	धुधुयमेकेडिविनयं॥प्रुळपङ्गुमंय

प्र थ मा र म्भे चे त्या श क्त्या ॥ २१ ॥ दि न् छि जि

ता र ज नी आ सि भू त ल् ग ग न स् क नो वि क सि

॥ च न्द्रो रा ह ग्रा सो न् मा व सि शि व पू जो न् ग्वा

ह चि दा त्म स्य ॥ २२ ॥ प्र त्य क्षं त त्व स् व रू प प री

क्ष्य ता र्थ म नु ग्र ह मा त्रं स्या त्का र णं त न्नि रु पा

यं च क थ्य ते ॥ त त्स्व यं यो ग सं सि द्धः का ले ना त्म

नि वि न्द ति इ ति स्मृ तेः ॥ त स्मा द्यो गा भ्या सा त्प्रा

[ल वा भा १७] णा या मं कु र्ग्रा त्प्र थ मा र म्भे प्र थ म पा द मि

दं बा नु र्ना म्ना [दि न् छि जि] जा गृ व र्ण म दृ शो भ व ति या

ति वि ल य म् ॥ रा [र ज नी आ सि] त्रू व र्णो च न्द्र मो ना म म ना भा

स म न्त र्भा ति सू क्ष्म रू प म् ॥ स र्व भू [भू त ल] त लं [स्थू ल ररू प] चा न्त

रि क्ष ग [ग ग न म] ग ग ने द्वि ती ये पा दं क रो ति वि का स मं [क नो]

को भू त्वा ॥ द्वि ती यो पा दो म नो म यो [च न्द्रे] न्द्र मो पि ॥

त था तृ ती ये पा दा न्त रे सु रि ति भु व ने सौ सौ

षु प्त प दे क रो [रा ह ग्रा सो न] ति वि ल यं ॥ पू र्ण प ञ्च द श्यां य

- Website page link is Page 52. **Note:** Lines in blue font colour and in brackets are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak.



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 04.09.2020

Page 34

Line wise sentence

1	ध्रुवभारम्भे मेहृमहृ ॥१०॥दिन् छिजि
2	उरणीयुभिः उन्नागगनभाकनेविकसि
3	॥मन्त्रे राहगामेनाभवेभिविप्रलेगसा
4	कामिमाहृमृ॥११॥धृद्वे उद्वमुद्वयपरी
5	कृताम्भुगदभाउंभृद्वुगं उत्रिरुप
6	यं कथ्यते ॥ उद्वयं योगभक्तिः कालेनाहृ
7	निविदति इति स्मृतेः ॥ उभृद्वेगाहृभाहृ
8	नव ०१ उभयभक्तद्वयध्रुवभारम्भे ध्रुवभारम्भे
9	मन्त्रे राहगामेनाभवेभिविप्रलेगसा
10	दिविलयम् ॥ राह ग्रासोना करोति विलयं ॥
11	समन्तर्भातिसूक्ष्मरूपम् ॥ सर्वं [भूतल] भूतलं [स्थूल रूप] चान्त
12	रिक्ष [गगनम्] गगने द्वितीये पादं करोति विकास मँ [कनो]
13	को भूत्वा ॥ द्वितीयो पादो मनोमयो [च न्द्रे] चन्द्रमोपि ॥
14	तथा तृतीये पादान्तरे सुरिति भुवनेसौ सौ
15	षप्तपदे [राह ग्रासोना] करोति विलयं ॥ पर्णपञ्चदश्यां

1. प्रथमारम्भे चेत्या शक्त्या ॥ २१ ॥ दिन् छिजि
2. तारजनी आसि भूतल् गगनस् कनो विकसि
3. ॥ चन्द्रे राहग्रासोन् मावसि शिवपूजोन् ग्वा
4. ह् चिदात्मस्य ॥ २२ ॥ प्रत्यक्षं तत्व स्वरूपपरी
5. क्षयतार्थमनुग्रहमात्रं स्यात्कारणं तन्निरुपा
6. यं च कथ्यते ॥ २३ ॥ तत्स्वयं योगसंसिद्धः कालेनात्म
7. नि विन्दति इति स्मृतेः ॥ तस्माद्योगाभ्यासात्प्रा
8. णायामं कुर्यात्प्रथमारम्भे प्रथमपादमि
9. दं बानुर्नाम्ना [दिन् छिजि] जागृवर्णमदृशो भवति या
10. ति विलयम् ॥ [रजनी आसि] रात्रवर्णो चन्द्रमो नाम मनाभा
11. समन्तर्भातिसूक्ष्मरूपम् ॥ सर्वं [भूतल] भूतलं [स्थूल रूप] चान्त
12. रिक्ष [गगनम्] गगने द्वितीये पादं करोति विकास मँ [कनो]
13. को भूत्वा ॥ द्वितीयो पादो मनोमयो [च न्द्रे] चन्द्रमोपि ॥
14. तथा तृतीये पादान्तरे सुरिति भुवनेसौ सौ
15. षप्तपदे [राह ग्रासोना] करोति विलयं ॥ पर्णपञ्चदश्यां

- Website page link is Page 52. **Note:** Lines in blue font colour and in brackets are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak.



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 04.09.2020

Page 34

Final version

प्रथमारम्भे चेत्या शक्त्या ॥२१॥

दिन् छिजि ता रजनी आसि भूतल् गगनस् कनो विकसि ॥ चन्द्रे राहग्रासोन् मावसि शिव पूजोन् ग्वाह
चिदात्मस्य ॥२२॥

प्रत्यक्षं तत्त्वस्वरूपपरीक्ष्यतार्थमनुग्रहमात्रं स्यात्कारणं तन्निरुपायं च कथ्यते ॥ तत्स्वयं योगसंसिद्धः
कालेनात्मनि विन्दति इति स्मृतेः॥

तस्माद्योगाभ्यासात्प्राणायामं कुर्यात्प्रथमारम्भे प्रथमपादमिदं बानुर्नाम्ना [दिन् छिजि] जागृवर्णमदृशो
भवति याति विलयम्॥ [रजनी आसि) रात्रवर्णो चन्द्रमो नाम मनाभासमन्तर्भातिसूक्ष्मरूपम्॥

सर्व [भूतल्] भूतलं [स्थूल रूप] चान्तरिक्ष [गगनस्] गगने द्वितीये पादं करोति विकास में [कनो] को
भूत्वा। द्वितीयो पादो मनोमयो [चन्द्रे] चन्द्रमोपि॥

तथा तृतीये पादान्तरे सुरिति भुवनेसौ सौषुप्तपदे [राह ग्रासोन्] करोति विलयम्॥ पूर्णपञ्चदश्यां य

- Website page link is Page 52. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak.



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 04.09.2020

Page 34

Notes

1. In Line 34.12 one ग is extra, that should be गगने, not गगगने.

- Website page link is Page 52. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak.

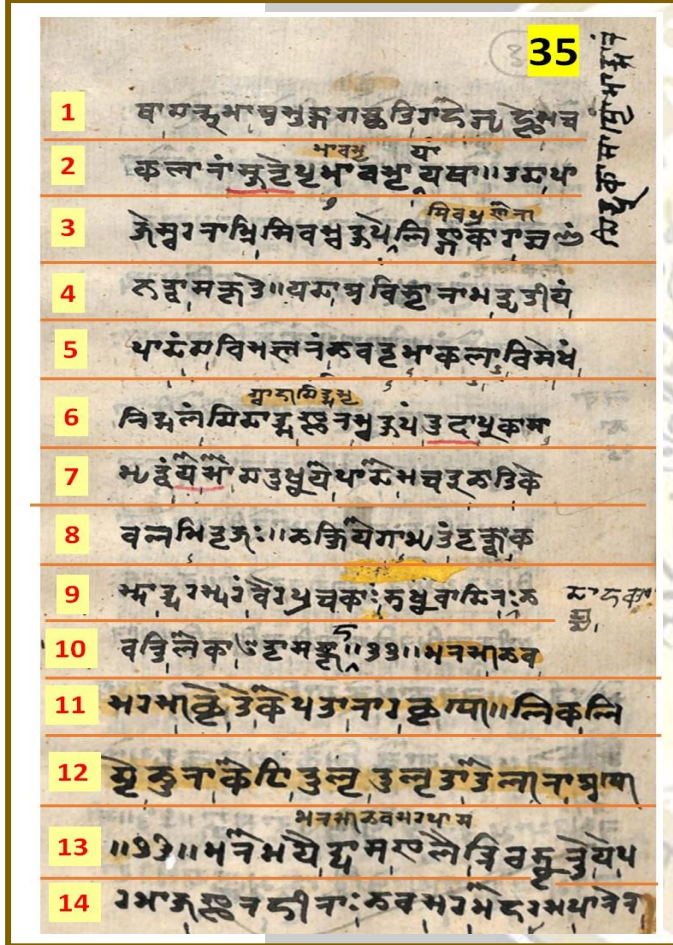


Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 05.09.2020

Page 35

Consonant by consonant transliteration



[पूर्णपञ्चदश्यां य]- था च न्द्र मा अ स्त इग(ग) च्छ ति रा हो र्गृ हणे स र्व
क ला नां शू न्येऽप्य मा व स्या यां (मा वस्य) य था॥ त दा पा
र्थे श्व र ना म्नि शि व स्व रू पे [चित्रकाशाख्यामात्मानं] (शिव पूजोन)लि इग का रा र्च णां
कृ त्वा श क्य ते॥ य दा अ वि द्या ना म तृ ती यं
पा दं च वि स र्ज नं भ व त्य मा क ला वि शे षं
नि र्म लं (ग्वाह चित्तमस्य) चि दा त्म ज्ञा न स्व रू पं तु र्या प्र का मा -
मृ त्वं यो सौ च तु ष्ट यो पा दो स र्व त्र भा ति के -
व ल मि त्य र्थः॥ भ क्ति यो गा मृ तं त्य क्त्वा क -
स्मा त्प र स्प रं वै र पू र्व काः दु ष्ट वा दि नः [दाहका च्य]. भ
व न्ति लो का इ त्या श इक्याह॥ म न स् भ व
स र स् छ्ये ते को प ता ना र छ्य ख् ॥ लि क लि
च्ये भू ना को टि तु ल्य तु ल्य ता तो ल् ना अ ख
-२३ म नो म ये (मनस् भवसर पाश) र्पा श जा लै र्नि ब ध्य न्ते ये प-
र मा र्थ ज्ञा न ही नाः भ व स र मो ह र स पा ने न

- Website page link is Page 53. **Note:** Lines in blue font colour and in brackets are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak.



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 05.09.2020

Page 35

Line wise sentence

35

- 1 वाग्भूमाश्चुभुङ्गगच्छविग्दन्तुभुव
- 2 कलानां शून्येषुभावस्यायां (मावस्य) यथा ॥ तदा पा
- 3 शैश्वर नाम्नि शिवस्वरूपे [चित्प्रकाशाख्यामात्मानं] (शिव पूजोन) लिङ्गकारार्चनां
- 4 कृत्वा शक्यते ॥ यदा अविद्या नाम तृतीयं
- 5 पादं च विसर्जनं भवत्यमाकलाविशेषं
- 6 निर्मलं (ग्वाह् चित्तमस्य) चिदात्मज्ञानस्वरूपं तुर्याप्रकामा-
- 7 मृत्वं योऽसौ चतुष्टयो पादो सर्वत्र भाति के-
- 8 वलमित्यर्थः ॥ भक्तियोगामृतं त्यक्त्वा क-
- 9 स्मात्परस्परं वैरपूर्वकाः दुष्टवादिनः दाहकाच्च भ
- 10 वन्तिलोका इत्या शङ्क्या ह ॥ म न स् भ व
- 11 स र स् छये ते को प ता ना र छ्य ख् ॥ लि क लि
- 12 च्ये भू ना को टि तु ल्य तु ल्य ता तो ल् ना अ ख्
- 13 म नो म यै (मनस् भवसर पाश) र्पा श जा लैर्निबध्यन्ते ये प -
- 14 रमार्थं ज्ञानहीनाः भवसरमोहरसपानेन

1. [पूर्णपञ्चदश्यां य]- था चन्द्रमा अस्तङ्ग(ग)च्छति राहोर्गृहणे सर्व
2. कलानां शून्येषुभावस्यायां (मावस्य) यथा ॥ तदा पा
3. शैश्वर नाम्नि शिवस्वरूपे [चित्प्रकाशाख्यामात्मानं] (शिव पूजोन) लिङ्गकारार्चनां
4. कृत्वा शक्यते ॥ यदा अविद्या नाम तृतीयं
5. पादं च विसर्जनं भवत्यमाकलाविशेषं
6. निर्मलं (ग्वाह् चित्तमस्य) चिदात्मज्ञानस्वरूपं तुर्याप्रकामा-
7. मृत्वं योऽसौ चतुष्टयो पादो सर्वत्र भाति के-
8. वलमित्यर्थः ॥ भक्तियोगामृतं त्यक्त्वा क-
9. स्मात्परस्परं वैरपूर्वकाः दुष्टवादिनः दाहकाच्च भ
10. वन्तिलोका इत्या शङ्क्या ह ॥ म न स् भ व
11. स र स् छये ते को प ता ना र छ्य ख् ॥ लि क लि
12. च्ये भू ना को टि तु ल्य तु ल्य ता तो ल् ना अ ख्
13. म नो म यै (मनस् भवसर पाश) र्पा श जा लैर्निबध्यन्ते ये प -
14. रमार्थं ज्ञानहीनाः भवसरमोहरसपानेन

- Website page link is Page 53. **Note:** Lines in blue font colour and in brackets are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak.



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 05.09.2020

Page 35

Final version

यथा चन्द्रमा अस्तङ्गच्छति राहोर्गृहणे सर्वकलानां शून्येऽप्यमावस्यायां (मावस्य) यथा॥ तदा पार्थेश्वर
नाम्नि शिवस्वरूपे चित्प्रकाशाख्यामात्मानं (शिव पूजोन) लिङ्गकारार्चनां कृत्वा शक्यते॥
यदा अविद्या नाम तृतीयं पादं च विसर्जनं भवत्यमाकलाविशेषं निर्मलं (ग्वाह् चित्मस्य)
चिदात्मज्ञानस्वरूपं तुर्याप्रकामामृत्वं योऽसौ चतुष्टयो पादो सर्वत्र भाति केवलमित्यर्थः॥
भक्तियोगामृतं त्यक्त्वा कस्मात्परस्परं वैरपूर्वकाः दुष्टवादिनः दहाकाच्च भवन्तिलोका
इत्याशङ्क्याह॥22॥
मनस् भवसरस् छ्ये ते कोपता नार छ्यख् ॥ लिक लिच्ये भुना कोटि तुल्य तुल्य ता तोल् ना अख् ॥
23 ॥
मनोमयैः (मनस् भवसर पाश) पर्षाजालैर्निबध्यन्ते ये परमार्थ ज्ञानहीनाः भवसरमोहरसपानेन

- Website page link is Page 53. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak.



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 05.09.2020

Page 35

Notes

1. [पूर्णपञ्चदश्यां य] - this is from previous page.
2. In Line **35.01** - There is a double ग, that should be अस्तङ्गच्छति.
3. In Line **35.13** – there is a possibility of a scribe error, because विसर्ग is followed by hard consonant and the scribe has also made a रकार, that does not seem to be correct. That should be मनोमयैः पाशजालैर्निबध्यन्ते

- Website page link is Page 53. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak.



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 07.09.2020

Page 36

Consonant by consonant transliteration

		36
1	मोहिताः जनाः ॥ (छये) ते भवन्ति ये महाक्रोधकाः	
2	परम्परं (कोपतानारख) कोपयन्त्यग्निप्रबलवत्संतप्तां लोभा	
3	त्मकान्नेवतृप्तिर्भवेत् ॥ महाकामकाश्च	
4	(लिकलिश्ये) कामवादां दुष्टदाहकाः प्रवदन्ति परस्पर	
5	रम् ॥ अहोतां दुर्वाचमात्रां कोटिभारतुल्याः	
6	[लवाभा*] दुःखदायनस्तुल्यताः मायाविमोहिता	
7	जन्तुवः ॥ महाप्रसादबलान्बिर्याहङ्का	
8	रकाः नविदुः दुर्वाचमात्रोपितुच्छमेंका	
9	(तोल्नाअख)पिसर्षपमात्रतुल्यंचनभवेत् ॥ कस्माद्दुः	
10	खीभवामिनविजानातिकश्चिदुद्विघ्नमान	
11	सोइत्यर्थः ॥ ननुकामक्रोधादिषड्गुणातीतशु	
12	द्धनिर्लेपधर्मवान्कोस्तिकेनधर्मकर्मपुण्ये	
13	नपरमामृतस्यप्राप्तोस्तिइत्याशङ्क्य ॥ २३ ॥ शी	
14	लतमानछयोपा न्येद्धिञ्ज्यमुछ्ययमेंरटो	

मो हि ताः ज नाः ॥ (छये) ते भ व न्ति ये म हा क्रो ध काः
 प र म्प रं (को प ता ना र ख) को प य न्त्य ग्नि प्र ब ल व त्सं त प्तां लो भा
 त्म का न्ने व तृ प्ति र्भ वे त् ॥ म हा का म का श्च
 (लि क लि श्ये) का म वा दां दु ष्ट दा ह काः प्र व द न्ति प र स्प
 र म् ॥ अ हो तां दु र्वा च मा त्रां को टि भा र तु ल्याः
 [ल वा भा *] दुः ख दा य न स्तु ल्य ताः मा या वि मो हि ता
 ज न्तु वः ॥ म हा प्र सा द ब ला न्बि र्या ह ङ्का
 र काः न वि दुः दु र्वा च मा त्रो पि तु च्छ में का
 (तो ल् ना अ ख) पि स र्ष प मा त्र तु ल्यं च न भ वे त् ॥ क स्मा द्दुः
 खी भ वा मि न वि जा ना ति क श्चि दु द्वि घ्न मा न
 सो इ त्य र्थः ॥ न नु का म क्रो धा दि ष ड्गु णा ती त शु
 द्ध नि र्ले प ध र्म वा न्को स्ति के न ध र्म क र्म पु ण्ये
 न प र मा मृ त स्य प्रा प्तो स्ति इ त्या श ङ्क्य ॥ २३ ॥ शी
 ल त मा न छ यो य् पा न्ये द्धि ञ्ज्य मु छ्य य में र टो

- Website page link is Page 54. **Note:** Lines in blue font colour and in brackets are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak.



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 07.09.2020

Page 36

Line wise sentence

	36
1	मैदिताः लानः ॥ उरुवत्रियेभदरेणकः
2	परम्परं (कोप ता नार छेख) कोपयन्त्यग्नि प्रबलवत्सं तप्तां लोभा
3	त्मकान्नेव तृप्तिर्भवेत् ॥ महाकामकाश्च
4	(लिक लिश्ये) कामवादां दुष्टदाहकाः प्रवदन्ति परस्प
5	रम् ॥ अहोतां दुर्वाच मात्रां कोटिभारतुल्याः
6	दुःखदायनस्तुल्यताः मायाविमोहिता
7	जन्तुवः ॥ महाप्रसाद बलान्बित्या हङ्का
8	रकाः न विदुः दुर्वाच मात्रोऽपि तुच्छमेका
9	(तोल्ना अस्त्र) पि सर्षपमात्रतुल्यं च न भवेत् ॥ कस्माददुः
10	खी भवामि न विजानाति कश्चि दुद्विघ्नमान
11	सो इत्यर्थः ॥ ननु काम क्रोधादिषड्गुणातीत शु
12	द्ध निर्लेपधर्मवान् कोऽस्ति केन धर्म कर्म पुण्ये
13	यो न परमामृतस्य प्राप्तोऽस्ति इत्या शङ्क्य ॥ २३ ॥ शी
14	(लत मान छयोय पान्ये क्रिञ्ज्य मुछ्य यमं रटो)

1. मोहिताः जनाः ॥ (छये) तेभवन्ति ये महा क्रोधकाः
2. परम्परं (कोप ता नार छेख) कोपयन्त्यग्नि प्रबलवत्सं तप्तां लोभा
3. त्मकान्नेव तृप्तिर्भवेत् ॥ महाकामकाश्च
4. (लिक लिश्ये) कामवादां दुष्टदाहकाः प्रवदन्ति परस्प
5. रम् ॥ अहोतां दुर्वाच मात्रां कोटिभारतुल्याः
6. दुःखदायनस्तुल्यताः मायाविमोहिता
7. जन्तुवः ॥ महाप्रसाद बलान्बित्या हङ्का
8. रकाः न विदुः दुर्वाच मात्रोऽपि तुच्छमेका
9. (तोल्ना अस्त्र) पि सर्षपमात्रतुल्यं च न भवेत् ॥ कस्माददुः
10. खी भवामि न विजानाति कश्चि दुद्विघ्नमान
11. सो इत्यर्थः ॥ ननु काम क्रोधादिषड्गुणातीत शु
12. द्ध निर्लेपधर्मवान् कोऽस्ति केन धर्म कर्म पुण्ये
13. यो न परमामृतस्य प्राप्तोऽस्ति इत्या शङ्क्य ॥ २३ ॥ शी
14. (लत मान छयोय पान्ये क्रिञ्ज्य मुछ्य यमं रटो)

- Website page link is Page 53. **Note:** Lines in blue font colour and in brackets are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak.



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 07.09.2020

Page 36

Final version

[मनोमयैः पाशजालैर्निबध्यन्ते ये परमार्थ ज्ञानहीनाः भवसरमोहरसपानेन] [मोहिताः जनाः]॥
ते भवन्ति (छ्ये ते) ये महाक्रोधकाः परस्परं (कोप ता नार छ्यख) कोपयत्यग्नि प्रबलवत्सं तप्तां
लोभात्मकान्नैव तृप्तिर्भवेत्॥
महाकामकाश्च (लिक लिश्ये)। कामवादां दुष्टदाहकाः प्रवदन्ति परस्परम्॥
अहो तां दुर्वाच मात्रां कोटिभारतुल्याः। दुःखदायनस्तुल्यताः मायाविमोहिता जन्तवः॥
महाप्रसादबलान्वित्याहङ्कारकाः [महा प्रसाद बलान् भित्याहङ्कारकाः] न विदुः दुर्वाच मात्रोऽपि तुच्छमेकापि
(तोल् ना अख) सर्षपमात्रतुल्यं च न भवेत्॥
कस्माद्दुःखी भवामि न विजानाति कश्चिदुद्विघ्नमानसो इत्यर्थः॥
ननु कामक्रोधादिषड्गुणातीत शुद्धनिर्लेपधर्मवान् कोऽस्ति केन धर्म कर्म पुण्ये[यो] न परमामृतस्य
प्राप्तोऽस्ति इत्याशङ्क्य॥२३॥ (शीलत मान छ्योय् पान्ये क्रिञ्ज्य मुछ्य यमे रटो)

- Website page link is Page 54. **Note:** Lines in blue font colour and in brackets are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak.



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 07.09.2020

Page 36

Notes

1. In Line **36.01** – For the word **महाप्रसादबलान्वित्याहङ्कारका** clarity is required. This has been finalised as follows:
 - a. **महा प्रसाद बलान् भित्वाहङ्कारका:** only one error, instead of **ब** in the Manuscript **भ** has been used.

- Website page link is Page 54. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak.



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 08.09.2020

Page 37

Consonant by consonant transliteration

- 1 मल युद्ध वा ॥ हस्तो यस्तो वालगण्डिते 37
- 2 यभाउगिभपुत्र निदला ॥१२॥ सुदुनित्रे
- 3 पशुनीलाडिमुर्गः पुत्रुपद्मयेनीरा
- 4 गत्रावेष्टासुवमुत्रयेनिगभयः ॥ सुभिरे
- 5 देवकृष्टुगिचयंमरुमभुलेभवत्
- 6 पकभाङ्गरेवेभैकेरुवभि ॥ वृक्षमापात्रे
- 7 पात्रपिञ्जकेयथारालष्टुजत्रायभत्रु
- 8 दिव्रापकेनीरभा ॥ यषामचगउंभैरु
- 9 कसेनेयलिष्टु ॥ मचरुवभि उरेदेउषा
- 10 मनेयलिष्टु ॥ उतिभुडे ॥ सुउरवयः क
- 11 सुदुमयः संयुक्तुद्दुदेतिविलयंकगेति
- 12 विषयवमनमलादिमेषुत्रुचयुगे
- 13 मगलियेगकृभापृधुवलयुत्रुनितुवे
- 14 गगेन ॥ गराष्टिभनेयिभेदुलेवीगेव
- 15 रुमाङ्गलेभेमुकेयु ॥ सुउरुमरुकेयुजी

म ल यु द्ध वा व् ॥ ह स्तो य स्तो वा ल ग ण्डि ते
य स् त गि सो अ न्द नि हा ल् ॥ २४ ॥ (शी ल् त मा ना) शु द्ध नि ले
प सु शी ला ति सु न्द रः स्व त न्त्र ध र्मा त्मा यो श्री ज
ग न्ना थो स्या शि छ व स्व रू पो नि रा म यः ॥ अ स्मि न्दे (पा न्यी)
हे पि (क्र ङ्ग्य) बा ह्या भ्य न्तरं चि न्म यं स दा स म्पू र्णं स र्व व्या
प क मा त्म दे वो सै को भ व सि ॥ वृ क्ष शा खा नां
पा त्र पि ञ्ज के य था ज ल स्या न्त र्ग ता या म न्त र्ब
हि व्यो प कं नी र म् ॥ य था स र्व ग तं सौ क्ष्म्या दा
का शं नो प लि प्य ते ॥ स र्व त्रा व स्थि तो दे हे त था
त्मा नो प लि प्य ते ॥ इ ति स्मृ तेः ॥ अ त ए व यः क
शि च त्पु रु षः सं (मु छि) सं यु क्त त्वा द्य हे ति वि ल यं क रो ति
वि षं (म ल) य वा स ना ना म म ला दि चे ष्टा कु र्व न्प्रा ण (वा व) गो
च रा णि यो गा भ्या सा ख्य प्र ब ल यु द्धे न नि त्य वै (यु द्ध)
रा गे न ॥ [ह स्तो] ग जा ख्यो म नो पि यो म हा ब ल वी रो ब [य स्तो]
हु च ङ्ग लो सौ आ दौ (म स्त वा ल) प्रा ण सू त्रे गु रु भ क्ति यु क्ती

- Website page link is Page 55. **Note:** Lines in blue font colour and in brackets are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak.



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 08.09.2020

Page 37

Line wise sentence

1	मलयुद्धवाव् ॥ हस्तो यस्तो वाल गण्डिते	37
2	यस्तगिसो अन्दनिहाल् ॥ २४ ॥ (शील् तमाना) शुद्धनिर्ले	
3	पसुशीलातिसुन्दरः स्वतन्त्र धर्मात्मा यो श्रीज	
4	गन्नाथो स्याच्छि वस्वरूपो निरामयः ॥ अस्मिन्दे (पान्यी)	
5	हेपि (क्रञ्ज्य) बाह्याभ्यन्तरं चिन्मयं सदा सम्पूर्णं सर्वव्या	
6	पकमात्म देवोसैको भवसि ॥ वृक्षशाखानां	
7	पात्र पिञ्जके यथा जलस्यान्तर्गतायामन्तर्ब	
8	हिव्यापकं नीरम् ॥ यथा सर्वगतं सौक्ष्म्यादा	
9	काशं नोपलिप्यते ॥ सर्वत्रा वस्थितो देहे तथा	
10	त्मा नोपलिप्यते ॥ इति स्मृतेः ॥ अत एव यः क	
11	श्चित् पुरुषः (मुछि) संयुक्तत्वाद्ग्रहेति विलयं करोति	
12	विषं (मल) य वासना नाम मलादि चेष्टा कुर्वन्प्राण (वाव) गो	
13	चराणि योगाभ्यासाख्यप्रबलयुद्धेन नित्य वै (युद्ध)	
14	रागेन ॥ (हस्तो) गजाख्यो मनोऽपि यो महाबलवीरोब [यस्तो]	
15	हुचञ्चलोसौ आदौ (मस्तवाल) प्राणसूत्रे गुरुभक्ति युक्ती	

1. मलयुद्ध वाव् ॥ हस्तो यस्तो वाल गण्डिते
2. यस्तगिसो अन्दनिहाल् ॥ २४ ॥ (शील् तमाना) शुद्धनिर्ले
3. पसुशीलातिसुन्दरः स्वतन्त्र धर्मात्मा यो श्रीज
4. गन्नाथो स्याच्छि वस्वरूपो निरामयः ॥ अस्मिन्दे (पान्यी)
5. हेपि (क्रञ्ज्य) बाह्याभ्यन्तरं चिन्मयं सदा सम्पूर्णं सर्वव्या
6. पकमात्म देवोसैको भवसि ॥ वृक्षशाखानां
7. पात्र पिञ्जके यथा जलस्यान्तर्गतायामन्तर्ब
8. हिव्यापकं नीरम् ॥ यथा सर्वगतं सौक्ष्म्यादा
9. काशं नोपलिप्यते ॥ सर्वत्रा वस्थितो देहे तथा
10. त्मा नोपलिप्यते ॥ इति स्मृतेः ॥ अत एव यः क
11. श्चित् पुरुषः (मुछि) संयुक्तत्वाद्ग्रहेति विलयं करोति
12. विषं (मल) य वासना नाम मलादि चेष्टा कुर्वन्प्राण (वाव) गो
13. चराणि योगाभ्यासाख्यप्रबलयुद्धेन नित्य वै (युद्ध)
14. रागेन ॥ (हस्तो) गजाख्यो मनोऽपि यो महाबलवीरोब [यस्तो]
15. हुचञ्चलोसौ आदौ (मस्तवाल) प्राणसूत्रे गुरुभक्ति युक्ती

- Website page link is Page 55. **Note:** Lines in blue font colour and in brackets are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak.



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 08.09.2020

Page 37

Final version

मलयुद्ध वाव् ॥ हस्तो यस्तो वाल गण्डिते यस्तगि सो अन्द निहाल् ॥ २४ ॥ (शील्ल्त माना)

शुद्धनिर्लेपसुशीलातिसुन्दरः स्वतन्त्र धर्मात्मा यो श्रीजगन्नाथो स्याच्छिवस्वरूपो निरामयः ॥

अस्मिन्दे (पान्यी) हेऽपि (क्रञ्ज्य) बाह्याभ्यन्तरं चिन्मयं सदा सम्पूर्णं

सर्वव्यापकमात्मदेवोसैको भवसि ॥

वृक्षशाखानां पात्रपिञ्जके यथा जलस्यान्तर्गतायामन्तर्बहिर्व्यापकं नीरम् ॥

यथा सर्वगतं सौक्ष्म्यादाकाशं नोपलिप्यते ॥ सर्वत्रावस्थितो देहे तथात्मा नोपलिप्यते ॥ इति स्मृतेः ॥

अत एव यः कश्चित् पुरुषः (मुछि) संयुक्तत्वाद्ग्रहेति विलयं करोति विषं (मल) य वासना नाम मलादि चेष्टा कुर्वन्प्राण (वाव्) गोचराणि योगाभ्यासाख्यप्रबलयुद्धेन नित्य वै (युद्ध) रागेन ॥

(हस्तो) गजाख्यो मनोऽपि यो महाबलवीरो [यस्तो] बहुचञ्चलोसौ आदौ (मस्तवाल) प्राणसूत्रे गुरुभक्तियुक्ती

- Website page link is Page 55. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Highlighted words are the corrections made to the Manuscript words**



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 08.09.2020

Page 37

Notes



- Website page link is Page 55. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak.



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 09.09.2020

Page 38

Consonant by consonant transliteration

1	ॐ गति शुभ्रयुत्तमा॥ यथा विद्वेनेरुवेदुषात्तगति	38
2	शुभ्रयुत्तमा॥ यथा विद्वेनेरुवेदुषात्तगति	
3	ॐ भानभीकृत्तिमदिउमेकागुरुवेनिच	
4	उयमाउमि त्रिकंरोत्रियः॥ ममचात्रीतःधनुः॥ किमेध	
5	रदितःभेममुदाद्रकःयोगेदुरुवेमुभउम	
6	मुतेऽहः॥ नउषनुः॥ किमेधनिवगले	
7	लव युक्तिरुविएनमिकितरुक्रिगभउमकेन	
8	यत्रेनकेममुद्रिहमहू॥ ३२॥ धिवनाम	
9	एजममिकलावेष्टमापुठजहिष्टमापव	
10	नमुते॥ लेलमृलेमिभिवलेह्रीकेष्टमा	
11	मङ्गेगलकेभाउमिमुते॥ ३५॥ कभाकिध	
12	दुकागगदनुभागवनम्यउयःमदभ्येगुः	
13	ममेधरुयिनगभःभायारुत्रिमुभुरुभा	
14	नः॥ उभ्रविमुत्ताद्रुवेनलीवभग्मेहुरु	
15	वमंयोगेन॥ उंभ्रुवगदनुगह॥ किमेध	

स्तं {स} त म्भ (ग णिड) य न्त म् ॥ य स्मा न्नि र्म नो भ वे द्य था ता रा दि
ज्यो त्स्ना स्त इग च्छ न्त्या दि त्यो द या त् ॥ अ त ए व प्रा
णः मा न सी वृ तिं स हि तं में का ग्र भा वे नि र्वृ
(ते य स् त गि) तिं क रो ति यः ॥ स सर्वा ती तः ष इगु णा दि दो ष
र हि तः सो म सू र्या त्म कः यो गे न्द्र भा वे (अ न्द नि हा ल) अ मृ त म
शनु ते इ त्य र्थः ॥ न नु ष इगु णा दि दो ष नि वा र णे
यु क्ति र्न वि जा ना मि किं त द्भ क्ति र मृ तं च के न
य त्ने न के अ शनु न्ती {वन्ती} त्या श डक्या [क्य] ॥ २ ४ ॥ षि व न् च
टे त् श शि क ल् वो जू म् प्र कृ त् हो जू म् प व
न् सू ते ॥ लौ ल च्य जो रि मि वा ले ञ्ज्य भो जू म्
श इको र् ल भो म् त मि सू ते ॥ २ ५ ॥ का मा दि ष (षि व न्)
इप्र का र ग ह ना सा र व न स्प त यः म हा घो र दुः
ख दो ष दा यि ना ध माः मा या भ्ना न्ति स्तु मु ह्य मा
नाः ॥ त स्मा न्नि श्च ला त्म त्वे न जी व प र मै क्य भा
व सं यो गे न ॥ तां ष इभा व ग ह ना र ण्या दि दो ष

- Website page link is Page 56. **Note:** Lines in blue font colour and in brackets are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. Red colour letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 09.09.2020

Page 38

Line wise sentence

1	गण्डि शुभ्रयतुभा॥यभ्रविभ्रनेरुवेदुषात्राकि	38
2	शुभ्रयतुभा॥यभ्रविभ्रनेरुवेदुषात्राकि	
3	भा नभीच डिमदिउंभे का गुरुवेनिच	
4	डिकेडियः॥मभचात्रीःधनुःकिरेध	
5	रदिःभेममुदकःयेगेरु रुवेमुभउभ	
6	मुतेःउदुः॥नउधनुःकिरेधनिवारणे	
7	यक्ति उ वि ए न भि कि उ रु क्रि उ भ उं म के न	
8	यत्रे न के म मु त्रि उ म हु ॥ १२ ॥ धि व न म	
9	एउ म भि क ली वै उ भा उ र उ डे उ भा प व	
10	न मु उ ॥ ले ल मृ ले नि भि व ले ह्री के उ भा	
11	म डे ग ल ले भा उ भि मु उ ॥ १५ ॥ क भ भि ध	
12	दु क र ग क न भा उ व न म उ यः भ क भो र क	
13	म रे ध रु धि न उ भाः भा य कृ त्रि मु भ रु भ	
14	नः ॥ उ भ भि त्रि ल द्वा दे न ले व भ र भे ड रु	
15	व भं ये गे न ॥ उं ध नु व ग क न र ह ॥ कि रे ध	

स्तंतम्भ {स्तम्भ} (गण्डि) यन्तम् ॥ यस्मान्निर्मनो भवेद्यथा तारादि
ज्योत्स्नास्तङ्गच्छन्त्यादित्योदयात् ॥ अत एव प्रा-
णः मानसी वृत्तिं सहितं मँकाग्रभावेनिर्व-
(ते यस् तगि) तिं करोति यः ॥ स सर्वातीतः षड्गुणादिदोष-
रहितः सोमसूर्यात्मकः योगेन्द्र भावे (अन्द निहाल) अमृतम-
श्नुते इत्यर्थः ॥ ननु षड्गुणादिदोषनिवारणे
युक्तिर्न विजानामि किं तद्भक्तिरमृतं च केन
यत्नेन के अश्नुन्तीत्याशङ्क्या {अश्नुवन्तीत्याशङ्क्य} ॥ २४ ॥ (षि वन् च)
(टेत् शशिकल् वोजूम् प्रकृत् होजूम् पव)
(न् सूते ॥ लौलच्य जोरिमि वालेञ्ज्य भोजूम्)
(शङ्कोर् लभोम् तमि सूते) ॥ २५ ॥ (षि वन्) कामादिष
इप्रकारगहनासारवनस्पतयः महाघोरदुः-
खदोषदायिनाधमाः मायाभ्रान्तिस्तु मुह्यमा-
नाः ॥ तस्मान्निश्चलात्मत्वे न जीव परमैक्यभा-
व संयोगेन ॥ तां षड्भावगहनारण्यादिदोष

- Website page link is Page 56. **Note:** Lines in blue font colour and in brackets are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. Red colour letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 09.09.2020

Page 38

Final version

(गण्डि) स्तंतम्भयन्तम्॥ {स्तम्भयन्तम्}

यस्मान्निर्मनो भवेद्यथा तारादिज्योत्स्नास्तङ्गच्छन्त्यादित्योदयात्॥

अत एव प्राणः मानसी वृत्तिं सहितं मेकाग्रभावेनिर्वृत्तिं (ते यस् तगि) करोति यः ॥ स सर्वातीतः षड्गुणादिदोषरहितः
सोमसूर्यात्मकः योगेन्द्र (अन्द् निहाल) भावे अमृतमश्नुते इत्यर्थः ॥

ननु षड्गुणादिदोषनिवारणे युक्तिर्न विजानामि किं तद्भक्तिरमृतं च केन यत्नेन के अश्नुन्तीत्याशङ्क्या
[अश्नुवन्तीत्याशङ्क्य] ॥२४॥

(षि वन् चटेत् शशिकल् वोजूम् प्रकृत् होजूम् पवन् सूते॥ लौलच्य जोरिमि वालेञ्ज्य भोजूम् शङ्कोर् लभोम् तमि सूते) ॥
२५॥

(षि वन्) कामादिषड्प्रकारगहनासारवनस्पतयः महाघोरदुःखदोषदायिनाधमाः मायाभ्रान्तिस्तु मुह्यमानाः ॥
तस्मान्निश्चलात्मत्वे न जीव परमैक्यभाव संयोगेन ॥

- Website page link is Page 56. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 09.09.2020

Page 38

Notes

1. In Line **38.01** – the word **स्तंतम्भयन्तम्** is corrected as **{स्तम्भयन्तम्}**
2. In Line **38.08** – There seems to be scribe error in the word **अशनुन्तीत्याशडक्या**. The correct word could be **{अशनुवन्तीत्याशडक्य}**

- Website page link is Page 56. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and **{ }** represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 11.09.2020

Page 39

Consonant by consonant transliteration

39

- 1 कनेभमङ्ग ममुल्लुकेनेके संतद्व॥यखङ्ग
- 2 धिवायुत्रैद्युहृतेभमुद्युगतिरुवेरुननुं
- 3 उरुनंकेरुवेरुति॥पुत्रवतेनयुकेनभु
- 4 विप्रितःमुवेणभउरभेमिमकलापुंथर
- 5 भङ्गभगभयतिभृजीयतुडुमुयभिरु
- 6 भिनितुमुवे॥नद्वमुभितरुभउंयदुगिभि
- 7 उंयभिङ्गभुगविरेपंभुवमतिउद्विद्वि
- 8 रकालदेधुपुिमुभृमिडिकषयतिवि
- 9 रुङ्गनः॥रुभिरभेनलेवायुःपंभनेवुकिरे
- 10 वम॥पुदङ्गुगडेयंभेकित्रधुदतिवधुण
- 11 ॥डिमीरुगवसुङ्गुभुभलेनयमुणकि
- 12 त्रधुदतिःभगुल्लुकेनेकेधुदुडिभुउंके
- 13 धनिवारुङ्गुपुंथरभुदुडिउं धुङ्गुय
- 14 रुङ्गुडिमुद्वामचगउभेकेभेगतिरुद्व॥
- 15 पुंकेउद्विद्वुःडीव्वेगुगुपुंथरगगु

1. का ना म स इग श स्त्रे ण ह ढे न छे (च ट ल) दं कृ त्वा ॥ य था क्वा
2. पि वा यु नो त्प द्य ते स मु द्रे अ ग ति र्भ वे द न न्ता नां
3. त र इगा नां छे दं भ व ति ॥ अ त ए व ते न यु क्ते न मू
4. धिर्न स्थि तः स्व बो धा मृ त र सं शि {श} श {शि} क ला ख्यं प र
5. (शि श क ल) मा र्थ सा र म प रि म्य {च्यु} ती य त त्स म्बो (वो जू म) ध या मि भ जा
6. मि नि त्य स्व भा वे ॥ न त्व श्ना मि त द मृ तं य त्प रि मि
7. तं य स्मि न्सु रा सु र वि रो धं प्र व द न्ति [प ण्डि ताः] त त्पी त्वा चि
8. र का ल दे ह प्रा प्ति श्च स्या दि ति क थ य न्ति वि
9. द्वा ज्ज नाः ॥ भू मि रा पो न लो वा युः खं म नो बु द्धि रे
10. व च ॥ अ ह इका र इ त्ये यं मे भि न्ना प्र कृ ति र ष्ट धा
11. ॥ इ ति श्री भ ग व द्वा क्य प्र मा णे न य द ष्ट (प्र कृ त) धा भि
12. न्न प्र कृ तिः सा गु ण भे दे न दो ष वृ ति स्सय्या त द्दो
13. ष नि वा र णा र्थं प्रा णा (प व न सू ते) पा न स ही तं स्वा त्म य
14. जा हु (हो जू म) ति श्च कृ त्वा स र्व ग त मे कं (पु रु षो तु) सो ग ति र्भु त्वा
15. आ दौ (लौ ल कि) त त्प्री त्य र्थः ती व्र वै रा ग्या ख्या [छय] (जो रि) ग्ना रा ग द्वे

• Website page link is Page 57. **Note:** Lines in blue font colour and in brackets are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. Red colour letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 11.09.2020

Page 39

Line wise sentence

39

- 1 कनममङ्ग मयु...^{मयु} नके सं न द्वा ॥ यथा क
- 2 धि वा यु त्रे द्य कृते मभु न्ने यु गति रुवे न नु नं
- 3 उरङ्ग नं के सं रु वे ति ॥ पु उ ए व ते न यु क्ते न भु
- 4 वि धि उः मु वे ण भ उ उ मं मि स क ल प पुं थ र
- 5 भं रु भ ग म थ रि भृ ती य उ द्भु य थ भि रु र
- 6 मि नि द्भु रु वे ॥ न द्भु मि उ रु भ उं य द्भु मि
- 7 उं य भि कृ ग भु ग वि रे णं थ व रु ति उ द्भु मि
- 8 र क ल रु द्भु थि द्भु थ मि ति क ष य ति वि
- 9 रु रु नः ॥ रु भि रं ये न ले वा युः थं भ ने व द्भु रि
- 10 व ग ॥ पु रु रु ग उ द्भु ये मे कि त्र थ रु ति व भु ण
- 11 ॥ उ दि मी रु ग व द्भु कृ थ भ ॥ न य रु थु ण कि
- 12 व थ रु तिः भ ग ॥ रु रु ने रु थ रु ति भु उ रु
- 13 थ नि वा र ॥ उं थ ॥ थ न भ दि उं थ द्भु य
- 14 रु रु ति रु रु द्भु म च ग उ भ के भे ग ति रु रु ॥
- 15 पु रु उ द्भु रुः ती व वै ग थु य ग ग ग

कानामसङ्गशस्त्रेण दृढेन (चटत्) छेदं कृत्वा ॥ यथा क्वा
-पि वायुर्नोत्पद्यते समुद्रे अगतिर्भवेदनन्तानां
तरङ्गानां छेदं भवति ॥ अत एव तेन युक्तेन मू-
र्ध्निस्थितः स्वबोधामृतरसं शिशकलाख्यं {शशिकलाख्यं} पर
(शिशकल) मार्थसारमपरिम्यतीयत् {परिच्युति यत्} त सम्बोधयामि (वोजूम) भजा-
मि नित्यस्वभावे ॥ नत् वशनामि तदमृतं यत्परिमि-
तं यस्मिन् सुरासुर विरोधं प्रवदन्ति [पण्डिताः] तत्पीत्वा चि
रकाल देहप्राप्तिश्च स्यादिति कथयन्ति वि-
द्वज्जनाः ॥ भूमिरापोनलोवायुः खं मनो बुद्धिरे-
व च ॥ अहङ्कार इत्येयं मे भिन्नाप्रकृति रष्टधा
॥ इति श्रीभगवद्वाक्यप्रमाणेन यदष्टधा (प्रकृत) भि-
न्नप्रकृतिः सा गुणभेदेन दोषवृत्तिस्सय्यात तद् दो
षनिवारणार्थं (पवन सूते) प्राणापानसहीतं स्वात्मय-
ज्ञाहृतिश्च (होजूम) कृत्वा सर्वगतमैकं (पुरुषोत्तु) सो गतिर्भुत्वा-
आदौ (लौलकि) तत्प्रीत्यर्थः तीव्रवैराग्याख्या [छय] ग्नौरागद्वे- (जोरि)

- Website page link is Page 57. **Note:** Lines in blue font colour and in brackets are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. Red colour letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 11.09.2020

Page 39

Final version

कानामसङ्गशस्त्रेण दृढेन (चटत्) छेदं कृत्वा ॥ यथा क्वापि वायुर्नोत्पद्यते समुद्रे अगतिर्भवेदनन्तानां तरङ्गानां छेदं भवति ॥
अत एव तेन युक्तेन मूर्ध्निस्थितः स्वबोधामृतरसं शिशकलाख्यं {शशिकलाख्यं}
(शिशकल) परमार्थसारमपरिम्यती {परिच्युति} यत् त सम्बोधयामि (वोजूम) भजामि नित्यस्वभावे ॥
नत् वशनामि तदमृतं यत्परिमितं यस्मिन् सुरासुर विरोधं प्रवदन्ति [पण्डिताः] तत्पीत्वा
चिरकालदेहप्राप्तिश्च स्यादिति कथयन्ति विद्वज्जनाः ॥ भूमिरापोनलोवायुः खं मनो बुद्धिरेव च ॥
अहङ्कार इत्येयं मे भिन्नाप्रकृतिरष्टधा ॥
इति श्रीभगवद्वाक्यप्रमाणेन यदष्टधा (प्रकृत) भिन्नप्रकृतिः सा गुणभेदेन दोषवृत्तिस्सय्यात् तद् दोषनिवारणार्थं (पवन
सूते) प्राणापान सहीतं स्वात्मयज्ञाहुतिश्च (होजूम) कृत्वा सर्वगतमेकं (पुरुषोत्तु) सो गतिर्भुत्वा ॥
आदौ (लौलकि) तत्प्रीत्यर्थः तीव्रवैराग्याख्या (जोरि) छ्यग्नौरागद्वे -

- Website page link is Page 57. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 11.09.2020

Page 39

Notes

1. In Line 39.04 – the word शिशकलाख्यं is corrected as {शशिकलाख्यं}
2. In Line 39.05 – the word अपरिम्यतीयत् can be {अपरिच्युति यत्}

- Website page link is Page 57. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 14.09.2020

Page 40

Consonant by consonant transliteration

40

- 1 वलीक्री म केरुभा उवेप्रते
धकोभनःसुधुडु लवङ्गं यगुं उतमङ्क
- 2 रमुडुगभङ्गभरःनमुडुये मचरेधकरक
लीमङ्कः
- 3 भाङ्कङ्कभित्तुः ननुभनमै कुलात्तुरः
लकेभा
- 4 केनमुदभायडियेनपरभाङ्कधुङ्कयाभि
- 5 उडमङ्क ॥१५॥ मिडु उजभागगनेडुभवने
- 6 निभेधप्रककदियेएनलक ॥ गेउडुव
वा
- 7 गियभेरटेउएनेधु मयुपानकेएउ
उरगमा
- 8 धङ्का ॥१६॥ मिडु कियः डुरङ्कः मभूति
गमने उभवे
- 9 चायलङ्कङ्कङ्ककामेडुभयतुः ॥१७॥
उभवे उभवे
- 10 उरेधियेएनलङ्कङ्कगभिनः येभुङ्कङ्क
- 11 येभायङ्कभारुमः ॥ यथाभनभगीमिक
यमी
- 12 ॥ येनमेउट्टुमुडुपङ्कनभने निमुला
वमि
- 13 ड्कुरुवकजियेगयुङ्कनउंकोडिनिगुडभा
उरगमा
- 14 ॥ गतागतयेनाभनिरुयधङ्कङ्कङ्कपाने
दिवेउ यङ्क
- 15 उरुयेदउविलयेमः मभमुदङ्ककेसुिः

ष कौ (वा ली ज्य) म नः शु ष्क तृ ण प ण व त्सं (भो जू म) द ग्धा॥ ते न श ड्क (ते वै सू ते)
र स्त त्प (श्री श ड्क रः) मा र्थ सा रः रु द्र रू पे ण स र्व दो ष हा र कः
सा क्षा त्का (ल भो म) र मि त्य र्थः ॥ न नु म न श्चै ज्च ला स्थि रः
के न स्थै र्य मा या ति ये न प र मा र्थ प्रा र्थ या मि
इ त्या शङ्क्य ॥ २ ५॥ चि त तु र्ग स् ग ग ने भ्र म व नो
नि में ष अ क्य क डि यो ज न् ल छ ॥ चै त न्य व
गी य में र टे त् जा नो प्रा ण् अ पा न् फो ट रे त्
प कच्य ॥२६॥ चि ता भि धः (तु र ग स) तु र इगः स स र्व ग ति
र्वा यु र्ते क्ष णे भू ता (ग ग ने) का शे भा (भ्र म व नो) म य न्तः ॥ क्ष णा (न में श)
न्त रे पि यो ज न ल क्षं च गा मि नः यो सू क्षम रू
पो मा या भ्र मा भा सः ॥ य था म रु म री चि का
॥ (य मि) ये न चै त न्य स्व स्व रू प ज्ञा न मा र्गे ण (व गि) नि श्च ला
त्म भा व भ क्ति यो ग यु क्ते न तं क रो ति (र टे त् जा नो) नि ग्र ह म्
॥ ग ता ग त यो र्नी म नि (फो ट रे त्) भ ग्न (प कच्य) प क्षौ प्रा णा पा नौ
उ भ यो र्य त्र वि ल यौ सः सो म सू र्या त्म को स्ति इ

- Website page link is Page 58. **Note:** Lines in blue font colour and in brackets are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. Red colour letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 14.09.2020

Page 40

Line wise sentence

40

1 वानीञ्ज्य कौ मनः शुष्कतृणपर्ण वत्सं (भोजूम) दग्धं ॥ तेन शङ्क (तेवै सूते)
 2 रस्तत्प (श्रीशङ्करः) मार्थसारः रुद्ररूपेण सर्वदोषहारकः
 3 (लभोम) साक्षात्कारमित्यर्थः ॥ ननु मनश्चैञ्चलास्थिरः
 4 केनस्थैर्यमायाति येन परमार्थं प्रार्थयामि
 5 इत्याशङ्क्य ॥२५॥ चित्त तुर्गस् गगने भ्रम वनो
 6 निमेष अक्य कडि योजन् लछ् ॥ चैतन्य व
 7 गी यमें रटेत् जानो प्राण् अपान् फोटेत्
 8 पकच्य ॥२६॥ चित्ता भिधः (तुरगस) तुरङ्गः ससर्व गति
 9 र्वायुर्लक्षणे भूता (गगने) काशे (भ्रमवनो) भ्रामयन्तः ॥ क्षणा (नर्मेंश)
 10 न्तरेपि योजनलक्षं च गामिनः यो सूक्ष्मरु
 11 पो माया भ्रमाभासः ॥ यथा मरुमरीचिका
 12 ॥ (यमि) येन चैतन्य स्व स्वरूपज्ञानमार्गेण (वगि) निश्चला
 13 त्मभावभक्तियोगयुक्तेन तं करोति (रटेत् जानो) निग्रहम्
 14 ॥ गता गतयोर्नोमनि (फोटेत्) भग्न (पकच्य) पक्षौ प्राणापानौ
 15 उभयोर्यत्र विलयौ सः सोमसर्यात्मकोस्ति ड

- Website page link is Page 58. **Note:** Lines in blue font colour and in brackets are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. Red colour letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 14.09.2020

Page 40

Final version

[तां षड्भावगहनारण्यादिदोष] - ष- (वालीञ्ज्य) कौ मनः शुष्कतृणपर्ण वत्सं (भोजूम) दग्धं॥
तेन शङ्क- (तेवै सूते) रस्तत्प- (श्री शङ्करः) मार्थसारः रुद्ररूपेण सर्वदोषहारकः (लभोम) साक्षात्कारमित्यर्थः॥
ननु मनश्चैञ्चलाऽस्थिरः केन स्थैर्यमायाति येन परमार्थं प्रार्थयामि इत्याशङ्क्य॥२५॥
चित्त तुर्गस् गगने भ्रमवनो निर्मेष अक्य कडि योजन् लछ्॥ चैतन्य वगी यमें रटेत् जानो प्राण् अपान् फोटेरेत् पकच्य॥२६॥
चित्ता भिधः (तुरगस) तुरङ्गः ससर्व गतिर्वायुर्लक्षणे भूता- (गगने) काशे (भ्रमवनो) भ्रामयन्तः॥
क्षणा- (नर्मेश)-न्तरेऽपि योजनलक्षं च गामिनः यो सूक्ष्मरूपो माया भ्रमाभासः॥ यथा मरुमरीचिका॥
(यमि) येन चैतन्य स्व स्वरूपज्ञानमार्गेण (वगि) निश्चलात्मभावभक्तियोगयुक्तेन तं करोति (रटेत् जानो) निग्रहम्॥
गता गतयोर्नामनि (फोटेरेत्) भग्न (पकच्य) पक्षौ प्राणापानौ उभयोर्यत्र विलयौ सः सोमसूर्यात्मकोस्ति इ-

- Website page link is Page 58. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 14.09.2020

Page 40

Notes

1. No observations

Website page link is Page 58. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 16.09.2020

Page 41

Consonant by consonant transliteration

41

- 1 ३३:॥नउरीवःकुक्षिभामिहेरुद्वं
- 2 एनडिउदुंरुंमिडेइउःरुवडिय
- 3 भामिभुभिमुगमवानसुवेकेनयुके
- 4 नपरभाजुधुगिडामडु॥१०॥पियन
- 5 गडिननेमभनाडुं इउयेभेइवेडेभा
- 6 गयपेयु॥माभुगरेलेजयभरुडाडुं
- 7 भरुनेयाथमेयापटलमु॥११॥भुभुः
- 8 पुदयःभुगवुवमारुनमिउपडुइडिंन
- 9 कंगेडिदुक्षिभामिनिवारुंरुंरुं
- 10 कारः॥मीडेपुनिवारुंरुंमेडुमुगुद
- 11 ॐकुचडिरेदिनः॥भनेभयःधुवडिंम
- 12 निचडिंरुइविषकीउदुममीरुइ॥ने
- 13 वकिडिडुंभीडियुकेभडेउउदुविडा॥
- 14 यमुडुंरुंरुंमलिथुवमुजुमुधु

--त्यर्थः॥ ननु जी वः क्षु इपि {त्पि} पा सा दि क्षो भा त्क थं
जा ना ति त त्प रं ध र्मो शी तो ष्णा न्तः भ व ति य-

स्माद्वस्त्रमिच्छुराशावानश्च भवेत्केन युक्ते -
न परमार्थप्राप्तिरित्याशङ्क्य ॥२६॥ खियना
गाण्डिनानेशमन् दूरो भ्रान्तये मौत्रावोतेम्
गयखस्ते ॥ शास्थर् भोजेत् यसभ इग् कू रो
सहनो य्पचो य्धन्यालस्ते ॥२७॥ मुमुक्षुः
पुरुषः (खी य ना) प्रारब्धवशादनाश्रितधर्मत्वात्किं न
करोति क्षु इपि {त्पि} पा सा दि नि वा र णा र्था द्भो गा -
हारः॥ शी तो ष्ण (ग ण्डि ना) नि वा र णा र्थं चे द्द्वस्त्रग्रह -
णं कुर्वन्ति देहि नः॥ मनोमयः प्रवृत्तिं च
(ने श म न् दू रो) नि वृ त्तिं कृत्वा वि वे की त त्व द र्शी भू त्वा॥ नै
-व किञ्चित्करोमीतियुक्तो मन्येत तत्त्ववित्
पश्यच्छृण्वन्स्पृशञ्जिघ्रन्नश्नन्गच्छन्स्वप-

- Website page link is Page 59. **Note:** Lines in blue font colour and in brackets are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. Red colour letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 16.09.2020

Page 41

Line wise sentence

41
1 इतः॥नरणीवःकुक्षियभासिहेरुक्ख
2 एनडितइरेवमेसीडेहउःरुवडिय
3 म्मकुभिसुगामवानसुरुवेकेनयुके
4 नपरभाज्पुष्टिरिडामकु॥१५॥पियन
5 गण्डिननेमभनाजुं इत्रयेभेउवेउभा
6 गयामये॥माभुगरेरेजयभरुजाकुं
7 मरुनेयाथमेयाएटलमे॥१७॥भुभहः
8 पुनयःभुगबुवमारुनामिउपमइकिंन
9 कगेडिदुक्षियभासिनिवार॥१८॥कुंकेग
10 कारः॥सीडेधुनिवार॥१९॥कुंमेकुभुगद
11 कुंवडिरेदिनः॥भनेभयःधुवडिंम
12 निचडिंरइविवकीउहुरुसीरुइ॥ने
13 वकिक्किङ्गेभीडिपुंकेभरेउउइविडा॥
14 यमृगुभरुमलिथ्वसुजसुभुभ

--त्यर्थः॥ ननु जीवः क्षुत्पिपासादिकोभात्कथं {क्षुत्पिपासादिकोभात्कथं}
जानाति तत्परं धर्मो शीतोष्णान्तः भवति य-
स्माद्वस्त्रमिच्छुराशावानश्च भवेत्केन युक्ते-
न परमार्थप्राप्तिरित्याशङ्क्य॥२६॥ खियना
गाण्डिनानेशमन् दूरोक्षान्त्ये मौत्रावोतेम्
गयखस्ते ॥ शास्थर् भोजेत् यस भङ्ग् कूरो
सह नोय् पचोय् धन्यालस्ते ॥२७॥ मुमुक्षुः
पुरुषः (खीयना) प्रारब्धवशादनाश्रितधर्मत्वात्किं न
करोति क्षुत्पिपासादिनिवारणार्थाद्भोगा- {क्षुत्पिपासादिनिवारणार्थाद्भोगा} -
हारः॥ (गण्डिना) शीतोष्णनिवारणार्थं चेद्वस्त्रग्रह-
णं कुर्वन्ति देहि नः॥ मनोमयः प्रवृत्तिं च
(नेशमन) निवृत्तिं (दूरो) कृत्वा विवेकी तत्त्वदर्शी भूत्वा॥ नै-
-व किञ्चित्करोमीति युक्तो मन्येत तत्त्ववित्
पश्यञ्छृण्वन्स्पृशञ्जिघ्रन्नश्नन्गच्छन्स्वप-

- Website page link is Page 59. **Note:** Lines in blue font colour and in brackets are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. Red colour letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 16.09.2020

Page 41

Final version

[गता गतयोर्नामनि (फोटेरेत) भग्न (पक्च्य) पक्षौ प्राणापानौ उभयोर्यत्र विलयौ सः सोमसूर्यात्मकोस्ति इ---]
त्यर्थः॥

ननु जीवः क्षुड्पिपासादिकोभात्कथं {क्षुत्पिपासादिकोभात्कथं} जानाति तत्परं धर्मो शीतोष्णान्तः भवति
यस्माद्वस्त्रमिच्छुराशावानश्च भवेत्केन युक्तेन परमार्थप्राप्तिरित्याशङ्क्य॥२६॥

खियना गाण्डिना नेशमन् दूरो भ्रान्त्येमौ त्रावो तेम् गय खस्ते ॥ शास्थर् भोजेत् यस भङ्ग् कूरो सह नोय् पचोय्
धन्यालन्ते ॥२७॥ मुमुक्षुः पुरुषः (खीयना) प्रारब्धवशादनाश्रितधर्मत्वात्किं न करोति
क्षुड्पिपासादिनिवारणार्थाद्भोगाहारः {क्षुत्पिपासादिनिवारणार्थाद्भोगाहारः}॥

(गण्डिना) शीतोष्णनिवारणार्थं चेद्वस्त्रग्रहणं कुर्वन्ति देहि नः॥ मनोमयः प्रवृत्तिं च (नेशमन्) निवृत्तिं (दूरो)
कृत्वा विवेकी तत्त्वदर्शी भूत्वा॥

नैव किञ्चित्करोमीति युक्तो मन्येत तत्त्ववित्। पश्यञ्छृण्वन्स्पृशञ्जिघ्रन्नश्नन्गच्छन्स्वप.....

- Website page link is Page 59. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 16.09.2020

Page 41

Notes

1. Line **41.01** – The word **क्षुड्पिपासादिक्षोभात्कथं** is incorrect, the correct word is **क्षुत्पिपासादिक्षोभात्कथं**
2. Line 41.09 – The word **क्षुड्पिपासादिनिवारणार्थाद्भोगाहारः** is incorrect, the correct word is **क्षुत्पिपासादिनिवारणार्थाद्भोगाहारः**

- Website page link is Page 59. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 18.09.2020

Page 42

Consonant by consonant transliteration

42

- 1 सुभन ॥ मूलपत्रिभ ॥ नृ कृत्रि भविभि
- 2 धत्रयि ॥ इन्द्रिय ॥ मद्रिय जेधुवतुत्र ॥ इ
- 3 एरयन ॥ इन्द्रिय ॥ नृ मवनेरुवतः
- 4 यतः ॥ नत्रिमभयूरकः ॥ पूया ॥ कलेय
- 5 भगएरुयेकरोतिभमुक्तः ॥ नवावेत्यमु
- 6 कनामकीममण्टारुवतिङ्कृत्तियभा
- 7 मीडेधुभापयः ॥ पारिव ॥ इन्द्रियकेषु
- 8 इलिकेभः ॥ इवेवनविस्सयतेमभयुत्रिभ
- 9 मेवकाररानुवः ॥ कुवतिभेगहापरिया
- 10 लना ॥ इभुत्र ॥ पुभुत्राधुकरे ॥ वेधम
- 11 मथासरुनेनभुक्तिः ॥ इन्द्रियेकुर्व
- 12 इन्द्रियेनानृत्तु ॥ इधुभुत्राधुकरे ॥ इन्द्रिये
- 13 इन्द्रियेनानृत्तु ॥ इधुभुत्राधुकरे ॥ इन्द्रिये
- 14 मनेगिकिङ्कृवेग ॥ यतुश्रीविष्णुगरुड

श्व स न् ॥ प्र ल प न्वि सृ ज न्गृ ह्ण न्नु न्मि ष न्नि मि
 ष न्न पि ॥ इ न्द्रि या णी न्द्रि या र्थे षु व र्त न्त इ ति
 धा र य न् ॥ इ ति स्मृ तेः न त्वा (भ्रा न्त ये मौ त्रा बु) शा वा नो भ व तः
 य तः जा ना ति म म प्रे र कः प्र या ण का ले य
 म रा ज भ ये क रो ति में मु क्तः ॥ न वा वे त्य मु
 क ना म की म म धा ता भ व ति क्षु इपि {त्पि} पा सा
 शी तो ष्ण सु ख दुः खा दि वृ त्या ति हा र को स्त्वि
 ह लो के सः ॥ त थै व न वि जा य ते म म पु त्र मि त्र
 से वा का र बा न्ध वाः कु र्व न्ति में र क्षा प रि पा
 ल ना इ हा मु त्र ॥ (भ्रा न्त ये मो त्रा वृ) अ मु ना प्र का रे ण ये षा मा
 शा पा श ब न्ध ने न मु क्तः ॥ स्या द्भ क्ति यो ग यु क्ति र्भ वे
 द्भ्रा न्त चे त नां त्य क्त्वा ॥ (ते स् ग य ख स्ते) ते षा मू र्व्व {थ्व} प रां ग तिं सं
 प्रा प्ति स्स्या द्य स्मा ज्ज न्म म र णा द यः व्या धि ना
 श ने चि कि त्सा भ वे त् ॥ य त् श्री वि ष्णु (शा स्त्र) ग रु ड

- Website page link is Page 60. **Note:** Lines in blue font colour and in brackets are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. Red colour letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 18.09.2020

Page 42

Final version

[नैव किञ्चित्करोमीति युक्तो मन्येत तत्त्ववित्। पश्यञ्छृण्वन्स्पृशञ्जिघ्रन्नश्नन्गच्छन्स्वप.....] ञ्श्वसन् ॥
प्रलपन्विसृजन्गृह्णन्नुन्मिषन्निमिषन्नपि ॥ इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेषु वर्तन्त इति धारयन् ॥ इति स्मृतेः । न
त्वा (भ्रान्तु येमौ त्राबु) शावा नो भवतः यतः जानाति मम प्रेरकः प्रयाणकाले यमराजभये करोति में मुक्तः
॥ नवा वेत्यमुक नामकी मम धाता भवति क्षुड्पिपासा {क्षुत्पिपासा} शीतोष्णसुखदुःखादिवृत्त्यात्ति हार
कोस्त्वहलोके सः ॥ तथैव न विजायते मम पुत्र मित्र सेवाकारबान्धवाः कुर्वन्ति में रक्षा परिपालना इहामुत्र
॥ (भ्रान्तु यमो त्रावू) अमुना प्रकारेण येषामाशापाशबन्धनेन मुक्तिः ॥ स्याद्भक्तियोगयुक्तिर्भवेद्भ्रान्तचेतनां
त्यक्त्वा ॥ (तेस् गय खस्ते) तेषामूर्ध्वपरां {तेषामूर्ध्वपरां} गतिं संप्राप्तिस्स्याद्यस्माज्जन्ममरणादयः
व्याधिना शने चिकित्सा भवेत् ॥ यत् श्रीविष्णु (शास्तूर) गरुड

- Website page link is Page 60. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 18.09.2020

Page 42

Notes

1. Line **42.06** – The word **क्षुड्पिपासा** is incorrect, the correct word is **क्षुत्पिपासा**
2. Line **42.12** – The word **तेषामूर्ध्वपरां** is incorrect, the correct word is **तेषामूर्ध्वपरां**

- Website page link is Page 60.



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 19.09.2020

Page 43

Consonant by consonant transliteration

43

- 1 प्रश्नोत्तरादयः गरुडपुराणे श्रीपार्वती
- 2 श्रीमहेश्वरसंवादे मृततत्त्वसंज्ञितेशा
- 3 स्त्रे ॥ वेदे पि धर्मराजनाज्यकेतुसंवा
- 4 देपिनाज्यकेतुशास्त्रेण वाक्यश्रवणेने (भोजेत्)
- 5 (यमभङ्ग) तियमत्रासमहाभयकष्टकूरोभवतियेनतेदुःखदायनं
- 6 नसंहरन्तियानिजीवानीपुनःपुनर्निवतन्तोतिता
- 7 निमृत्युसंसारवर्त्मनि ॥ तं (सोहनपचो) कालपुरुषस्या
- 8 पिकिञ्चित्सहनमस्ति किंतुप्रबुद्धाः म
- 9 (धन्या) हाधीरवान्पुरुषाः सदानन्दस्वरूपेणजी (लस्ते)
- 10 वन्तो (न्तस) तेनकालभयातीतोपुनर्जन्मविमुक्ता
- 11 इत्यर्थः ॥ ननु कथं भोजनाहारं करोमि पू
- 12 र्णोथवापूर्णः किमस्वरं करोमि वासांसि
- 13 नवा नि {नी} वपुराणा नि इत्याशङ्क्या ॥ २७ ॥ यव ॥
- 14 तूर्चलिते अम्बर्हितक्षुध्यवचलिते

प्रश्नो {शनो} त रा द यः ग रु ड पु रा णे ॥ श्री पा र्व ती प्रश्नोत्तरादयः
श्री म हे श्व र सं वा दे मृ त त त्त्व सं ज्ञि ते शा
स्त्रे ॥ वे दे पि ध र्म रा ज ना ज्य के तु सं वा
दे पि ना ज्य के तु शा स्त्रे ण वा क्य श्र व णे ने (भो जे त्)
(य म भ ङ्ग) ति य म त्रा स म हा भ य क ष्टं कू रो भ व ति ये न ते दुः ख दा य नं
न सं ह र न्ति या नि जी वा नी पु नः पु न र्नि व त न्तो ति ता
नि मृ त्यु सं सा र व र्त्म नि ॥ तं (सो ह न प चो) का ल पु रु ष स्या
पि कि ञ्चि त्स ह न म स्ति किं तु प्र बु द्धाः म
(ध न्या) हा धी र वा न्पु रु षाः स दा न न्द स्व रू पे ण जी (ल स्ते)
व न्तो (न्तस) ते न का ल भ या ती तो पु न र्ज न्म वि मु क्ता
इ त्य र्थः ॥ न नु क थं भो ज ना हा रं क रो मि पू
र्णो थ वा पू र्णः कि म स्व रं क रो मि वा सां सि
न वा नि {नी} व पु रा णा नि इ त्या श ङ्क्या ॥ २ ७ ॥ य व ॥
तूर् च लि ते अ म्ब र् हि त क्षु ध् य व च लि ते

- Website page link is Page 61. **Note:** Lines in blue font colour and in brackets are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. Red colour letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 19.09.2020

Page 43

Line wise sentence

43

1 प्रश्नोत्तरादयः गरुडपुराणे श्रीपार्वती
2 श्रीमहेश्वरसंवादेऽमृततत्त्वसंज्ञिते शा-
3 स्त्रे॥ वेदेऽपि धर्मराजनाज्यके तु संवा-
4 देऽपि नाज्यके तु शास्त्रेण वाक्य श्रवणेन- (भोजेत)
5 (यम भङ्ग) -ति यमत्रासमहाभयकष्टं (कूरो) भवति(दुःखदायनं)येन ते
6 न संहरन्ति यानि जीवानि पुनः पुनर्निवतन्तेऽतिता-
7 -नि मृत्युसंसारवर्त्मनि॥ तं (सोह न पचो) कालपुरुषस्या
8 -पि किञ्चित्सहनमस्ति किंतु प्रबुद्धाः (म)
9 धन्या (हा)धीरवान्पुरुषाः सदानन्दस्वरूपेण जी (लस्ते)
10 वन्तो {वन्तसु} तेन कालभयातीतो पुनर्जन्म विमुक्ता
11 इत्यर्थः॥ ननु कथं भोजनाहारं करोमि पू-
12 र्णोऽथवा पूर्णः किमस्वरं करोमि वासांसि
13 नवानिव {नवानीव} पुराणानि इत्याशङ्क्या॥२७॥ यव
14 तूर् चलि ते अम्बर् हित क्षुध् यव चलि ते

43

1 प्रश्नोत्तरादयः गरुडपुराणे श्रीपार्वती
2 श्रीमहेश्वरसंवादेऽमृततत्त्वसंज्ञिते शा-
3 स्त्रे॥ वेदेऽपि धर्मराजनाज्यके तु संवा-
4 देऽपि नाज्यके तु शास्त्रेण वाक्य श्रवणेन- (भोजेत)
5 (यम भङ्ग) -ति यमत्रासमहाभयकष्टं (कूरो) भवति(दुःखदायनं)येन ते
6 न संहरन्ति यानि जीवानि पुनः पुनर्निवतन्तेऽतिता-
7 -नि मृत्युसंसारवर्त्मनि॥ तं (सोह न पचो) कालपुरुषस्या
8 -पि किञ्चित्सहनमस्ति किंतु प्रबुद्धाः (म)
9 धन्या (हा)धीरवान्पुरुषाः सदानन्दस्वरूपेण जी (लस्ते)
10 वन्तो {वन्तसु} तेन कालभयातीतो पुनर्जन्म विमुक्ता
11 इत्यर्थः॥ ननु कथं भोजनाहारं करोमि पू-
12 र्णोऽथवा पूर्णः किमस्वरं करोमि वासांसि
13 नवानिव {नवानीव} पुराणानि इत्याशङ्क्या॥२७॥ यव
14 तूर् चलि ते अम्बर् हित क्षुध् यव चलि ते

- Website page link is Page 61. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 19.09.2020

Page 43

Final version

प्रष्णोत्तरादयः {प्रश्नोत्तरादयः} गरुडपुराणे॥ श्री पार्वती श्रीमहेश्वरसंवादेऽमृततत्त्वसंज्ञिते शास्त्रे॥
वेदेऽपि धर्मराजनाज्यके तु संवादेऽपि नाज्यके तु शास्त्रेण वाक्य श्रवणेनेति (भोजेत्) (यम
भङ्ग) यमत्रासमहाभयकष्टं (कूरो) भवति(दुःखदायनं)येन तेन संहरन्ति यानि जीवानि पुनः
पुनर्निवत्तन्तेऽतितानि मृत्युसंसारवर्त्मनि॥ तं (सोह न पचो) कालपुरुषस्यापि किञ्चित्सहनमस्ति
किंतु प्रबुद्धाः (धन्या) महाधीरवान्पुरुषाः सदानन्दस्वरूपेण (लस्ते) **जीवन्तो** {जीवन्तसु} तेन
कालभयातीतो पुनर्जन्म विमुक्ता इत्यर्थः॥ ननु कथं भोजनाहारं करोमि पूर्णोऽथवा पूर्णः
किमस्वरं करोमि वासांसि **नवानिव** {नवानीव} पुराणानि इत्याशङ्क्या ॥२७॥ **यव तूर् चलि ते**
अम्बर् हित क्षुध् यव चलि ते

- Website page link is Page 61. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 19.09.2020

Page 43

Notes

1. Line **43.01** – The word **प्रष्णोत्तरादयः** is incorrect, the correct word is **प्रश्नोत्तरादयः**
2. Line **43.10** – The word **जीवन्तो** is incorrect, the correct word is **जीवन्तस्**
3. Line **43.13** – The word **नवानिव** is incorrect, the correct word is **नवानीव**

- Website page link is Page 61.



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 21.09.2020

Page 44

Consonant by consonant transliteration

44

- 1 अहाराण्डा॥सिद्धयुविमाराभापि
- 2 उमिउमेदभावनाहकावना॥३३॥
- 3 गुरुउंवापुगएनवेवापुगंकि
- 4 सिद्धयुउंवाभेमीउनिवारंमुमकि
- 5 भाववलिउभनमुउंयकवडिभुवलेव
- 6 इंवाऊरुउरुभुगभा॥येनहुद्विपभा
- 7 सिद्धुविनिवडुउंमुउंएलंनलंकीरं
- 8 वाउंयलेधणरुयःविगतमेकेधु
- 9 रउवमाहुउंमुगाडिदुगकःरुवेधुगउं
- 10 नदुगगःऊरु॥एवैवभाऊनभद्वि
- 11 संभुनिडिधुऊंरुभुऊंभभभुवउंनैः॥
- 12 भुगउंभमुउंकिभावनलिउंभमुवभाह
- 13 इविनीयउउउः॥पडिभुउः॥उभउउं
- 14 सिद्धिसिद्धयुउंयमुविमारांभभागंकेदं

अ हा र् अ न्न् ॥ चि न्त नृ प स्व वि चा र स् पि

त चि त दे ह स् व न् क्य ह वा न् ॥ २ ८ ॥

ग्र हा न्त रं वा अ र ण्ये न वो वा पु र णो कि

ञ्चि न्मा त्रं (य व तू र) ते वा सं शी त नि वा र णा (च लि) र्था द भि

मा न व र्जि त म ना श्र तं य द्भ व ति सु व र्ण वा

तृ णं वा क्त रु त (ते अ म्ब र् हि त) दम्ब र म् ॥ (क्षु द् य व) ये न क्षु इपि {त्पि} पा सा

दि क ष्टं वि नि (च लि) व र्त ते अ न्न् ज लं फ लं क्षी रं

वा तृ ण प णी ष धा द यः वि ग त शो कौ प्रा

र ब्ध व शा द्य त द्रो गा ति हा र कः भ वे श्छृ णु ते

(ते अ हा र अ न्न्) ना हा रा द रः कुरु ॥ ध्या त्वै व मा त्मा न म ह ति

शं मु नि ति ष्ठे त्स दा मु क्त स म स्त ब न्ध नैः ॥

प्रा र ब्ध म श्नु न्न भि मा न व र्जि तो म य्ये व सा क्षा

त्प्र वि ली य ते त तः ॥ इ ति स्मृ तेः ॥ त स्मा ते त

द्वि चि न्त (चि न्त नृ प) य न्न् प स्व वि चा रं स मा (पि त) च र को हं

- Website page link is Page 62. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 21.09.2020

Page 44

Line wise sentence

44

1 अहार् अन्नं ॥ चिन्त नृपस्व विचारस् पि
2 त चित देहस् वन् क्या हवान् ॥ २ ८ ॥
3 ग्रहान्तरं वा अरण्ये नवो वा पुरणो कि
4 ञ्चिन्मात्रं (यव तूर) ते वासं शीतनिवारणार्था (चलि) दभि
5 मान वर्जितमनाश्रतं यद्भवति सुवर्णं वा
6 तृणं वाक्तरुतदम्बरम् (ते अम्बर् हित) ॥ (क्षुद्यव) येन क्षुड्पि{त्पि}पासा
7 दि कष्टं (चलि) विनिवर्तते अन्नं जलं फलं क्षीरं
8 वा तृणपर्णोषधादयः विगतशोकौ प्रा
9 रब्ध वशाद्यत्त द्रोगार्ति हारकः भवेश्छृणुते
10 (ते अहार अन्न) नाहारादरः कुरु ॥ ध्यात्वैवमात्मानमहर्ति
11 शं मुनि तिष्ठेत्सदा मुक्त समस्त बन्धनैः ॥
12 प्रारब्ध मश्नुन्न भिमा नवर्जितो मय्येव साक्षा
13 त्प्र विलीयते ततः ॥ इति स्मृतेः ॥ तस्मात्तेत
14 द्वि (चिन्त नृप) चिन्तयन्नृपस्वविचारं (पित) समाचर कोऽहं

- Website page link is Page 62. **Note:** Lines in blue font colour and in brackets are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. Red colour letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 21.09.2020

Page 44

Final version

अहार् अन्न॥

चिन्तनृप स्वविचारस् पित चित देहस् वन् क्याह् वान्॥२८॥

ग्रहान्तरं वा अरण्ये नवो वा पुराणो किञ्चिन्मात्रं (यव तूर) ते वासं शीतनिवारणार्था (चलि)
दभिमानवर्जितमनाश्रतं यद्भवति सुवर्णं वा तृणं वाक्तरुतदम्बरम् (ते अम्बर् हित)॥

(क्षुद् यव) येन क्षुड्पि{त्पि}पासादि-कष्टं (चलि) विनिवर्तते अन्नं जलं फलं क्षीरं वा तृणपर्णोषधादयः
विगतशोकौ प्रारब्धवशाद्यत्तद्रोगार्तिहारकः भवेच्छृणुते (ते अहार अन्न) नाहारादरः कुरु॥

ध्यात्वैवमात्मानमहर्निशं मुनि तिष्ठेत्सदा मुक्तसमस्तबन्धनैः॥

प्रारब्धमश्नुन्नभिमानवर्जितो मय्येव साक्षात्प्रविलीयते ततः॥ इति स्मृतेः॥

तस्मात्तद्वि- (चिन्त नृप) -चिन्तयन्नृपस्वविचारं (पित) समाचर कोऽहं

- Website page link is Page 62. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 21.09.2020

Page 44

Notes

4. Line **43.01** – The word **प्रष्णोत्तरादयः** is incorrect, the correct word is **प्रश्नोत्तरादयः**
5. Line **43.10** – The word **जीवन्तो** is incorrect, the correct word is **जीवन्तस्**
6. Line **43.13** – The word **नवानिव** is incorrect, the correct word is **नवानीव**

- Website page link is Page 62.



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 23.09.2020

Page 45

Consonant by consonant transliteration

- 45**
- 1 कश्चिन्मवेभंभोरे॥यश्चात्तुभिर्नसमभयेभु॥
 - 2 लक्ष्मीरेनरुवमि॥मुक्तेष्वियद्विद्विश्चु॥
 - 3 उःकश्चिन्मवेभंभोरे॥यश्चात्तुभिर्नसमभयेभु॥
 - 4 कश्चिन्मवेभंभोरे॥यश्चात्तुभिर्नसमभयेभु॥
 - 5 उपभारुवतिउ॥नथ्वीःनरुलेनमिः
 - 6 नवयुक्तेष्वरुवना॥सधेभमिः॥भ
 - 7 इनेमिःपुंविद्विभुक्तये॥उतिभुः॥
 - 8 मिरकलेनसमभरुभमिःवरुयुक्तेनयउ
 - 9 उदंउतेयिउद्विष्णुंनवेद्विकषभभुक्तु
 - 10 वतिकालरुयुक्तेनयुक्तेनभुक्तिःभुक्तिः
 - 11 महु॥३३॥भरुणभमभरुभानगकि
 - 12 उक्तिपुवायाभुक्तिगुग॥भलिलभान
 - 13 वनाएनाभुलेउगकिउतिक्तेयाकुल
 - 14 रुभरुणविमग॥३३॥मिवभुक्तमे

क स्य चा यं सं सा रो ॥ य स्मा त्व मि दं ना श म यं स्थू
ल श री रं न भ व सि ॥ सू क्ष्मो पि य दि न्द्रि या द्य
न्तः क र ण श्च न भ व सि॥ त्व मा त्मा नं रा ज व त्स र्व सा क्षि प्र
का श में के कै व ल्य स्व रू पो नि रा म यो सि किं दे हे (चि त दे ह स)
उ प मा (व न् क्य ह् वा न्) भ व ति ते ॥ न पृ थ्वीः न ज लं ना ग्निः
न वा यु र्द्यौ र् न वा भ वा न् ॥ ए षां सा क्षि ण मा
त्मा नं चि द्रू पं वि द्धि मु क्त ये ॥ इ ति स्मृ तेः ॥
चि र का ले न श म द मा दि ब हु य त्ने न य त
तो हं त तो पि त द्वि चा रं न वे द्मि क थ मा त्मा भ
व ति का ल भ या त्के न यु क्ते न मु क्तिः स्या दि त्या
श ड्क्य ॥ २८ ॥ स ह ज स् श म द म् ना ग छि
इ छि प्रा वा ख् मु क्ति द्वा र् ॥ स लि ल स् ल
व न् ज न् म्ये ले त् ग छि तु ति छ्यो य् दु र् ल
भ् स ह ज वि चा र् ॥ ॥ शि वा त्म क मे (स ह ज वि चा र्)

- Website page link is Page 63. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 23.09.2020

Page 45

Line wise sentence

- 45
- 1 कष्टमयं संभोगे ॥ यस्मात्त्वमिदं नाशमयं स्थू
 - 2 लशरीरं न भवसि ॥ सूक्ष्मोपि यदिन्द्रियाद्य-
 - 3 त्तःकरणश्च न भवसि ॥ त्वमात्मानं राजवत्सर्वसाक्षि प्र-
 - 4 काशमैक कैवल्य स्वरूपो निरामयोसि किं देहे (चित देहस)
 - 5 उपमा (व न् क्य ह वा न्) भवति ते ॥ न पृथ्वीः न जलं नाग्निः
 - 6 न वायु र्द्यौ र्नवा भवान् ॥ एषां साक्षिणमा-
 - 7 त्मानं चिद्रूपं विद्धि मुक्तये ॥ इति स्मृतेः ॥
 - 8 चिरकालेन शमदमादि बहुयत्नेनयत
 - 9 तोहं ततोपित द्विचारं न वेद्मि कथ मात्मा भ-
 - 10 वति काल भयात्केन युक्तेन मुक्तिः स्यादित्या
 - 11 शडक्य ॥ २८ ॥ सहजस् शमदम् ना गच्छि
 - 12 इच्छि प्रावाख् मुक्ति द्वार् ॥ सलिल स्ल-
 - 13 वन् जन्म्येलेत् गच्छितुतिच्छयोय् दुर्ल-
 - 14 भ् सहज विचार ॥ ॥ शिवात्मकमे (सहज विचार)

कस्य चायं संसारो ॥ यस्मात्त्वमिदं नाशमयं स्थू
लशरीरं न भवसि ॥ सूक्ष्मोपि यदिन्द्रियाद्य-
न्तःकरणश्च न भवसि ॥ त्वमात्मानं राजवत्सर्वसाक्षि प्र-
काशमैक कैवल्य स्वरूपो निरामयोसि किं देहे (चित देहस)
उपमा (व न् क्य ह वा न्) भवति ते ॥ न पृथ्वीः न जलं नाग्निः
न वायु र्द्यौ र्नवा भवान् ॥ एषां साक्षिणमा-
त्मानं चिद्रूपं विद्धि मुक्तये ॥ इति स्मृतेः ॥
चिरकालेन शमदमादि बहुयत्नेनयत
तोहं ततोपित द्विचारं न वेद्मि कथ मात्मा भ-
वति काल भयात्केन युक्तेन मुक्तिः स्यादित्या
शडक्य ॥ २८ ॥ सहजस् शमदम् ना गच्छि
इच्छि प्रावाख् मुक्ति द्वार् ॥ सलिल स्ल-
वन् जन्म्येलेत् गच्छितुतिच्छयोय् दुर्ल-
भ् सहज विचार ॥ ॥ शिवात्मकमे (सहज विचार)

- Website page link is Page 63. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 23.09.2020

Page 45

Final version

कस्य चायं संसारो॥

यस्मात्वमिदं नाशमयं स्थूलशरीरं न भवसि॥ सूक्ष्मोपि यदिन्द्रियाद्यन्तःकरणश्च न भवसि॥

त्वमात्मानं राजवत्सर्वसाक्षि प्रकाशमेकं कैवल्यस्वरूपो निरामयोऽसि किं (चित देहस्) देहे उपमा (वन् क्यह वान्) भवति ते॥ न पृथ्वीः न जलं नाग्निः न वायुर्द्यौर्नवा भवान्॥ एषां साक्षिणमात्मानं चिद्रूपं विद्धि मुक्तये॥ इति स्मृतेः॥

चिरकालेन शमदमादिबहुयत्नेन यततोऽहं ततोऽपि तद्विचारं न वेद्मि कथमात्मा भवति कालभयात्केन युक्तेन मुक्तिः स्यादित्याशङ्क्य॥२८॥

सहजस् शमदम् ना गच्छि इच्छि प्रावाख् मुक्ति द्वार्॥ सलिल स्तवन् जन् मेलेत गच्छि तुति छ्योय् दुर्लभ् सहज विचार् ॥२९॥ शिवात्मकमे (सहज विचार्)

- Website page link is Page 63. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

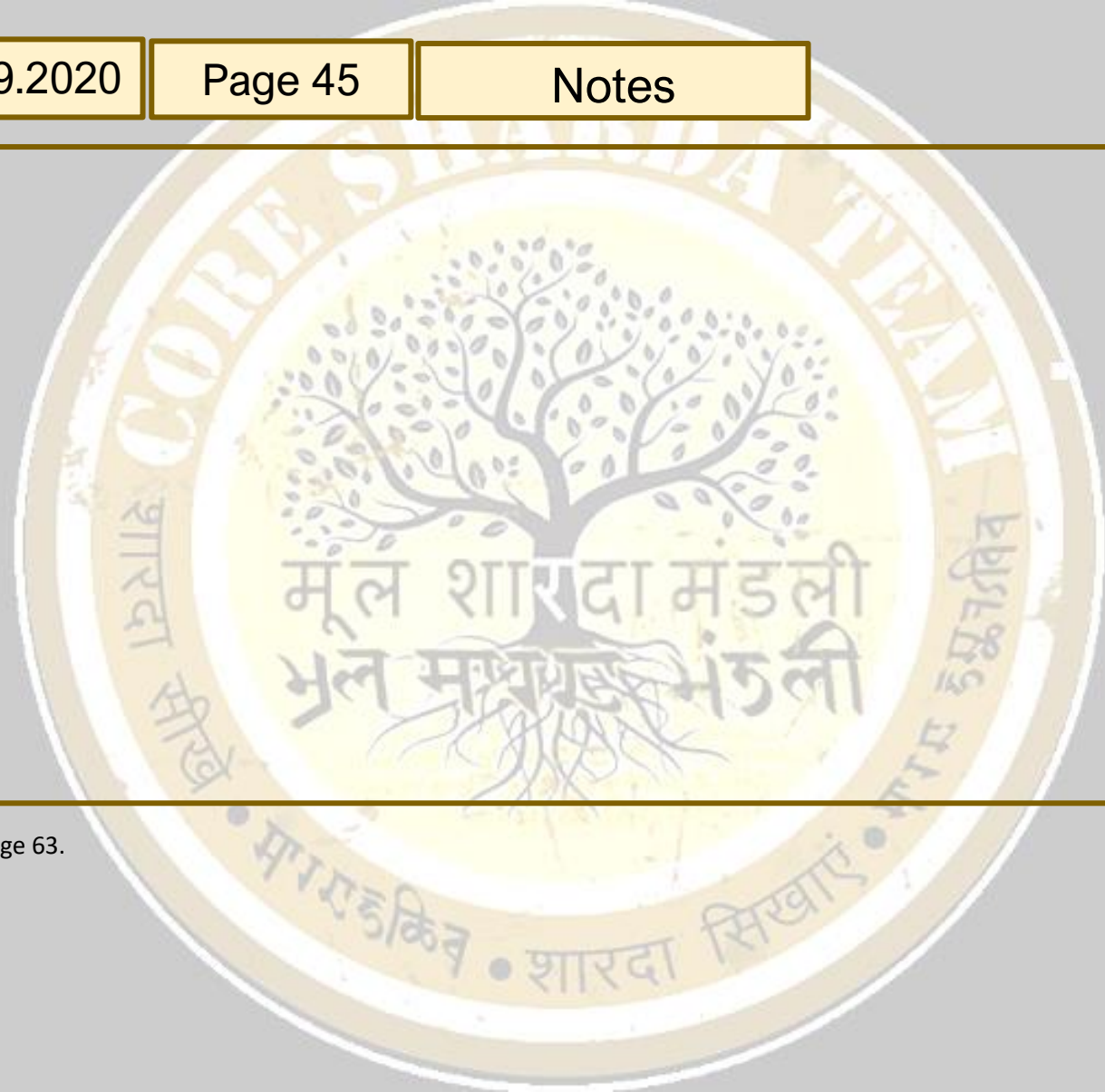
Date – 23.09.2020

Page 45

Notes

1. No notes

Website page link is Page 63.





Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 27.09.2020

Page 46

Consonant by consonant transliteration

46

- 1 कुरुवमैउवृविगकगभुङ्गुयिगिनुनंमद
- 2 एंविमरभुसृउ॥पुदभेकेपिभुङ्गुसृ
- 3 उभाहीमरुवृयः॥उरुनंउमकेदेवि
- 4 मरुभेयभीमः॥उतिमः॥मदरा
मदराभा ममरुभानगकि
- 5 विमरुकरुनंकेवलंनभुमुभेभक
- 6 उभाङ्गुनिरुपयेकिणीयउ॥भुमरु
- 7 परभेसुगुरुगुदभाङ्कगभा॥उ
- 8 भुङ्गुकरुकिपुयुङ्गुनयेगजीव्वे
उकिपुवया
- 9 गगुङ्गुभरुकीटउवपुःसुकेमदरु
- 10 ननुं कवउेनभंयेगेनुदयभुभेदुगुभु
भुकिगुग
- 11 वाभुमि॥वैगगुदीनंमभरुभकारुभ
- 12 लिलेनवनंयथाउषामेद्युमयःउत्रय
गकि मनेज
- 13 रुवःकरोवुरुडिभचसुतंभेषुयुयरु
याडि
- 14 भयेकभुंरुगुयसुज॥भावभुप्रुठनरु

क्य भा व चै त न्य नि रा का र स्व रू पो चि न्त नं स ह
जं वि चा र मु च्य ते ॥ अ ह मे को पि सू क्षम श्च ज्ञा
ता सा क्षी स द व्य यः॥ त द हं ना त्र स न्दे हो वि
चा र स्सो य मी दृ शः ॥ इ ति स्मृ तेः ॥ स ह ज
वि चा र (स ह ज म) भ ज ना र्थं के व लं न स्या श्छ मो द मः का (श म द म् ना ग छि)
र ण मा त्मा नि रु पा यो भि धी य ते ॥ स्या द त्र
प र मे श्व रा द नु ग्र ह मा त्रं का र ण म् ॥ त
स्मा श्छ दा (ध्दा) भ क्ति प्र यु क्ता द्ध्या न यो ग {गा} दि ती त्र वै
रा ग्य त्वा द्भ म र की ट इ व प्र इ च्छ न्स न्स ह जा (इ छि प्रा व ख)
न न्दं भ व ते न सं यो गे ना क्ष य स्य मो क्ष दु रा स्या (मु क्ति डा र)
वा पस्य सि ॥ वै रा ग्य ही नं श म द म का र णे स
लि ले ल व नं य था त था चे त्पु रु षः त न्म य (में ले त)
भा वः (ग छि) क रो त्य व भा ति सर्व शू न्यं सौ षु प्त प द
म ग्नौ का ष्ठं या ति द ग्धं य द्व त् ॥ सा व स्था मू ढा {र्धा} न न्द

- Website page link is Page 64. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 27.09.2020

Page 46

Line wise sentence

46

1 कुरुवमेउतृनिगकरभुदुयेमिनुनेमद

2 रंविमरभुमृते॥मृदमेकेपिभुदुद्वर

3 उभाहीमरुवृयः॥उरुकेनउमकेदेवि

4 मरभेयेभीमृमः॥उतिमृते॥मदरा
मदराभा मभमभानगकि

5 विमररुएनअंकेवलनेनभुमृभेमभक

6 मभादुनिरुपायेकिणीयते॥भुमृदु

7 परभेसुगरुतृगुदभाउंकरभा॥उ

8 मभृमरुकिपुयुजाकुनयेगजीववे
उकिपुवाया

9 मृदुदुमरकीटवृदुदुमदर

10 ननुं कवतेनभंयेगेनदुयभृभेदुमृभृ
भुकिमृग

11 वाभृमि॥वैगृदीनेमभमभकारभम

12 लिलेनवनंयषउषामेदुयभःउरुय
भनेज गकि

13 कवःकेउवरुडिभवमुतुंभेषुयुयरु
यदि

14 भयेकभुंरुगुंयसुग॥भावभुभुदुनरु

क्यभावचैतन्यनिराकारस्वरूपो चिन्तनं सह-
जं विचारमुच्यते ॥ अहमेकोपि सूक्ष्मश्च जा
तासाक्षी सदव्ययः ॥ तदहं नात्र सन्देहो वि-
चारस्सो यमीदृशः ॥ इति स्मृतेः ॥ सहज-
विचार (सहजस्) भजनार्थं केवलं न स्याश्छमो दमः का- (शमदम् ना गच्छि)
रणमात्मा निरुपायोभिधीयते ॥ स्यादत्र
परमेश्वरादनुग्रहमात्रं कारणम् ॥ त-
स्माच्छ्रुदा {स्माच्छ्रुद्धा} भक्तिप्रयुक्ताद्ध्या नयोग{गा}दि तीव्रवै-
राग्यत्वाद्भ्रमरकीट इव प्र इच्छन्सन्सहजा (इच्छि प्रावख)
नन्दं भव तेन संयोगेनाक्षयस्य मोक्षदुरास्या- (मुक्ति द्वार)
वापस्यसि ॥वैराग्यहीनं शमदमकारणे स-
लिले लवनं यथा तथा चेत्पुरुषः तन्मय- (मैलेत्)
भावः (गच्छि) करोत्यवभाति सर्वशून्यं सौषुप्त पद-
मग्नौ काष्ठं याति दग्धं यद्वत् ॥ सावस्था मूढानन्द {मूर्धानन्द}

- Website page link is Page 63. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 27.09.2020

Page 46

Final version

क्यभावचैतन्यनिराकारस्वरूपो चिन्तनं सहजं विचारमुच्यते ॥ अहमेकोपि सूक्ष्मश्च ज्ञाता साक्षी
सदव्ययः ॥ तदहं नात्र सन्देहो विचारस्सो यमीदृशः ॥ इति स्मृतेः ॥ सहजविचारभजनार्थं (सहजस्)
केवलं न स्याच्छमो दमः (शमदम् ना गच्छि) कारणमात्मा निरुपायोभिधीयते ॥ स्यादत्र
परमेश्वरादनुग्रहमात्रं कारणम् ॥ तस्माच्छ्रदा {स्माच्छ्रद्धा} भक्तिप्रयुक्ताद्धान्ययोग{गा}दि
तीव्रवैराग्यत्वाद्भ्रमरकीट इव प्रइच्छन्सन्सहजानन्दं (इच्छि प्रावख) भव तेन संयोगेनाक्षयस्य
मोक्षदुरास्यावापस्यसि ॥ (मुक्ति द्वार) वैराग्यहीनं शमदमकारणे सलिले लवनं यथा तथा
चेत्पुरुषः तन्मयभावः (मैलेत्) (गच्छि) करोत्यवभाति सर्वशून्यं सौषुप्तपदमग्नौ काष्ठं याति दग्धं
यद्वत् ॥ सावस्था मूढानन्द {मूर्धानन्द}

- Website page link is Page 64. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 27.09.2020

Page 46

Notes

1. Line 46.08 – the word तस्माच्छ्रदा seems to be incorrect, the word is स्माच्छ्रद्धा
2. Line 46.08 – the word भक्तिप्रयुक्ताद्धानयोगादि should be भक्तिप्रयुक्ताद्धानयोगादि
3. Line 46.14 – Clarity is required for the word – मूढानन्द the word can be मूर्धानन्द

Website page link is Page 64



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 28.09.2020

Page 47

Consonant by consonant transliteration

- 47
- 1 म य म वि द्या भि धं प्र व द न्ति प ण्डि ताः ॥ त तो (तु ति छ्यो य)
 - 2 पि (दु र्ल भ्) दु र्ल भा स्ति स ह जा व स्था चि न्म य भा व (स ह ज वि चा र्)
 - 3 तु र्या स्व रू प ज्ञा न म क्ष यं मो क्ष द्वा र म् ॥ ना भा
 - 4 वो भा व्य ता में ति न च त त्रा स्त्य मू ढ ता ॥ य तो भि
 - 5 यो ग सं स्पर् शा तु दा सी दि ति नि श्च यः ॥ अ
 - 6 त स्त त्कृ त्रि मं जे यं सौ षु प्त प द व त्स दा ॥ न
 - 7 त्वे वं स्म र्या मा ण त्वं त त त्वं प्र ति प द्य ते ॥ इ ति
 - 8 स्मृ तेः ॥ न नु क थं लो भा दि म हा ब ल वी
 - 9 रा णां ता म जि ता नां ह त्वा पि स ह जं वि चा
 - 10 रं क रो मि इ दं क ष्टं दु र्ल भं जा ना मि य त्स्या
 - 11 त्सु ल भ त रं नि र्भ यं च द या नि मि तं त ते में
 - 12 व द ॥ २९ ॥ लो भ् मा रो ण् स ह ज् वि चा
 - 13 रो ण् द्र गो जा नो न् क ल्प न् त्रा व् ॥ ने श
 - 14 छ्यो य् त दूर् मौ ग्वा रो ण् शू न्य स् शू न्या में
 - 15 ले त् ग व् ॥ ३० ॥ प्र वृ त्या दि लो भा द यः (लो भ् मा रो ण्)

म य म वि द्या भि धं प्र व द न्ति प ण्डि ताः ॥ त तो (तु ति छ्यो य)
 पि (दु र्ल भ्) दु र्ल भा स्ति स ह जा व स्था चि न्म य भा व (स ह ज वि चा र्)
 तु र्या स्व रू प ज्ञा न म क्ष यं मो क्ष द्वा र म् ॥ ना भा
 वो भा व्य ता में ति न च त त्रा स्त्य मू ढ ता ॥ य तो भि
 यो ग सं स्पर् शा तु दा सी दि ति नि श्च यः ॥ अ
 त स्त त्कृ त्रि मं जे यं सौ षु प्त प द व त्स दा ॥ न
 त्वे वं स्म र्या मा ण त्वं त त त्वं प्र ति प द्य ते ॥ इ ति
 स्मृ तेः ॥ न नु क थं लो भा दि म हा ब ल वी
 रा णां ता म जि ता नां ह त्वा पि स ह जं वि चा
 रं क रो मि इ दं क ष्टं दु र्ल भं जा ना मि य त्स्या
 त्सु ल भ त रं नि र्भ यं च द या नि मि तं त ते में
 व द ॥ २९ ॥ लो भ् मा रो ण् स ह ज् वि चा
 रो ण् द्र गो जा नो न् क ल्प न् त्रा व् ॥ ने श
 छ्यो य् त दूर् मौ ग्वा रो ण् शू न्य स् शू न्या में
 ले त् ग व् ॥ ३० ॥ प्र वृ त्या दि लो भा द यः (लो भ् मा रो ण्)

- Website page link is Page 65. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 28.09.2020

Page 47

Line wise sentence

1 भयभविहृदिपेयुवमत्रियभित्तः॥उडे
2 पिकुल्लरुभित्तमरुएवभुमिन्नयरुव
3 उदाभुत्रयल्लनभदयंभेदनुगमाएनरु
4 वैरुवृताभेतिनमउत्रभुप्रुता॥यडेकि
5 योगभंय नत्रुमभीदिडिनिमुयः॥य
6 उभुइडिभंस्तेयंभेधुधुयमवइरु॥न
7 इवंभुदभुइउउइधुडियहृउ॥इडि
8 भुडेः॥नचकषंलेरुमिभदरुनवी
9 गंउत्रभुलिउनेकइपिमरुएविम
10 उंकरेभिउंमंकभुंरुल्लरुंएनभियहु
11 इल्लरुउंनिरुयंमरुयनिभिउंउडेभ
12 वरु॥१७॥लेरुभारे॥मरुएविम
13 रे॥मृगेएनेनाकल्पनाइवा॥नेम
14 इयाउत्रुगभेगुंरे॥मृवृभामृवृभे
15 लेउगवा॥३॥धुवृहृदिनेरुमयः
लेरुभारे

मयम विद्याभिधं प्रवदन्ति पण्डिताः ॥ ततो (तुति छयोय)
पि (दुर्लभं) दुर्ल भास्ति सहजावस्था (सहज विचार) चिन्मयभाव
तुर्या स्वरूपज्ञानमक्षयं मोक्षद्वारम् ॥ नाभा
वो भाव्यतामैति न च तत्रास्त्यमूढता ॥ यतो भि
योग संस्पर्शातुदासीदिति निश्चयः ॥ अ
तस्तत्कृत्रिमं ज्ञेयं सौषुप्तपदवत्सदा ॥ न
त्वेवं स्मर्यामाणत्वं तत्त्वं प्रतिपद्यते ॥ इति
स्मृतेः ॥ ननु कथं लोभादिमहाबलवी
राणां तामजितानां हत्वापि सहजं विचा
रं करोमि इदं कष्टं दुर्लभं जानामि यत्स्या
त्सुलभतरं निर्भयं च दयानिमित्तं तत्ते मे
वद ॥ २९ ॥ लोभं मरोण् सहज् विचा
रोण् द्रगो जानोन् कल्पन् त्राव् ॥ नेश
छयोय त दूर मौ ग्वारोण् शून्यस् शून्या मे
लेत् गव् ॥ ३० ॥ प्रवृत्यादि लोभादयः (लोभं मारोण्)

- Website page link is Page 65. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 28.09.2020

Page 47

Final version

[यद्वत् सावस्था] - मयमविद्याभिधं प्रवदन्ति पण्डिताः ॥ ततोऽ(तुति छ्योय) पि (दुर्लभ)
दुर्लभास्ति सहजावस्था (सहज विचार) चिन्मयभाव तुर्या स्वरूपज्ञानमक्षयं मोक्षद्वारम् ॥ नाभावो
भाव्यतामेति न च तत्रास्त्यसूता ॥ यतो भि योग संस्पर्शातुदासीदिति निश्चयः ॥ अतस्तत्कृत्रिमं
ज्ञेयं सौषुप्तपदवत्सदा ॥ नत्वेवं स्मर्यामाणत्वं तत्तत्त्वं प्रतिपद्यते ॥ इति स्मृतेः ॥ ननु कथं
लोभादिमहाबलवीराणां तामजितानां हत्वापि सहजं विचारं करोमि इदं कष्टं दुर्लभं जानामि
यत्स्यात्सुलभतरं निर्भयं च दयानिमित्तं तत्ते मे वद ॥२९॥ लोभ् मरोण् सहज् विचारोण् द्रगो
जानोन् कल्पन् त्राव् ॥ नेश छ्योय् त दूर् मौ ग्वारोण् शून्यस् शून्या मेल्लेत् गव् ॥३०॥ प्रवृत्त्यादि
लोभादयः (लोभ् मरोण्)

- Website page link is Page 65. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 28.09.2020

Page 47

Notes

1. No notes

Website page link is Page 65



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 05.10.2020

Page 48

Consonant by consonant transliteration

48

- 1 भाग ॥ निवृत्तुः सिद्धं लं विम
- 2 रञ्जयतु इत्युक्तं नैव नामि किं नु नमव
- 3 नैरुवेतु भवत्तु न कथु कल्पना भावु
- 4 एतज्जायमानं च भावु किं नु उभायुक्तं मं
- 5 यत्तु न भवत्तु इत्युक्तं नु उभायुक्तं मं
- 6 न निवृत्तुः सिद्धं लं विम किं नु नमव
- 7 भाग ॥ निवृत्तुः सिद्धं लं विम किं नु नमव
- 8 सिद्धं लं विम किं नु नमव
- 9 इत्युक्तं नैव नामि किं नु नमव
- 10 उभयत्र च भावु किं नु उभायुक्तं मं
- 11 भाग ॥ निवृत्तुः सिद्धं लं विम किं नु नमव
- 12 वभा ॥ इत्युक्तं नैव नामि किं नु नमव
- 13 इत्युक्तं नैव नामि किं नु नमव
- 14 इत्युक्तं नैव नामि किं नु नमव
- 15 इत्युक्तं नैव नामि किं नु नमव

स र णं य त् ॥ नि वृ त्त्वा दि स ह जं वि चा (स ह ज् वि चा रो ण)
 र श्च य त तु द्दु र् ल भो जा ना सि किं नू न मे व म जा (द्र गो जा नो न)
 नं भ वे त स्मा द जा न (क ल्प न्) क ष्ट क ल्प ना मा त्रं त्य (त्रा व्)
 जे त् ॥ य स्मा त्स र्व सा क्षी (ने श छ्यो य् तै) भू त मा त्म प्र का शं
 य द ना म य स्म त्यं सु ल भ त रः भ व सि स र्व
 दा नि र्वृ तिं कृ त्वा ॥ इ ति स द्वि वे कं स ह जं वि
 चा रः भ व ति य दे व त त्मो {न्मो} क्ष श्च त त्व {द्व} तः ॥ जा ग् त्स्व ष्ण स्व षु प्त्या
 दि प्र प ञ्चं य त्प्र का श ते ॥ त द्ब्र ह्मा ह मि ति जा
 त्वा स र्व ब न्धै प्र मु च्य ते ॥ इ ति कै व ल्य श्रु तेः ॥
 त दे व नि ष्क लं ब्र ह्म नि वि क ल्पं नि र ञ्ज न
 म् ॥ त द्ब्र ह्मा ह मि ति जा त्वा ब्र ह्म स म्प द्य ते धु
 व म् ॥ ब्र ह्म वि न्दे ति श्रु तेः ॥ अ ना त्म (दु ग्ग मौ गा रो ण) वि चा र श्चे
 ति लो भा द यः प्र वृ त्त्वा र म्भे ध र्मा र्थ का म प्री त्य
 र्थे जी वः क रो ति ध र्म म र्था र्थ म र्थ च का म ना
 र्थे ते ना स्ति पु ण्य पा प क र्मो द्ध वः ॥ ये न स्व र्ग न र क

- Website page link is Page 66. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 05.10.2020

Page 48

Line wise sentence

48
1 मयं नो यद्वा निवृत्त्यादिसहजं विचा (सहज् विचारोण)
2 रश्च यत्तदुदुर्लभो जानासिकिं नूनमेवमजा (द्रगो जानोन)
3 नं भवेत्तस्मादज्ञानकष्टकल्पनामात्रं त्य (कल्पन्) (त्राव)
4 जेत् ॥ यस्मात्सर्वसाक्षीभूतमात्मप्रकाशं (नेश छयोय् तै)
5 यदनामयस्मत्यं सुलभतरः भवसि सर्व
6 दा निर्वृतिं कृत्वा ॥ इति सद्विवेकं सहजं वि
7 चारः भवति यदेव तत्तमोक्षश्च {तन्मोक्षश्च} तत्त्रतः {तद्व्रतः} ॥ जाग्रत्स्वप्नस्वषुप्त्या
8 दि प्रपञ्चं यत्प्रकाशते ॥ तद्ब्रह्माहमिति जा
9 त्वा सर्वबन्धै प्रमुच्यते ॥ इति कैवल्यश्रुतेः ॥
10 तदेव निष्कलं ब्रह्म निर्विकल्पं निरञ्जन
11 म् ॥ तद्ब्रह्माहमिति ज्ञात्वा ब्रह्म सम्पद्यते धु
12 वम् ॥ ब्रह्म विन्देति श्रुतेः ॥ अनात्म (दुग्गमौ गारोण्) विचारश्चे
13 ति लोभादयः प्रवृत्त्यारम्भे धर्मार्थकामप्रीत्य
14 र्थे जीवः करोति धर्ममर्थार्थमर्थं च कामना
15 र्थं तेनास्ति पुण्यपापकर्मोद्धवः ॥ येन स्वर्गं नरकं

सरणं यत् ॥ निवृत्त्यादिसहजं विचा (सहज् विचारोण)
रश्च यत्तदुदुर्लभो जानासिकिं नूनमेवमजा (द्रगो जानोन)
नं भवेत्तस्मादज्ञानकष्टकल्पनामात्रं त्य (कल्पन्) (त्राव)
जेत् ॥ यस्मात्सर्वसाक्षीभूतमात्मप्रकाशं (नेश छयोय् तै)
यदनामयस्मत्यं सुलभतरः भवसि सर्व
दा निर्वृतिं कृत्वा ॥ इति सद्विवेकं सहजं वि
चारः भवति यदेव तत्तमोक्षश्च {तन्मोक्षश्च} तत्त्रतः {तद्व्रतः} ॥ जाग्रत्स्वप्नस्वषुप्त्या
दि प्रपञ्चं यत्प्रकाशते ॥ तद्ब्रह्माहमिति जा
त्वा सर्वबन्धै प्रमुच्यते ॥ इति कैवल्यश्रुतेः ॥
तदेव निष्कलं ब्रह्म निर्विकल्पं निरञ्जन
म् ॥ तद्ब्रह्माहमिति ज्ञात्वा ब्रह्म सम्पद्यते धु
वम् ॥ ब्रह्म विन्देति श्रुतेः ॥ अनात्म (दुग्गमौ गारोण्) विचारश्चे
ति लोभादयः प्रवृत्त्यारम्भे धर्मार्थकामप्रीत्य
र्थे जीवः करोति धर्ममर्थार्थमर्थं च कामना
र्थं तेनास्ति पुण्यपापकर्मोद्धवः ॥ येन स्वर्गं नरकं

- Website page link is Page 66. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 05.10.2020

Page 48

Final version

सरणं यत् ॥ निवृत्यादिसहजं विचारश्च (सहज् विचारोण्) यत्तदुदुर्लभो जानासिकिं नूनमेवमज्ञानं
(द्रगो जानोन) भवेत्तस्मादज्ञानकष्टकल्पनामात्रं (कल्पन्) त्यजेत् ॥ (त्राव्)
यस्मात्सर्वसाक्षीभूतमात्मप्रकाशं (नेश छ्योय् तै) यदनामयस्सत्यं सुलभतरः भवसि सर्वदा निर्वृतिं
कृत्वा ॥ इति सद्विवेकं सहजं विचारः भवति यदेव तत्मोक्षश्च {तन्मोक्षश्च} तत्त्रतः {तद्व्रतः}
॥ जाग्रत्स्वप्नस्वषुप्त्यादि प्रपञ्चं यत्प्रकाशते ॥ तद्ब्रह्माहमिति ज्ञात्वा सर्वबन्धै प्रमुच्यते ॥
इति कैवल्यश्रुतेः ॥ तदेव निष्कलं ब्रह्म निर्विकल्पं निरञ्जनम् ॥ तद्ब्रह्माहमिति ज्ञात्वा ब्रह्म
सम्पद्यते ध्रुवम् ॥ ब्रह्म विन्देति श्रुतेः ॥ अनात्मविचारश्चेति (दुर् मौ गारोण्) लोभादयः
प्रवृत्त्यारम्भे धर्मार्थकामप्रीत्यर्थं जीवः करोति धर्ममर्थार्थमर्थं च कामनार्थं तेनास्ति
पुण्यपापकर्माद्धवः ॥ येन स्वर्गनरक...

- Website page link is Page 66. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 05.10.2020

Page 48

Notes

1. Line 48.07 - तत्मोक्षश्च should be तन्मोक्षश्च & तत्त्रतः should be तद्गतः

Website page link is Page 66



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 07.10.2020

Page 49

Consonant by consonant transliteration

49

- 1 येद्युनगवडि...^{कुटिलः} जुगडिसुयज्॥पवेत्
- 2 येद्युनगवडि...^{कुटिलः} जुगडिसुयज्॥पवेत्
- 3 ॥३डिभुतेः॥सुउगवम ॥भापुभापुभ
- 4 कभाभय...^{कुटिलः} नकुभनभाकुम॥डेनयुजे सु३५
- 5 ननिदत्रिभेक...^{कुटिलः} किकभरेणनेकभयः॥नायभ
- 6 टुज्॥केनभृ...^{कुटिलः} सुनभेनभुभेहृपुभुभि
- 7 टुमहु...^{कुटिलः} यमभितुवटुमिनिचडिखट
- 8 यंरेकमिभच...^{कुटिलः} रगउंमुटुतायात्रिभभा
- 9 ठिरुमुतेउरु...^{कुटिलः} उभठिवभिभुभाङ्गनय भुलन
- 10 सुउतुभुउभभ...^{कुटिलः} उभेकंभचगंभभकभभ
- 11 त्रिकंभंयैगभभ...^{कुटिलः} म्य॥यषभिवियकुषि
- 12 रानेगल्लंष्ट...^{कुटिलः} रेकंभंविपकामिहृङ्गुभुकि
- 13 रुवडिउरु...^{कुटिलः} नंभेहृरुःउवृउंउटुः॥भनसु
- 14 कुनंनयात्रिभु...^{कुटिलः} दंउरुनंउरुगेभिकुषंयष

यो र्पु न रा वृ ति स्सया त् कू टि लः दूर ग ति श्च य त् ॥ ए वं त्र
 ये {यी} ध र्म म नु प्र प णा {न्ना} ग ता ग तं का म का मा ल भ न्तेः
 ॥ इ ति स्मृ तेः ॥ अ त ए व श्रृ णु सा धु सा धु स
 का मा द य {यो} दूर प न्था ग म ना य म न र्थ का म ना मा कुरु ॥ ते न यु क्ते
 न नि ह न्ती मो हा दि का म क्रो ध लो भा द य इ
 त्य र्थः ॥ के ना स्त्या त्म ज्ञा न र्मे ना स्ति मो क्ष प्रा प्त मि
 त्या शङ्क्या ॥ य दा चि त वृ त्या दि नि र्वृ ति र्भ व त्य
 यं दे हा दि स र्व ज ग तां शू न्य तां {शू न्य स} या न्ति स मा
 धि रु च्य ते त दा ॥ त त्स मा धि {शू न्या} व सि ष्ठं सु ल भ मा त्मा नं य
 श्चै त न्य स्व रू पा मृ त र्मे कं प र मा त्मा स र्व गं प र मा का श स
 न्नि भं सं यो ग स मा श्र य {मे ले त् ग व} ॥ य था स्ति वि य द्व्यो म्नि
 ज ले च ज लं स्या दे कं सं वि प र्का दि त्या त्सा अ भि न्नं
 भ व ति त ज्ज्ञा नं मो क्ष दः त त्व त इ त्य र्थः ॥ म न श्चा
 ञ्च ल्यं ना या ति स्थै र्यं त ज्ज्ञा नं त द्यो गो स्ति क थं य था

- Website page link is Page 67. **Note:** Lines in blue font colour and in brackets are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. Red colour letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 07.10.2020

Page 49

Line wise sentence

49

1 येद्युनगवडि...
 2 येद्युनगवडि...
 3 ॥३३िभाउः॥सुउगवम...
 4 कभागय...
 5 ननिदत्रिभे...
 6 दृज्...
 7 दृम...
 8 दंमेदकिभच...
 9 ठिकमृतेउरु...
 10 सुउउउउभ...
 11 त्रिकंभयैगभ...
 12 रानेग...
 13 रुवडिउ...
 14 सुंनंनयाडिभै...

योरुपुनरावृत्तिस्स्यात् कूटिलः दूरगतिश्च यत्॥ एवं त्र-
 येधर्ममनुप्रपणा {यीधर्ममनुप्रपन्ना} गतागतं कामकामा लभन्तेः
 ॥ इति स्मृतेः॥ अत एव शृणु साधु साधु स-
 कामादयःनर्थकामना {कामादयोऽनर्थकामना} मा कुरु॥ तेन युक्ते {दूरपन्था गमनायम}
 - न निहन्ति मोहादिकामक्रोधलोभादय इ-
 -त्यर्थः॥ केनास्त्यात्मज्ञानमेनास्ति मोक्षप्राप्तमि
 त्याशङ्क्या॥ यदा चित्तवृत्त्यादिनिर्वृत्तिर्भवत्य
 यं देहादिसर्वजगतां शून्यतां (शून्यस) यान्ति समा
 -धिरुच्यते तदा॥ तत्समाधि (शून्या) वसिष्ठं सुलभमात्मानं य-
 श्चैतन्यस्वरूपामृतमेकं परमात्मा सर्वगं परमाकाशस-
 न्निभं संयोगसमाश्रय (मैलेत् गव)॥ यथास्ति वियद्व्योम्नि
 जले च जलं स्यादेकं संविपर्कादित्यात्सा अभिन्नं
 भवति तज्ज्ञानं मोक्षदः तत्त्वत इत्यर्थः॥ मनश्चा
 ञ्चल्यं नायाति स्थैर्यं तज्ज्ञानं तद्योगोऽस्ति कथं यथा

- Website page link is Page 67. **Note:** Lines in blue font colour and in brackets are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. Red colour letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 07.10.2020

Page 49

Final version

[येन स्वर्गनरक-] योर्पुनरावृत्तिस्स्यात् कूटिलः दूरगतिश्च यत्॥ एवं त्रयेधर्ममनुप्रपणा
{त्रयीधर्ममनुप्रपन्ना} गतागतं कामकामा लभन्तेः ॥ इति स्मृतेः॥ अत एव शृणु साधु साधु
सकामादयःनर्थकामना {सकामादयोऽनर्थकामना} मा कुरु॥ तेन युक्तेन दूरपन्था गमनायम
निहन्ति मोहादिकामक्रोधलोभादय इत्यर्थः॥ केनास्त्यात्मज्ञानमेनास्ति मोक्षप्राप्तमित्याशङ्क्या॥
यदा चित्तवृत्त्यादिनिर्वृत्तिर्भवत्ययं देहादिसर्वजगतां शून्यतां (शून्यसु) यान्ति समाधिरुच्यते तदा॥
तत्समाधि (शून्या) वसिष्ठं सुलभमात्मानं यश्चैतन्यस्वरूपामृतमेकं परमात्मा सर्वगं
परमाकाशसन्निभं संयोगसमाश्रय (मैत्रेत् गव)॥ यथास्ति वियद्व्योम्नि जले च जलं स्यादेकं
संविपर्कादित्यात्सा अभिन्नं भवति तज्ज्ञानं मोक्षदः तत्त्वत इत्यर्थः॥ मनश्चाञ्चल्यं नायाति
स्थैर्यं तज्ज्ञानं तद्योगोऽस्ति कथं यथा

- Website page link is Page 67. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 07.10.2020

Page 49

Notes

1. Line **49.02** – the word should be **त्रयीधर्ममनुप्रपत्रा**
2. Line **49.04** – the word should be **सकामादयोऽनर्थकामना**
3. Line 49.12 - the words can be – **अभिन्नं भवति**, if the letters **अभिन्नं** is not included it can be **आदित्यात्मा भवति**

Website page link is Page 67



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 10.10.2020

Page 50

Consonant by consonant transliteration

50

- 1 श्रुतेन धुपुन रुय विभिडेभभाधि
- 2 ~~भुटेनु द्वि॥३॥~~ भकरमारुनामन्नाभि
- 3 मलेभामनभापुमभिलेभेभमारुनभा
- 4 एना॥भेयलिहे०भनेमथानभाभरिया
- 5 भेयोडेकुनकिन्हा॥३०॥यषामन्नेविभ
- 6 लारुडिभचभाहिंकेरुयुत्तभनियुत्त
- 7 भुमङ्गानं ऊपानं नकरेडिविकामंन
- 8 धिमकेसभा॥उषभभाधिसिडुनिडल
- 9 डुदभुत्तलकेकेभनगदिउः॥धुत्त
- 10 डुवमाडुयकुःप्यडेकाधिभुत्रैवकरेभि
- 11 द्युःनैवमेकः॥यभुत्रिभुलिगिडीदि
- 12 येदंउभुत्रिभुलेलीपवलिडेदभमंसव
- 13 भा॥उतेनयुजेनरुहाष्टंमिचयमुत्तुयभा
- 14 इनेयउरुनेनबु॥यषकरुमिडुदि

स्ति ते न प्राप्ते न दया नि सितं ममापि
 स्ख {स्फु} टं भृ हि ॥ ३० ॥ म कर स् ज न् म ल् मि
 च लो म् म न स् अ द मि ल भो म स् जा न स्
 जा न् ॥ सो य लि द्यो ठो म् ने श पा न स् सौ र य्
 सो य् तै भु ना कि न्ह ॥ ३१ ॥ य था द शो निर् म (म क र स) (ज न्)
 ला भा ति स र्व सा क्षिं भे द शू न्य म नि ष्ट इ
 ष्ट स इग ता नां रू पा नां {णा} न क रो ति वि का सं ना
 पि स इको च म् ॥ त था म मा पि चि त निर् म ल (म ल् सि च लो म् मु न स)
 ते हा मु त्र फ ल भो गे का म ना र हि तः ॥ प्रा र
 ब्ध व शा त्सु ख दुः ख भो क्ता पि स्या न्नै व क रो मि
 ह र्षः नै व शो कः ॥ य स्मा न्नि श्च लो जि ती {ते} न्द्रि
 यो हं त स्मा न्नि स इगो ती {ले} प व र्जि तो {तः} ह म सं श य
 म् ॥ ते न (अ द मि) यु क्ते न जा त्वा ख्यं (जा न स) चि न्म य स्व रू प मा
 त्मा नं (जा न) य त् ज्ञा नं ल ब्ध्वा (ल भो म्) ॥ य था क दा चि त्क शि च

- Website page link is Page 68. **Note:** Lines in blue font colour and in brackets are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. Red colour letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 10.10.2020

Page 50

Line wise sentence

50
1 श्रुतेन ध्यायेत् नमस्तस्मै विभित्तं भवति
2 अ० ए० क० द्वि० ३० ॥ मकरमण्डलं नमनामि
3 मन्त्रेण भवति नमस्तस्मै विभित्तं भवति
4 एना० मे यन्निदृ० भवेत्तस्य नमस्तस्मै
5 मे योऽतै कुनकिन् ॥ ३० ॥ यथा मन्त्रे विभित्तं
6 लान्ति भवति मन्त्रेण मन्त्रेण मन्त्रेण
7 इमं ज्ञानं कृपा नं न करेति विकसं न
8 यि मन्त्रेण मन्त्रेण मन्त्रेण मन्त्रेण
9 देवताभ्युदयनं गोकभनं गदिः ॥ ५० ॥
10 इवमन्त्रेण मन्त्रेण मन्त्रेण मन्त्रेण
11 दयः नैव मेकः ॥ यन्मन्त्रेण मन्त्रेण मन्त्रेण
12 येन मन्त्रेण मन्त्रेण मन्त्रेण मन्त्रेण
13 मन्त्रेण मन्त्रेण मन्त्रेण मन्त्रेण
14 मन्त्रेण मन्त्रेण मन्त्रेण मन्त्रेण

स्ति तेन प्राप्तेन दयानिसितं ममापि
स्खटं {स्फुटं} भृहि ॥ ३० ॥ मकरस् जन् मल् मि
चलोम् मनस् अदमि लभोमस् जानस्
जान् ॥ सो यलि द्योठोम् नेश पानस् सौरय
सोय् तैभुना किन्ह ॥ ३१ ॥ यथादर्शो निर्म (मकरस) (जन्)
लाभाति सर्वसाक्षिं भेदशून्यमनिष्ट इ
ष्टसङ्गतानां रूपानां {रूपाणां} न करोति विकासं ना
पि सङ्कोचम् ॥ तथा ममापि (मल् सिचलोम् मुनस्) चितनिर्मल
तेहामुत्रफलभोगे कामनारहितः ॥ प्रार
ब्धवशात्सुखदुःख भोक्तापि स्यान्नैव करोमि
हर्षः नैव शोकः ॥ यस्मान्निश्चलो जितीन्द्रि {जितेन्द्रि}
योऽहं तस्मान्निश्चलो लीपवर्जितो {लेपवर्जितः} हमसंशय
म् ॥ तेन (अद मि) युक्ते न (जानस्) ज्ञात्वाख्यं चिन्मयस्वरूपमा
त्मानं (जान लभोम्) यतज्ज्ञानं लब्ध्वा ॥ यथा कदाचित्कश्चि

- Website page link is Page 68. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 10.10.2020

Page 50

Final version

स्ति तेन प्राप्तेन दयानिसितं ममापि **स्खटं** {स्फुटं} भृहि ॥३०॥ मकरस् जन् मल् मिचलोम्,
मनस् अद मि लभोमस् जानस् जान्, सो यलि द्योठोम् नेश पानस् , सौर्य् सोय् तै भु ना
किन्ह ॥३१॥

यथादर्शो (मकरस् जन्) निर्मलाभाति सर्वसाक्षिं भेदशून्यमनिष्ट इष्टसङ्गतानां **रूपानां** {रूपाणां}
न करोति विकासं नापि सङ्कोचम्॥ तथा ममापि (मल् मिचलोम् मनस्)
चित्तनिर्मलतेहामुत्रफलभोगे कामनारहितः॥ प्रारब्धवशात्सुखदुःखभोक्तापि स्यान्नैव करोमि हर्षः
नैव शोकः॥ यस्मान्निश्चलो **जितीन्द्रियोऽहं** {जितेन्द्रियोऽहं} तस्मान्निःसङ्गो **लीपवर्जितोऽ**
{लेपवर्जितः} हमसंशयम् ॥ (अद मि) तेन युक्ते न (जानस्) ज्ञात्वाख्यं चिन्मयस्वरूपमात्मानं
यत्तज्ज्ञानं (जान लभोम्) लब्ध्वा॥ यथा कदाचित्कश्चि

- Website page link is Page 68. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 10.10.2020

Page 50

Notes

1. Line **50.02** – the word **स्खटं भृहि** should be **स्फुटं, भृति/ भृहि**
2. Line **50.07** – the word **रूपानां** should be **रूपाणाम्**
3. Line **50.11** – the word **जितीन्द्रि** should be **जितेन्द्रियो**
4. Line **50.12** – the word **लीपवर्जितोऽ** should be **लेपवर्जितः**

Website page link is Page 68



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 12.10.2020

Page 51

Consonant by consonant transliteration

51

1 कृत्वाः शुभे मरिचकवन्नेगी पूर्वैरेगसुभ
2 शुं कुतः मरिचकसुता यस्मात् कुतः कुतः सुतः
3 धूम्रकमयंसुता मं ह्युता न निभनिभन्
4 कुतः ये सुवेयिषिथभान्नेवेयसुता सुतः सुतः
5 सुते उल्लुनयुक् समभदि उमेकसुता सुता सुता
6 सुते उमेवमचनिष्ठा कर्म सुतः सुतः सुतः
7 सुतः सुतः सुतः सुतः सुतः सुतः सुतः सुतः
8 विरुतिकेवलम् ॥ यथा सुतः सुतः सुतः सुतः
9 यथा सुतः सुतः सुतः सुतः सुतः सुतः सुतः सुतः
10 किष्किना सुतः सुतः सुतः सुतः सुतः सुतः सुतः सुतः
11 वेयसा सुतः सुतः सुतः सुतः सुतः सुतः सुतः सुतः
12 सुतः सुतः सुतः सुतः सुतः सुतः सुतः सुतः सुतः
13 सुतः सुतः सुतः सुतः सुतः सुतः सुतः सुतः सुतः
14 सुतः सुतः सुतः सुतः सुतः सुतः सुतः सुतः सुतः

द्रा जः स्व प्ने द रि द्र भा व भो गी प्र बो धे रा ज्य मा
पुं कु तः द रि द्र ता भू ता ॥ (य लि) य दा द्भु तं त (सो) त त्वं द
ष्टो स्म्य (द्यो ठ म) ह म यं जा ता सं जि ता त्म नि म नि सा क्षा (ने श पा न स)
त्का रो यो जे यो स्ति प र मा त्म दे वो य श्चै त न्य रू पो
च्य ते त ज्जा न प्र का श स हि त में का भू त्वा ॥ त दा
अ द्वाै तं (सा रो य् सो य् तै)। सै व स र्वे नि र्भ रा का र च तु र्द श भु व नः
ब्र ह्मा दि शे श ना ग प र्य न्तः स्था व र ज ङ्ग मं
वि भा ति के व ल म् ॥ य था कु म्भ श रा वा दि
पा त्रे षु भे दे षु व्या प के का मृ ति का ॥ ना हं (भु ना)
(कि न्ह) कि ज्चि द ना त्मा भि मा नी व्य क्तं भ वे द्वा न्ध्या पु
त्रो य था इ त्य र्थः ॥ न नु त त्प रं ध र्म क थं स्या त्प्रा
प्त व्यं रा त्री षु जा ग्र ते षु वा ती र्थ स्ना ना दि ग म ने
षु वा क थ म स्मि न्प रि ग्र हे षु सं सा रे षु नि स्स
न्दे हो त ज्जा ना मि इ त्या श ङ्क्य ॥ ३१ ॥ कि न्ह

- Website page link is Page 69. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 12.10.2020

Page 51

Line wise sentence

51

1 श्रुतः शुभे मरिचुः कवन्तुगी पूर्वोत्तराभ
2 शुं कुतः मरिचुः कुतः यत् कुतः कुतः कुतः
3 शुं कुतः मरिचुः कुतः यत् कुतः कुतः कुतः
4 कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः
5 कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः
6 कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः
7 कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः
8 कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः
9 कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः
10 कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः
11 कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः
12 कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः
13 कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः
14 कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः कुतः

द्राजः स्वप्ने दरिद्र भावभोगी प्रबोधे राज्यमा
प्तं कुतः दरिद्रता भूता ॥ (यलि) यदाद्भुतं तत्तत्वं (सो) दृ
ष्टो स्म्य (द्योठम्) हमयं ज्ञाता संज्ञितात्मनि मनि साक्षा (नेश पानस्)
त्कारो यो ज्ञे योस्ति परमात्मदेवो यश्चैतन्यरूपो
ऽच्यते तज्ज्ञान प्रकाशसहितमेका भूत्वा ॥ तदा
अद्वैतं (सारोय् सोयत्)। सैव सर्वं निर्भराकार चतुर्दशभुवनः
ब्रह्मादिशेशनागपर्यन्तः स्थावरजङ्गमं
विभाति केवलम् ॥ यथा कुम्भ शरावादि
पात्रेषु भेदेषु व्यापकेका मृत्तिका ॥ नाहं (भुना)
(किन्ह) किञ्चिदनात्माभिमानि व्यक्तं भवेद्वन्ध्यापु
त्रो यथा इत्यर्थः ॥ ननु तत्परं धर्मं कथं स्यात्प्रा
प्तव्यं रात्रीषु जाग्रतेषु वा तीर्थस्नानादिगमने
षुवा कथमस्मिन्परिग्रहेषु संसारेषु निस्स
न्देहो तज्ज्ञानामि इत्याशङ्क्य ॥ ३१ ॥ किन्ह

- Website page link is Page 69. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 12.10.2020

Page 51

Final version

द्राज्ञः स्वप्ने दरिद्रभावभोगी प्रबोधे राज्यमाप्तं कुतः दरिद्रता भूता॥ (यलि) यदाद्भुतं तत्तत्त्वं (सो) दृष्टोऽस्म्यहमयं (द्योठम्) ज्ञाता संज्ञितात्मनि मनि (नेश पानस्) साक्षात्कारो यो ज्ञेयोऽस्ति परमात्मदेवो यश्चैतन्यरूपोऽच्यते तज्ज्ञानप्रकाशसहितमेका भूत्वा॥ तदा अद्वैतं (सारोय् सोय् तै) सैव सर्वं निर्भराकार चतुर्दशभुवनः ब्रह्मादिशेशनागपर्यन्तः स्थावरजङ्गमं विभाति केवलम्॥ यथा कुम्भशरावादिपात्रेषु भेदेषु व्यापकेका मृत्तिका॥ नाहं (भुना) (किन्ह) किञ्चिदनात्माभिमानी व्यक्तं भवेद्वन्ध्यापुत्रो यथा इत्यर्थः॥ ननु तत्परं धर्मं कथं स्यात्प्राप्तव्यं रात्रीषु जाग्रतेषु वा तीर्थस्नानादिगमनेऽपुवा कथमस्मिन्परिग्रहेषु संसारेषु निस्सन्देहो तज्जानामि इत्याशङ्क्य॥३१॥ किन्ह

- Website page link is Page 69. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 12.10.2020

Page 51

Notes

1. Line **51.03** – the word **मनि** has been repeated and not required

Website page link is Page 69



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 14.10.2020

Page 52

Consonant by consonant transliteration

52

1 ति छये नि न्द्रि ह ते वो दी कि ज्च न् वो दि न् नि स
 2 र्पि य ॥ कि न्ह छये य स्ना न् क रे त् अ पो ते
 3 कि न्ह छये य ॥ ग्र ह भ जे त् क रा ण् क्रि य ॥
 4 ३२ ॥ के चि त्सा धुः (कि न्ह छये य) ब्र ह्म वि दुः {दः} स्युः नि द्रा लु (नि न्द्र ह ते)
 5 रि व ल क्ष ते ते अ न्त रा त्म भा वा न्नि सङ्गो नि र
 6 ज्ज नः (वो दे) प र मा त्म यो ग सं यु क्ताः ॥ अ प रे जा ग्र (कि ज्च न्)
 7 ते वा स्व प्ने म नो मा या म ये दु र्ग ते सं त प्ताः ह
 8 र्ष वि शा द (वो दि न) श्च कु र्व न्त्य ज्ञा न मो हि ता ज नाः
 9 श्री श ड्क र ना म स्म र णे ये (नि स र्पि य) वि स्म र ताः ॥ ती र्थ
 10 स्ना तो पि (स्ना न् क रि त्) के चि द न्त रा त्म त्वे न पा पा न्वि ष या
 11 न्स मा श्र ये न्नै वं (अ पो ते) शु चि र्भ व न्ति ते ॥ ज ल स्या न्त
 12 र्ग ता नां म त्स्या नां क दा चि ज्ज ल तृ ष्णा नो प
 13 ह र ति य था ॥ अ प रे स स र्व (ग्र ह भ जे त्) प रि ग्र हेः कु
 14 र्व न्त्य स क्ता त्म ना स ड्गा वि व जिं ता स्त द र्थ क र्मा

ति छये नि न्द्रि ह ते वो दी कि ज्च न् वो दि न् नि स
 र्पि य ॥ कि न्ह छये य स्ना न् क रे त् अ पो ते
 कि न्ह छये य ॥ ग्र ह भ जे त् क रा ण् क्रि य ॥
 ३२ ॥ के चि त्सा धुः (कि न्ह छये य) ब्र ह्म वि दुः {दः} स्युः नि द्रा लु (नि न्द्र ह ते)
 रि व ल क्ष ते ते अ न्त रा त्म भा वा न्नि सङ्गो नि र
 ज्ज नः (वो दे) प र मा त्म यो ग सं यु क्ताः ॥ अ प रे जा ग्र (कि ज्च न्)
 ते वा स्व प्ने म नो मा या म ये दु र्ग ते सं त प्ताः ह
 र्ष वि शा द (वो दि न) श्च कु र्व न्त्य ज्ञा न मो हि ता ज नाः
 श्री श ड्क र ना म स्म र णे ये (नि स र्पि य) वि स्म र ताः ॥ ती र्थ
 स्ना तो पि (स्ना न् क रि त्) के चि द न्त रा त्म त्वे न पा पा न्वि ष या
 न्स मा श्र ये न्नै वं (अ पो ते) शु चि र्भ व न्ति ते ॥ ज ल स्या न्त
 र्ग ता नां म त्स्या नां क दा चि ज्ज ल तृ ष्णा नो प
 ह र ति य था ॥ अ प रे स स र्व (ग्र ह भ जे त्) प रि ग्र हेः कु
 र्व न्त्य स क्ता त्म ना स ड्गा वि व जिं ता स्त द र्थ क र्मा

- Website page link is Page 70. **Note:** Lines in blue font colour and in brackets are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. Red colour letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 14.10.2020

Page 52

Line wise sentence

52

1 विद्धे निद्रि कते वैमीकि कुन वैदिना विथ
2 गपिय ॥ कि द्वा हे य धाना करे ज प्रये उ
3 कि द्वा कृया गदा कले ग क ग रिया ॥
4 ३३ ॥ के सि द्वा यः वृद्ध विदुः भूः निद्रि
5 विव न ह ते उ उ उ उ ग र्वा वि भू नि
6 क्ल नः पर भा द्वा य ग सं यु क्तः ॥ प्र यो र्ग
7 उ व भू य भ नै भा या भ ये उ जे उ भं उ थुः द
8 धं वि म र्ग सु कु व तृ ल न भे दि उ र्ग नः
9 श्री म ह्वा न भ भ र्ग ये वि भ र्ग उः ॥ ग्री उ
10 भ उ थि के मि र्ग उ ग र्ग ह न थ थ वि थ य
11 क्क भ म ये वै व मु मि र्ग व डि उ ॥ र्ग ल भू उ
12 न उ नं भ कृ नं क र्ग मि र्ग ल र्ग कु नै थ
13 द र्ग डि य व ॥ प्र यो र्ग म च थ र्गि र्ग देः कु
14 च तृ भ कृ नं म र्ग व ल्ति उ थु र्ग क र्ग

ति छ्ये निन्द्रि हते वोदी किञ्चन् वोदिन् निस
र् पिय ॥ किन्ह छ्येय् स्नान् करेत् अपोते
किन्ह छ्येय् ॥ ग्रह भजेत् कराण् क्रिय् ॥
३२ ॥ के चित्साधुः (किन्ह छ्येय) ब्रह्मविदुः {ब्रह्मविदः} स्युः निद्रालु (निन्द्र हते)
रिवलक्षते ते अन्तरात्मभावान्निसङ्गो निर
ञ्जनः (वोदे) परमात्मयोगसंयुक्ताः ॥ अपरे जाग्र (किञ्चन्)
ते वा स्वप्ने मनोमायामये दुर्गते संतप्ताः ह
र्ष विशादश्च (वोदिन्) कुर्वन्त्यज्ञानमोहिता जनाः
श्री शङ्करनामस्मरणे ये (निसर् पिय) विस्मरताः ॥ तीर्थ
स्नातोपि (स्नान् करित्) केचिदन्तरात्मत्वेन पापान्विषया
न्समाश्रयेन्नैवं (अपोते) शुचिर्भवन्ति ते ॥ जलस्यान्त
र्गतानां मत्स्यानां कदाचिज्जलतृष्णानोप
हरति यथा ॥ अपरे ससर्वपरिग्रहेः (ग्रह भजेत्) कु
र्वन्त्यसक्तात्मना सङ्गाविवर्जिता स्तदर्थं कर्मा

- Website page link is Page 70. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 14.10.2020

Page 52

Final version

ति छ्ये निन्द्रि हते वोदी किञ्चन् वोदिन् निसर् पिय॥ किन्ह छ्येय् स्नान् करेत् अपोते
किन्ह छ्येय्॥ ग्रह भजेत् कराण् क्रिय्॥३२॥ केचित्साधुः (किन्ह छ्येय्) ब्रह्मविदुः {ब्रह्मविदः}
स्युः निद्रालुरिवलक्षते (निन्द्र हते) ते अन्तरात्मभावान्निसङ्गो निरञ्जनः (वोदे)
परमात्मयोगसंयुक्ताः॥ अपरे जाग्रते (किञ्चन्) वा स्वप्ने मनोमायामये दुर्गते संतप्ताः हर्ष
विशादश्च (वोदिन्) कुर्वन्त्यज्ञानमोहिता जनाः श्रीशङ्करनामस्मरणे ये (निसर् पिय)
विस्मरताः॥ तीर्थस्नातोऽपि (स्नान् करित्) केचिदन्तरात्मत्वेन पापान्विषयान्समाश्रयेन्नैवं
(अपोते) शुचिर्भवन्ति ते॥ जलस्यान्तर्गतानां मत्स्यानां कदाचिज्जलतृष्णानोपहरति यथा॥
अपरे (ग्रह भजेत्) ससर्वपरिग्रहेः कुर्वन्त्यसक्तात्मना सङ्गाविवर्जितास्तदर्थं कर्मा

- Website page link is Page 70. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

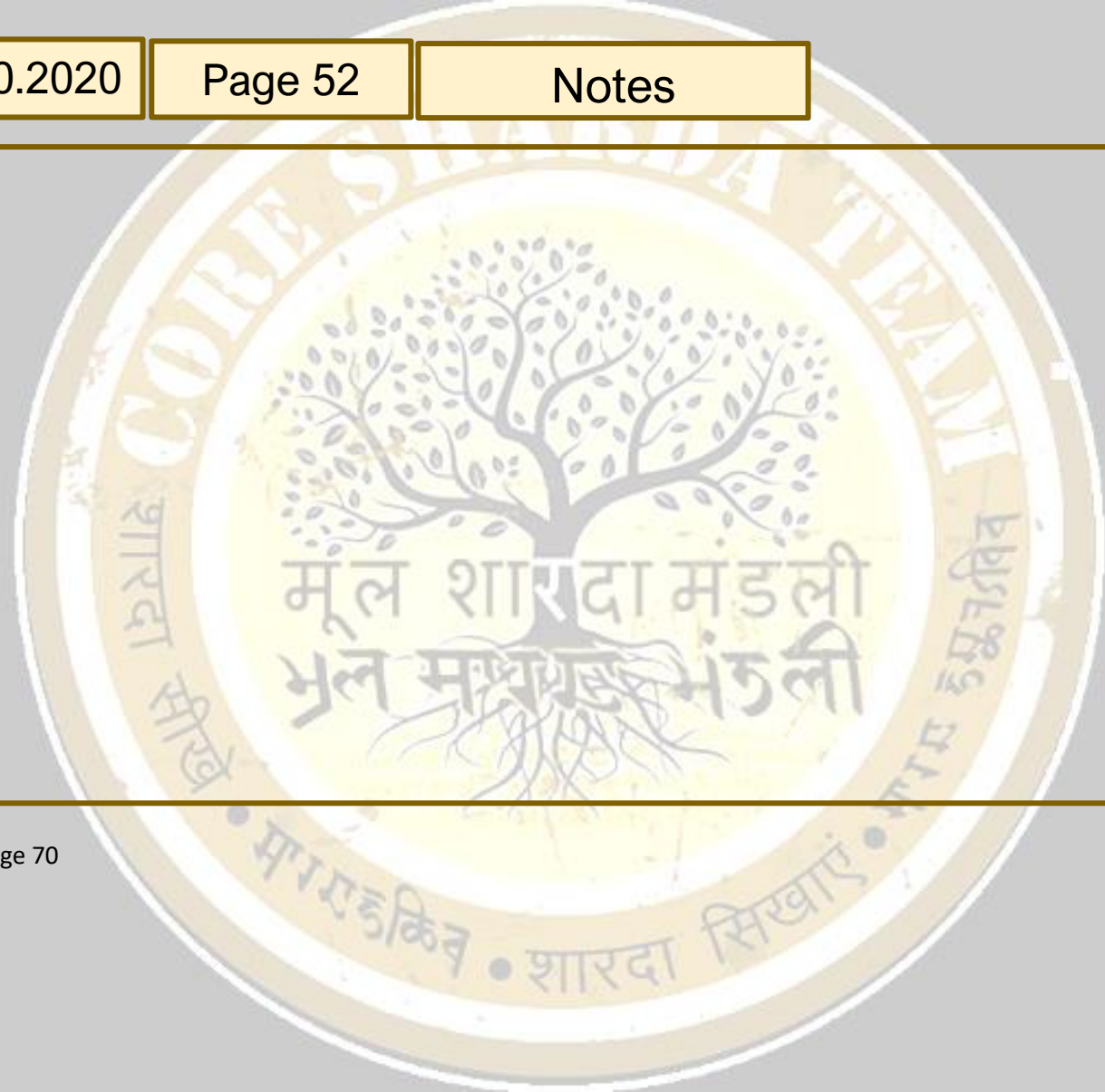
Date – 14.10.2020

Page 52

Notes

1. No notes

Website page link is Page 70





Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 15.10.2020

Page 53

Consonant by consonant transliteration

53

क्रिया
 1 लिभद्विगुणानीनियसुमनउपश्रीज्ज
 2 दिंभाथुचकंमचक्रुउरुयभयः३३
 3 ॥उद्वेयगभाज्जुयंवादिंवाहृउरेक
 4 मिची०कमिउमेसुिउंकेनउये॥वले
 5 ॥उमिउजयमिउमुग्भुयभाउंवाः
 6 इमहू॥१३॥कुममभ०लायभाउव
 7 भावहृीनभिकपवनामुनरुउगवा॥
 8 मयभाकल्नचुतुःमहृीभुयंवेव
 9 उमुज्ज॥कमा॥३३॥यषारुवडिः
 10 कुममभमपडिःकुममकुमभुनानि
 11 एकेरुवद्विडिथुवेरुडिहृडिधः॥उवे
 12 वातुःमिषागेकुममकुने॥कुम
 13 ममुदभ०लाकगेविरुउमभिमवे
 14 उमेकेरुवडिनभिकं कुग्गउगउ,
 15 नरुउःधु॥पृमुदवः॥मउनिड

णि स (क्रि य) द्वि चा रा दी नि य ज दा न त प स्ती र्थ अ
 हिं सा पू र्व कं स र्व भू त द या म य इ त्य र्थः
 ॥ त त्वं प र मा र्थ स्व रू पं बा हिं वा भ्य न्तरं क
 स्मि न्पी ठे क स्मि न्दे शे स्थि तं के न रू पे ण व र्ण
 ण त स्मि न्न र्च या मि भा स्कर मु प मा तं वा इ
 त्या श इक्या ॥ २३ ॥ द्वा द श म ण्ड ल् य स् दे व
 स् थ ज्यी ना सि क प व न् अ ना ह त र व् ॥
 स य स् क ल्प न् अ न्तः च ज्यी स्व यं दे व्
 तै अ र्च ण् क स् ॥ ३३ ॥ य था बा ह्य वृ तिः
 द्वा द श मा स प तिः द्वा द शा र्क म ण्ड ला नि
 ए को भ व त्वि ति प्र व द न्ति ज्यो ति षः ॥ त थै
 वा न्तः शि खा ग्रे द्वा द शा इगु लौ ॥ द्वा द (द्वा द श)
 श सूर्य म ण्ड ला (म ण्ड ल) का रो वि भा त्य सौ स दे व
 स्त दे को भ व ति (ना सि क) ना सि का द्वा र ग ता ग ते (प व न्)
 न ह तः (अ ना ह त र व्) प्रा णा ख्यो म् यो यः ॥ ए ता नि द्वा

- Website page link is Page 71. **Note:** Lines in blue font colour and in brackets are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. Red colour letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 15.10.2020

Page 53

Line wise sentence

53

1 लि मद्रिगारमीनियसुमनउपभूजुच
 2 दिभापुचकंनचरुउरुयभयः३३
 3 ॥उद्वयभजुमुजुयंवादिंवाहृउरुंक
 4 मिदी०कमिरेमेसिउंकेनउय॥बले
 5 ॥उमि३३यभिरुभुभुयभाउंका३
 6 इमडू॥१३॥इरुमभ०लायभादेव
 7 भावहीनभिकथवनापुनरुउरवा॥
 8 मयभाकल्पनापुतुःमहीमुयंरेवा
 9 उेमुन॥कमा॥३३॥यषारुवदिः
 10 इरुमभभपदिःइरुमभुमभुननि
 11 एकेरुवदिदिधुवैरुदिहेदिधः॥उवे
 12 वातुःमिागैइरुमभुने॥इरुम
 13 मभुदभभुनाकगेरुकाउंभभरेव
 14 उदेकेरुवदिनभिकइरुगउगउ
 15 नरुउःधु॥प्रे३३दय॥रुउनिइ

णि सद्विचारादीनि (क्रिय) यज्ञदान तपस्तीर्थ अ
 हिंसापूर्वकं सर्वभूतदयामय इत्यर्थः
 ॥ तत्त्वं परमार्थ स्वरूपं बाहिं वाभ्यन्तरं क
 स्मिन् पीठे कस्मिन् देशे स्थितं केन रूपेण वर्णे
 ण तस्मिन्नर्चयामि भास्करमुपमातं वा इ
 त्याशङ्क्या ॥ २३ ॥ द्वादश मण्डल् यस् देव
 स् थज्यीनासिक पवन् अनाहत र्व् ॥
 स यस् कल्पन् अन्तः चज्यी स्वयं देव्
 तै अर्चण् कस् ॥ ३३ ॥ यथा बाह्यवृत्तिः
 द्वादशमासपतिः द्वादशार्कमण्डलानि
 एको भवत्विति प्रव दन्ति ज्योतिषः ॥ तथै
 वान्तः शिखाग्रे द्वादशाङ्गुलौ ॥ द्वाद (द्वादश)
 श सूर्यमण्डलाकारो (मण्डल) विभात्यसौ स देव
 स्तदेको भवति (नासिक) नासिकाद्वारगता गते (पवन्)

- Website page link is Page 71. **Note:** Lines in blue font colour and in brackets are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. Red colour letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 15.10.2020

Page 53

Final version

णि सद्विचारादीनि (क्रिय) यज्ञदानतपस्तीर्थ अहिंसापूर्वकं सर्वभूतदयामय इत्यर्थः ॥ तत्त्वं परमार्थस्वरूपं बाहिं वाभ्यन्तरं कस्मिन् पीठे कस्मिन् देशे स्थितं केन रूपेण वर्णेण तस्मिन्नर्चयामि भास्करमुपमातं वा इत्याशङ्कया ॥ २३ ॥ द्वादश मण्डल् यस् देवस् थज्यीनासिक पवन् अनाहत रव् ॥ स यस् कल्पन् अन्तः चज्यी स्वयं देव् तै अर्चण् कस् ॥ ३३ ॥ यथा बाह्यवृत्तिः द्वादशमासपत्तिः द्वादशार्कमण्डलानि एको भवत्विति प्रव दन्ति ज्योतिषः ॥ तथैवान्तः शिखाग्रे द्वादशाङ्गुलौ ॥ द्वादश (द्वादश) सूर्यमण्डलाकारो (मण्डल) विभात्यसौ स देवस्तदेको भवति (नासिक) नासिकाद्वारगता गते (पवन्)

- Website page link is Page 71. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 15.10.2020

Page 53

Notes

1. No notes

Website page link is Page 71



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 19.10.2020

Page 54

Consonant by consonant transliteration

54

1 म म भु द भ ङु लानिये थ र भ ङु दे वं र भि
 2 कु कु य नि र ङु ने थि म म भ ने उ ल्ल भ डि
 3 ॥ नि यि ग्रे द्वा द शा इ गु ल्ये स्थि तं सू क्ष्म त नुं
 4 वि भू म् ॥ इ ति स्मृ तेः ॥ अ त ए व चि त्स्व रू
 5 प म न/न्त स्त मु द य र हि तः के व लं त त्स र्व ग तं
 6 शु त्त र व म व पु वृ मु उ उः ॥ सु उ म र्क
 7 क ल्प न् क ल्प न् यि म णि क य म् रू रू
 8 या प्रु ये व ल य म् नि ज्ञ त न य णि थु
 9 न र त्त र म् ॥ स ए वै को स्व यं प र मा त्मा (दे व् त) दे
 10 वे न त्त र म् क म ये उ त्त र्क ये यः ॥ उ
 11 शु ल्प मु र य ग णि म र्क ङु च वि
 12 भ वे म क र्क ङु क र्क र त्त र म् रू रू
 13 उ र्क क ये म र्क रू उः ॥ ये र व पु रू उ
 14 रू रू मु रू उ व थ र यः ॥ य र्क व थ र

द श सूर्य म षड ला नि यं (य स् दे व स) प र मा त्म दे वं त श्चि
 त्स्व रू प नि र ङ्ग ने पी ठे (थ ज्यी) म दा स ने उ ल्ल स न्ति
 ॥ शि खा ग्रे द्वा द शा इ गु ल्ये स्थि तं सू क्ष्म त नुं
 वि भू म् ॥ इ ति स्मृ तेः ॥ अ त ए व चि त्स्व रू
 प म न/न्त स्त मु द य र हि तः के व लं त त्स र्व ग तं
 स्वा नु भ वा द वा प्त व्य स्त त्व तः ॥ द्वै त स न्दे
 ह ना म (क ल्प न्) क ल्प ना पि शा चि का य स्य (स य स) (अ न्तः) ह द
 या ख्य दे वा ल य स्य नि र्ग ता ना या ति (च ज्यी) पु
 न रा न्त र म् ॥ स ए वै को स्व यं प र मा त्मा (दे व् त) दे
 वो न न्त स्व प्र का श चै त न्य रू पो यः ॥ तं
 प्रा णे श्व रं या गा दि म र्च णां कु र्व न्ति
 स र्वे स (अ र्च ण् क स) क स्या र्च णा क रो त्य न न्त पू र्णा ह
 न्ता त्म का यो अ स इ गो भू तः ॥ ये रे व पू ज्य ते
 द्र व्यै स्त र्प्य ते वा प रा प रः ॥ य श्चै व पू ज

- Website page link is Page 72. **Note:** Lines in blue font colour and in brackets are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. Red colour letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 19.10.2020

Page 54

Line wise sentence

54

1 ममभुद्मं लानियेयभभुद्मेवं उग्रि
2 कुडुथनिरुक्लनेथी मरुभने उल्लभति
3 ॥मिाये सुमसा कुलुभिउंभुद् उं
4 विडुभा ॥ उंभु उं ॥ सुउमवमिडुउ
5 भमनुभुभुयगदिउः केवलं उडुचगउं
6 भुनरुवामवपुवुडुउः ॥ सुउमउं
7 कल्पना मयमा सुउः
8 दनभकल्प नयिमसिकयभुडु म
9 यापुये वलयसुनिजउ नयातिपु
10 नगत्रुम ॥ भवैकेभुयं यभभुद्मे
11 वेननुभुपु कमेउ उं उयेयः ॥ उं
12 भवेभकसु सु कउरउनुपुलुद
13 उडुकयेभुभुडु उः ॥ येरेवपुलुउं
14 सुडेभुडु उेवपु यः ॥ यशैवपुलु

दशसूर्यमण्डलानि यं (यस्देवस) परमात्मदेवं तश्चि
त्स्वरूपनिरञ्जने पीठे (थज्यी) मदासने उल्लसन्ति
॥ शिखागे द्वादशाङ्गुल्ये स्थितं सूक्ष्म तनुं
विभूम् ॥ इति स्मृतेः ॥ अत एव चित्स्वरू
पमनस्तमुदयरहितः केवलं तत्सर्वगतं
स्वानुभवादवाप्तव्यस्तत्वतः ॥ द्वैतसन्दे
ह नाम (कल्पन्) कल्पना पिशाचिका यस्य (स यस) (अन्तः) हृद
याख्यदेवालयस्य निर्गतानायाति (चज्यी) पु
नरान्तरम् ॥ स एवैको स्वयं परमात्मा (देव त) दे
वोऽनन्तस्वप्रकाशचैतन्यरूपोयः ॥ तं
प्राणेश्वरं यागादिमर्चनां कुर्वन्ति
सर्वे स (अर्चण् कस) कस्यार्चना करोत्यनन्तपूर्णाह
न्तात्मकायो असङ्गो भूतः ॥ यैरेव पूज्यते
द्रव्यैस्तर्प्यते वा परापरः ॥ यश्चैव पूज

- Website page link is Page 72. **Note:** Lines in blue font colour and in brackets are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. Red colour letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 19.10.2020

Page 54

Final version

दशसूर्यमण्डलानि यं (यस् देवस्) परमात्मदेवं तश्चित्स्वरूपनिरञ्जने पीठे (थज्यी) मदासने
उल्लसन्ति ॥ शिखाग्रे द्वादशाङ्गुल्ये स्थितं सूक्ष्म तनुं विभूम् ॥ इति स्मृतेः ॥ अत एव
चित्स्वरूपमनस्तमुदयरहितः केवलं तत्सर्वगतं स्वानुभवादवाप्तव्यस्तत्त्वतः ॥ द्वैतसन्देह
नाम (कल्पन्) कल्पना पिशाचिका यस्य (स यस्) (अन्तः) हृदयाख्यदेवालयस्य
निर्गतानायाति (चज्यी) पुनरान्तरम् ॥ स एवैको स्वयं परमात्मा (देव् त)
देवोऽनन्तस्वप्रकाशचैतन्यरूपोयः ॥ तं प्राणेश्वरं यागादिमर्चनां कुर्वन्ति सर्वे स (अर्चण् कस्)
कस्यार्चना करोत्यनन्तपूर्णाहन्तात्मकायो असङ्गो भूतः ॥ यैरेव पूज्यते द्रव्यैस्तर्प्यते वा
परापरः ॥ यश्चैव पूज

- Website page link is Page 72. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

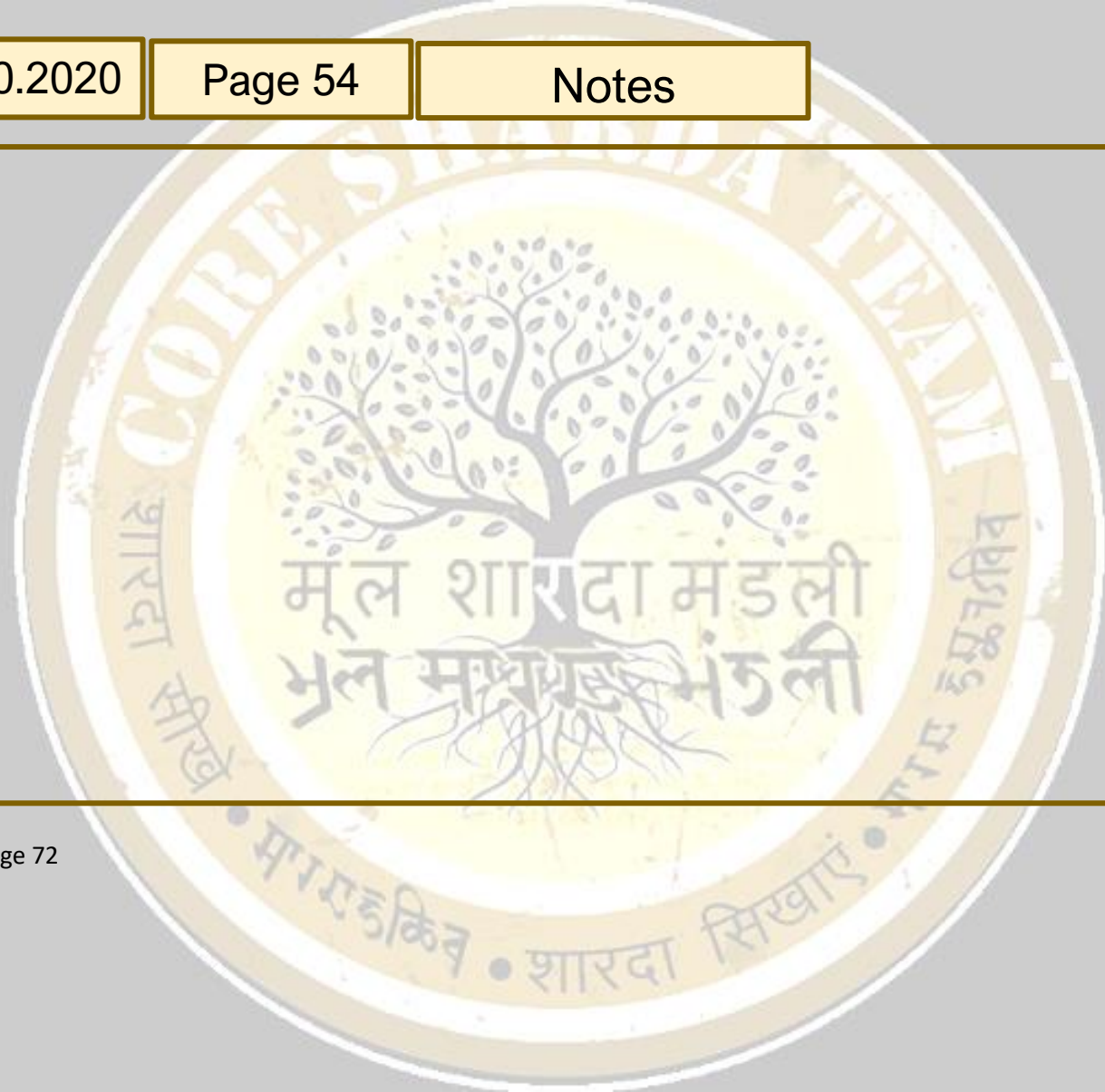
Date – 19.10.2020

Page 54

Notes

1. No notes

Website page link is Page 72





Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 21.10.2020

Page 55

Consonant by consonant transliteration

55

1 कःमचःमलवेकःकूपरनाभा॥५३
 2 म्भुतेः॥ननुद्रविष्णुभदेसुगुर्वेन
 3 भेष्ठागदिपराय॥धुचलेकाभुत्र
 4 उत्ररुद्रुंद्रुंउंभवमत्रिवेरागभ
 5 दिपक्षिउसुउरुनेट्टमदू॥५५॥
 6 मुजवाखुगवेभेनठिकरिक्कुया
 7 बुद्रुभुभेगि॥मुजयाभुगवेभे
 8 मिउभाकडिउभाभभुकरिहा॥
 9 ५२॥सकेकुभत्रुनत्रुमेउभेनठिक
 10 भलमेभेभुद्रुकुवनेगुरुकुभिने
 11 त्रियःकौदुष्ठागृगभनः॥टकुष
 12 भभसुषवेरुपा०ठलसुष्टुवति भाषक
 13 निद्रुं॥मुकगउकगभकगदिद्रुवि
 14 कुभदेसुगरुयःभवेरेवाभुष्ठा

कः सर्व स ए वै कः क्व पू ज न म् ॥ इ ति
 स्मृ तेः ॥ न न्नु ब्र ह्मा वि श्णु म हे श्व रा द यो ना
 मो च्य रा दि प रा य ण स्म्या त्स र्व लो का स्ता न्म
 न्ना न्म हा त्म्यं त्व द्भु तं प्र व द न्ति वे दा ग मा
 दि प ण्डि ता स्त त्र भ ज ने त्या श इक्य ॥ ३३ ॥
 अ कु य ओ म्का र ये सो ना भि द रि क म्भ्त य्
 ब्र ह्मा ण्ड स् सो ग रि ॥ अ कु य् म न्थू र ये सो
 चि त स् क रि त स् सा स् म न्त्र क रि क्या ह ॥
 ३४ ॥ ए को इका र (अ कु य् ओ म्का र्) म नत्रो न न्य चे त (य सो) सो ना भि क (ना भि)
 म ल दे शे सौ ब्र ह्म भु व ने गु रु भ क्ति मा र्गे
 ति यः क रो त्यु श्चा रा ख्य (ध रि) ग म नः ॥ ऋ क्य जु
 स्सा म अ थ र्व वे द पा ठ फ ल स्त स्य सा ध क स्य भ व ति
 नि त्यं ॥ अ का र उ का र म का रा दि ब्र ह्मा वि
 ष्णु म हे श्व रा द यः स र्व दे वा ना मु च्चा र

- Website page link is Page 73. **Note:** Lines in blue font colour and in brackets are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. Red colour letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 21.10.2020

Page 55

Line wise sentence

1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11
12
13
14

कः भवः भववैकः कृत्वा नभा ॥ इति
 भवेः ॥ ननु ब्रह्मा विष्णु महेश्वरा दयो ना
 भेष्वादिपरायणस्मृत्यात्सर्वलोकास्तान्म -
 न्त्रान्महात्म्यं त्वद्भुतं प्रवदन्ति वेदागमा-
 दि पण्डितास्तत्र भजनेत्याशङ्क्य ॥ ३३ ॥
 अकुर्य ओम्कार् येसो नाभिदरि कम्भतय्
 ब्रह्माण्डस्सो गरि ॥ अकुर्य् मन्थूर् येसो
 चितस्करि तस् सास् मन्त्र करि क्याह
 ३४ ॥ एकोङ्कारमन्त्रोऽनन्यचेतसो (अकुर्य् ओम्कार्) नाभिक- (यसो) (नाभि)
 मलदेशेऽसौ ब्रह्मभुवने गुरुभक्तिमार्गे-
 ति यः करोत्युच्चारख्यगमनः ॥ ऋक्यजु- (धरि)
 स्साम अथर्ववेदपाठ फलस्तस्य साधकस्य भवति
 नित्यं ॥ अकार उकार मकारादि ब्रह्मा-वि-
 ष्णु-महेश्वरादयः सर्वदेवानामुच्चार

55

कः सर्वः स एवैकः क्व पूजनम् ॥ इति
 स्मृतेः ॥ ननु ब्रह्मा विष्णु महेश्वरा दयो ना
 मोच्चारादिपरायणस्मृत्यात्सर्वलोकास्तान्म -
 न्त्रान्महात्म्यं त्वद्भुतं प्रवदन्ति वेदागमा-
 दि पण्डितास्तत्र भजनेत्याशङ्क्य ॥ ३३ ॥
 अकुर्य ओम्कार् येसो नाभिदरि कम्भतय्
 ब्रह्माण्डस्सो गरि ॥ अकुर्य् मन्थूर् येसो
 चितस्करि तस् सास् मन्त्र करि क्याह
 ३४ ॥ एकोङ्कारमन्त्रोऽनन्यचेतसो (अकुर्य् ओम्कार्) नाभिक- (यसो) (नाभि)
 मलदेशेऽसौ ब्रह्मभुवने गुरुभक्तिमार्गे-
 ति यः करोत्युच्चारख्यगमनः ॥ ऋक्यजु- (धरि)
 स्साम अथर्ववेदपाठ फलस्तस्य साधकस्य भवति
 नित्यं ॥ अकार उकार मकारादि ब्रह्मा-वि-
 ष्णु-महेश्वरादयः सर्वदेवानामुच्चार

- Website page link is Page 73. **Note:** Lines in blue font colour and in brackets are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. Red colour letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 21.10.2020

Page 55

Final version

कः सर्वः स एवैकः क्व पूजनम्॥ इति स्मृतेः॥ ननु ब्रह्मा विष्णु महेश्वरादयो
नामोच्चारदिपरायणस्म्यात्सर्वलोकास्तान्मन्त्रान्महात्म्यं त्वद्भुतं प्रवदन्ति वेदागमादि
पण्डितास्तत्र भजनेत्याशङ्क्य॥३३॥ अकुय ओम्कार् येसो नाभिदरि कम्भतय् ब्रह्माण्डस्सो
गरि॥ अकुय् मन्थूर् येसो चित्तस् करि तस् सास् मन्त्र करि क्याह् ॥३४॥
एकोङ्कारमन्त्रोऽनन्यचेतसो (अकुय् ओम्कार्) नाभिकमलदेशोऽसौ (यसो) (नाभि)
ब्रह्मभुवने गुरुभक्तिमार्गेति यः (धरि) करोत्युच्चारख्यगमनः॥ ऋक्यजु-स्साम-
अथर्ववेदपाठफलस्तस्य साधकस्य भवति नित्यं॥ अकार उकार मकारादि ब्रह्मा-विष्णु-
महेश्वरादयः सर्वदेवानामुच्चार

- Website page link is Page 73. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

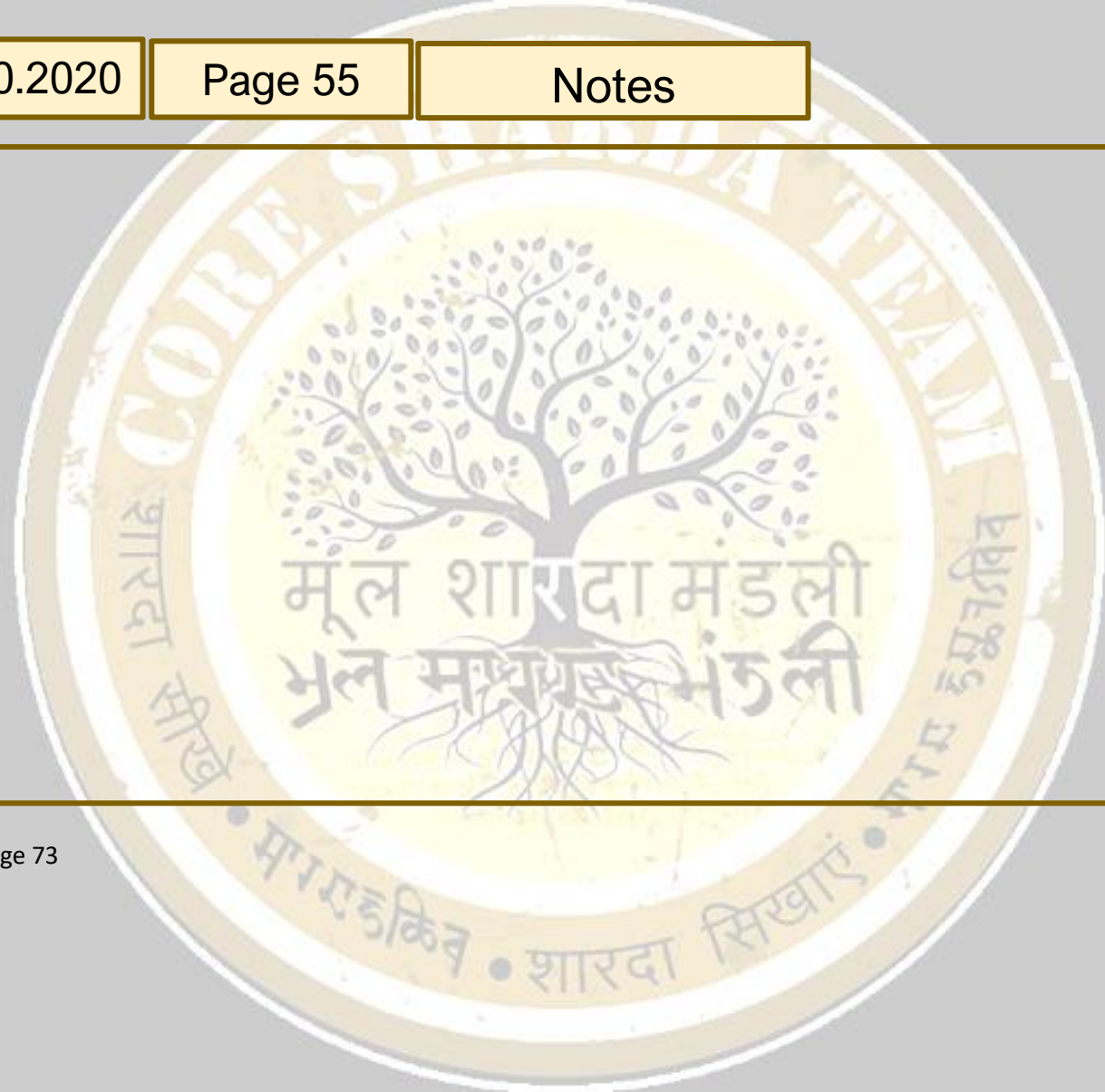
Date – 21.10.2020

Page 55

Notes

1. No notes

Website page link is Page 73





Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 23.10.2020

Page 56

Consonant by consonant transliteration

56

1 फलशुभ्रुभिः॥भवत्तुकितीजयस्तु
2 नक्रियाशुभ्रुभिःफलानिभुवन्तिउभु
3 रुषशुभ्रुभिःयुषःकिञ्चित्मात्रातल्पका (कंभुय)
4 लेशुभ्रुभिःयं ब्रह्माण्ड (ब्रह्माण्डस) ग्रहे (सो गरि) संसारसुखदुः
5 खालयेभोगान्भोगी॥प्रयाणकालेप्र
6 यातिब्रह्मलोकेसब्रह्माभवति॥यदि
7 भुक्तिकुशुभ्रुभिःशुभ्रुभिःकालपरि
8 माणवृत्तिःकरोतिसम्पूर्णम्॥तदा
9 ब्रह्माण्डनिर्गतानामयंपरंस्थानंयद
10 नावृत्तिश्चतदाप्नोत्येत्युच्यते॥तर्हितत्का
11 लेसोप्येदं ब्रह्माण्डग्रहेयंमायाजालं
12 च्छित्वाव्यक्ताक्षरंपरंपदंमोक्षमवाप्य
13 ते॥तस्मात्तत्रापत्यर्थाद्यो (योस) एकाक्षरः (अकुय) मन्त्रस्म (मन्त्रः)
14 (चित्सकरि) रणां करोति गुरुभक्ति युक्त्यापि नित्यं॥

फ ल स्त स्या स्ति ॥ स र्वा र्च णा दि ती र्थ य ज दा
न क्रि या स्त पा दि फ ला नि भ व न्ति त स्य पु
रु ष स्य ॥ सः पु रु षः कि ञ्चि त्मा त्रा त ल्प का (कं भु य)
ले स्या द यं ब्र ह्मा ण्ड (ब्र ह्मा ण्ड स) ग्र हे (सो ग रि) सं सा र सु ख दुः
खा ल ये भो गा न्भो गी ॥ प्र या ण का ले प्र
या ति ब्र ह्म लो के स ब्र ह्मा भ व ति ॥ य र्हि
सृ ष्ठी क र्ता ब्र ह्मा स्वा यु रा दि का ल प रि
मा ण वृ त्तिः क रो ति स म्पू र्ण म् ॥ त दा
ब्र ह्मा ण्ड नि र्ग ता ना म यं प रं स्था नं य द
ना वृ त्ति श्च त दा प्नो त्ये त्यु च्य ते ॥ त र्हि त त्का
ले सो प्ये दं ब्र ह्मा ण्ड ग्र हे यं मा या जा लं
च्छि त्वा व्य क्ता क्ष रं प रं प दं ंमो क्ष म वा प्य
ते ॥ त स्मा त त्त्रा प्त्य र्था द्यो (यो स) ए का क्ष रः (अ कु य) म न्त्र स्म (म न्त्रः)
(चि त स् क रि) र णां क रो ति गू रु भ क्ति यु क्त्या पि नि त्यं ॥

- Website page link is Page 74. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions
- WQ



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 23.10.2020

Page 56

Line wise sentence

56

1 फलस्तस्यास्ति॥ सर्वाचरणादितीर्थयजदा-
 2 न-क्रियास्तपादिफलानि भवन्ति तस्य पु-
 3 रुषस्य॥ सः पुरुषः किञ्चित्मात्राऽल्पका- (कं भुय)
 4 ले स्यादयं (ब्रह्माण्डस) ब्रह्माण्डग्रहे (सो गरि) संसारसुखदुः-
 5 खालये भोगान्भोगी॥ प्रयाणकाले प्र-
 6 याति ब्रह्मलोके स ब्रह्मा भवति॥ यर्हि
 7 सृष्टिकर्ता ब्रह्मा स्वायुरादि कालपरि-
 8 माणवृत्तिः करोति सम्पूर्णम्॥ तदा
 9 ब्रह्माण्डनिर्गतानामयं परं स्थानं यद-
 10 नावृत्तिश्च तदाप्नोत्युच्यते॥ तर्हि तत्का-
 11 ले सोप्येदं ब्रह्माण्डग्रहेऽयं मायाजालं
 12 च्छित्वा व्यक्ताक्षरं परं पदं मोक्षमवाप्य-
 13 ते॥ तस्मात्तत्प्राप्त्यर्थाद्यो (योस) एकाक्षरः (अकुर्य) मन्त्रस्म- (मन्त्रः)
 14 (चितस् करि) रणं करोति गुरुभक्तियुक्त्यापि नित्यम्॥

फलस्तस्यास्ति॥ सर्वाचरणादितीर्थयजदा-
 न-क्रियास्तपादिफलानि भवन्ति तस्य पु-
 रुषस्य॥ सः पुरुषः किञ्चित्मात्राऽल्पका- (कं भुय)
 ले स्यादयं (ब्रह्माण्डस) ब्रह्माण्डग्रहे (सो गरि) संसारसुखदुः-
 खालये भोगान्भोगी॥ प्रयाणकाले प्र-
 याति ब्रह्मलोके स ब्रह्मा भवति॥ यर्हि
 सृष्टिकर्ता ब्रह्मा स्वायुरादि कालपरि-
 माणवृत्तिः करोति सम्पूर्णम्॥ तदा
 ब्रह्माण्डनिर्गतानामयं परं स्थानं यद-
 नावृत्तिश्च तदाप्नोत्युच्यते॥ तर्हि तत्का-
 ले सोप्येदं ब्रह्माण्डग्रहेऽयं मायाजालं
 च्छित्वा व्यक्ताक्षरं परं पदं मोक्षमवाप्य-
 ते॥ तस्मात्तत्प्राप्त्यर्थाद्यो (योस) एकाक्षरः (अकुर्य) मन्त्रस्म- (मन्त्रः)
 (चितस् करि) रणं करोति गुरुभक्तियुक्त्यापि नित्यम्॥

- Website page link is Page 74. **Note:** Lines in blue font colour and in brackets are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. Red colour letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions

Date – 23.10.2020

Page 56

Final version



Sarada to Devanagari Transliteration

(अकार उकार मकारादि ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वरादयः सर्वदेवानामुच्चार-) फलस्तस्यास्ति॥
सर्वार्चनादितीर्थ-यज्ञ-दान-क्रियास्तपादिफलानि भवन्ति तस्य पुरुषस्य॥ सः पुरुषः
किञ्चित्मात्राऽल्पकाले (कं भुय) स्यादयं (ब्रह्माण्डस) ब्रह्माण्डग्रहे (सो गरि)
संसारसुखदुःखालये भोगान्भोगी॥ प्रयाणकाले प्रयाति ब्रह्मलोके स ब्रह्मा भवति॥ यहि
(योऽहि) सृष्टिकर्ता ब्रह्मा स्वायुरादि कालपरिमाणवृत्तिः करोति सम्पूर्णम्॥ तदा
ब्रह्माण्डनिर्गतानामयं परं स्थानं यदनावृत्तिश्च तदाप्नोत्युच्यते॥ तर्हि तत्काले सोप्येदं
ब्रह्माण्डग्रहेऽयं मायाजालं चिह्नत्वा व्यक्ताक्षरं परं पदं मोक्षमवाप्यते॥ तस्मात्तत्प्राप्त्यर्थाद्यो
(योऽस) एकाक्षरः (अकुय) मन्त्रस्मरणं (मन्त्रः) (चितस् करि) करोति गुरुभक्तियुक्त्यापि
नित्यम्॥

- Website page link is Page 74. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions

Date – 23.10.2020

Page 56

Notes



Sarada to Devanagari Transliteration

1. Line **56.06** – Clarity is required for the word **यहिं**. It can be **यद्हि**. Inputs from scholars required

Website page link is Page 74



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 27.10.2020

Page 57

Line wise sentence

57
 1 उष्टुत्रैभवेभजभाष्टुसकैरिभिरुः॥न
 2 उकभुउष्टुवेयपुकाभेरुवडि॥शुभिरुभुय
 3 रुः।यएभभरुकिधुवादेकेभभेभर
 4 भगरे॥याकृषिठकृणकृयलकिव
 5 डिष्ठुगगलनेरननंकगडिष्ठुष्ट
 6 मरुद॥उर॥भभभभायययुयाउथ
 7 भीवेयपुकाभालेभभभभा॥भभभा
 8 नकेदुउभभ॥कैदिभभनिकुउलभ
 9 निरु॥उय॥दभभभेकभरुभिरुष्टु
 10 रुउलागउगउयेउयएनः॥भनकि
 11 उदुपलंकेडेपुउयडिउेरुकेडेपुउयः
 12 यउः५३लेकनंरुलनंकेगवाभवे
 13 उ॥५५यडिउयउकभउरुयेपकुल
 14 उ॥भिकुभुलभुवडिष्टुदलेभायभु

तस्यान्यो मन्त्रो सहस्राख्यश्च (सासु) करोति (करि क्याह) किमित्यार्थः ॥ न
 नुकस्य तत्त्व बोधप्रकाशो भवति॥ अस्मिन्सुख
 दुःख जन्म मरणादिप्रवाहके सन्संसार
 सागरे ॥ पञ्चाग्नि कृच्छ्र चान्द्रायणादि वृ
 तिश्च धारणानां जनानां का गतिश्च इत्या
 शङ्क्याह ॥३४॥ संसारस् आय् आय् तप
 सी बोध प्रकाश् लभोम् सहस् ॥ मरिम्
 न कोन्ह त मरण कैन्मि मर निछ् त लस
 निछ् ॥ ३५ ॥ इह संसारे (संसारस्) कर्मभूमिराख्ये
 भूतलागताऽऽगता (आय् आय्) ये तपो जनः (अतसे) ॥ मनादि
 इन्द्रियाणां वृतेषु तपन्ति ते बहुभेदेषु तपः
 यतः परलोकानां फलानां भोगवान्भवे
 त ॥ इह यत्क्रियते कर्म तत्परत्रोप भुञ्ज
 ते ॥ सिक्त मूलस्य वृक्षस्य फलं शाखा सु

- Website page link is Page 75. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 27.10.2020

Page 57

Final version

तस्यान्यो मन्त्रो सहस्राख्यश्च (सास) करोति (करि क्याह) किमित्यार्थः॥ ननु कस्य
तत्त्व बोधप्रकाशो भवति॥ अस्मिन्सुखदुःखजन्ममरणादिप्रवाहके सन्संसारसागरे॥
पञ्चाग्नि-कृच्छ्र चान्द्रायणादिवृत्तिश्च धारणानां जनानां का गतिश्च
इत्याशङ्क्याह॥३४॥ संसारस् आय् आय् तपसी बोध प्रकाश् लभोम् सहस्॥ मरिम् न
कोन्ह त मरण कैन्मि मर निछ् त लस निछ्॥३५॥ इह संसारे (संसारस्) कर्मभूमिराख्ये
भूतलागतःसगता (आय् आय्) ये तपो जनः (अतसे) मनादि-इन्द्रियाणां वृत्तेषु तपन्ति
ते बहुभेदेषु तपः यतः परलोकानां फलानां भोगवान्भवेत्॥ इह यत्क्रियते
कर्मतत्परत्रोपभुञ्जते॥ सिक्तमूलस्य वृक्षस्य फलं शाखा सु

- Website page link is Page 75. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

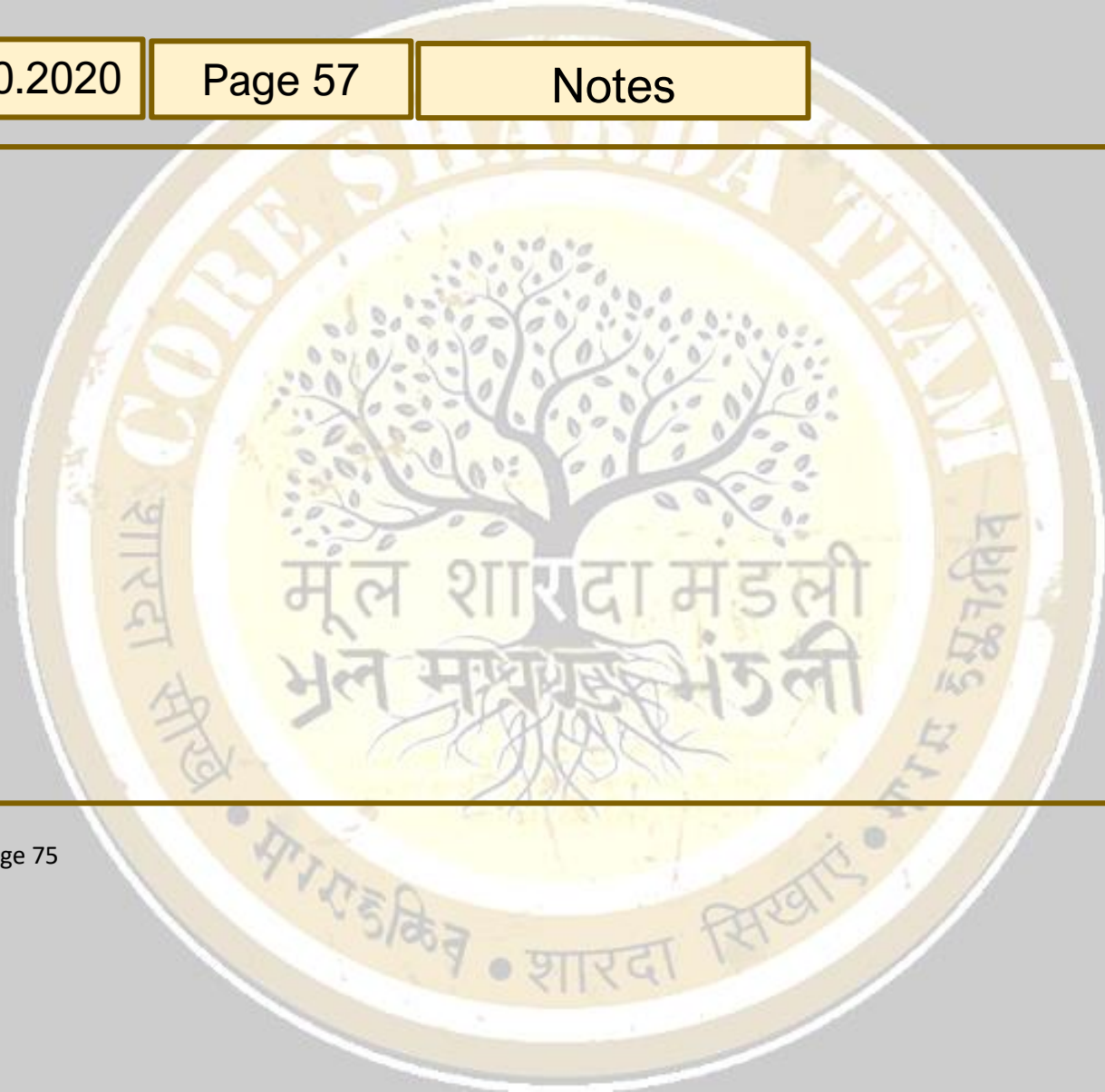
Date – 27.10.2020

Page 57

Notes

1. No notes

Website page link is Page 75





Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 28.10.2020

Page 58

Consonant by consonant transliteration

58

1 अत्रिउभा॥उडिभाउः॥उडेयिनमगदि
2 उभाङ्गमेवंनविरानत्रिडेकङ्करकः॥
3 मेकडिभावेनेयेविवेकदीनःकभर
4 गरलत्रिडाः॥राभरमेभरगुः
5 एरुवेधुनचुनरुडिडेकेनयुजेनथ
6 ऊरुवत्रिडे॥भरुडङ्करगचेनविह
7 उयरलत्रिडाः॥मेभरपुनरावेडुय
8 एयत्रुययेयवा॥उडिभाउः॥चउरा
9 वगिडुवडिनिरेडुनेयेरुडियेगेनय
10 उडेङ्कउःडेनमदएभरुगङ्गेवधुक्
11 मेनरु॥यवपिभिंदेरुवायुकिंभ
12 ऊभदायउरडिउःयसुपियेकेडेभद
13 गकेभदरलीवीगकेरुवडि॥उय
14 धुदभाङ्गउलभमङ्गवगेउरकेउर

द शि त म् ॥ इ ति स्मृ तेः॥ त तो पि ना श र हि
त मा त्म दे वं न वि जा न न्ति ते ह ड्क र काः
दे हा भि मा ने न ये वि वे क ही ना : का म रा
ग ब ला न्वि ताः ॥ ज न्म म र ण सं सा र दुः
खा र्णा वे पु न र्पु न र्पु त्प न्ति के न यु क्ते न मु
क्ता भ व न्ति ते॥ म हा हङ्का र ग र्वे न वि द्या
तप बला न्वि ताः॥सं सा र पु न रा व ते घ
ट य न्त्रे घ टो य था ॥ इ ति स्मृ तेः॥अ त ए
व चि त वृ ति नि रो द्धे न यो भ क्ति यो गे न य
त तो भू तः ते न स ह ज (स ह स) म न्त रा त्म बो ध प्र का
शं ल न्त्वा ॥ (ल भो म) य था पि सिं हो न्य व्या घ्रा दिं स
ङ्ग स हा य त र हि तः प श्वा धि पो द्वाै तो प हा
र को म हा ब ली वी रो ए को भ व ति ॥ त था
प्य ह मा त्म ब ल स्पर्शा त्स र्व ग तो ए को त द

- Website page link is Page 75. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 29.10.2020

Page 58

Line wise sentence

58
1 मन्त्रिभूः॥३॥उतेयिनमग्नि
2 उभाङ्गमेवंनविस्मयतेऽहङ्करकाः॥
3 देहाभिमानेनयेविवेकहीनाःकामरा
4 गबलान्विताः॥संसारपुनरावतेघ
5 खार्णावेपुनर्पुनःपतन्तिकेनयुक्तेनमु
6 क्ताभवन्तिते॥महाहङ्कारगर्वेनविद्या
7 तपबलान्विताः॥संसारपुनरावतेघ
8 टयन्त्रेघटोयथा॥इतिस्मृतेः॥अतए
9 वचित्तवृत्तिनिरोद्धेनयोभक्तियोगेनय
10 ततोभूतःतेनसहजमन्तरात्मबोधप्रका(सहस)
11 शंलब्धा॥(लभोम)यथापिसिंहोन्यव्याघ्रादिंस
12 इगसहायतरहितःपश्वाधिपोद्वैतोपहा
13 रकोमहाबलीवीरोएकोभवति॥तथा
14 प्यहमात्मबलस्पर्शात्सर्वगतोएकोतद

दर्शितम् ॥ इति स्मृतेः॥ ततोऽपि नाशरहि
तमात्मदेवं न विजानन्ति तेऽहङ्करकाः
देहाभिमानेन ये विवेकहीनाः कामरा
गबलान्विताः ॥ जन्ममरण संसारदुः
खार्णावे पुनर्पुनः पतन्ति केन युक्तेन मु
क्ता भवन्ति ते॥ महाहङ्कारगर्वेन विद्या
तपबलान्विताः॥संसारपुनरावते घ
टयन्त्रे घटो यथा ॥ इति स्मृतेः ॥ अत ए
व चित्तवृत्तिनिरोद्धेन यो भक्तियोगेन य
ततो भूतः तेन सहजमन्तरात्मबोधप्रका (सहस)
शं लब्धा ॥ (लभोम) यथापि सिंहोन्यव्याघ्रादिंस
इग सहायतरहितः पश्वाधिपोद्वैतोपहा
रको महाबली वीरो एको भवति ॥ तथा
प्य हमात्म बलस्पर्शात्सर्वगतो एको तद

- Website page link is Page 76. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 29.10.2020

Page 58

Final version

(सिक्तमूलस्य वृक्षस्य फलं शाखा सु-) दर्शितम्॥ इति स्मृतेः॥ ततोऽपि
नाशरहितमात्मदेवं न विजानन्ति तेऽहङ्कारकाः॥ देहाभिमानेन ये विवेकहीनाः
कामरागबलान्विताः॥ जन्ममरणसंसारदुःखार्णवे पुनर्पुनःपतन्ति केन युक्तेन मुक्ता
भवन्ति ते॥ महाहङ्कारगर्वेन विद्यातपबलान्विताः॥ संसारपुनरावर्ते घटयन्त्रे घटो
यथा॥ इति स्मृतेः॥ अत एव चित्तवृत्तिनिरोद्धेन यो भक्तियोगेन यततो भूतः तेन
सहजमन्तरात्मबोधप्रकाशं (सहस्र) लब्धा॥ (लभोम्) यथापि सिंहोऽन्यव्याघ्रादिं
सङ्गसहायतरहितः पश्वाधिपोऽद्वैतोऽपहारको महाबली वीरो एको भवति॥
तथाप्यहमात्मबलस्पर्शात्सर्वगतो एको तद -

- Website page link is Page 76. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

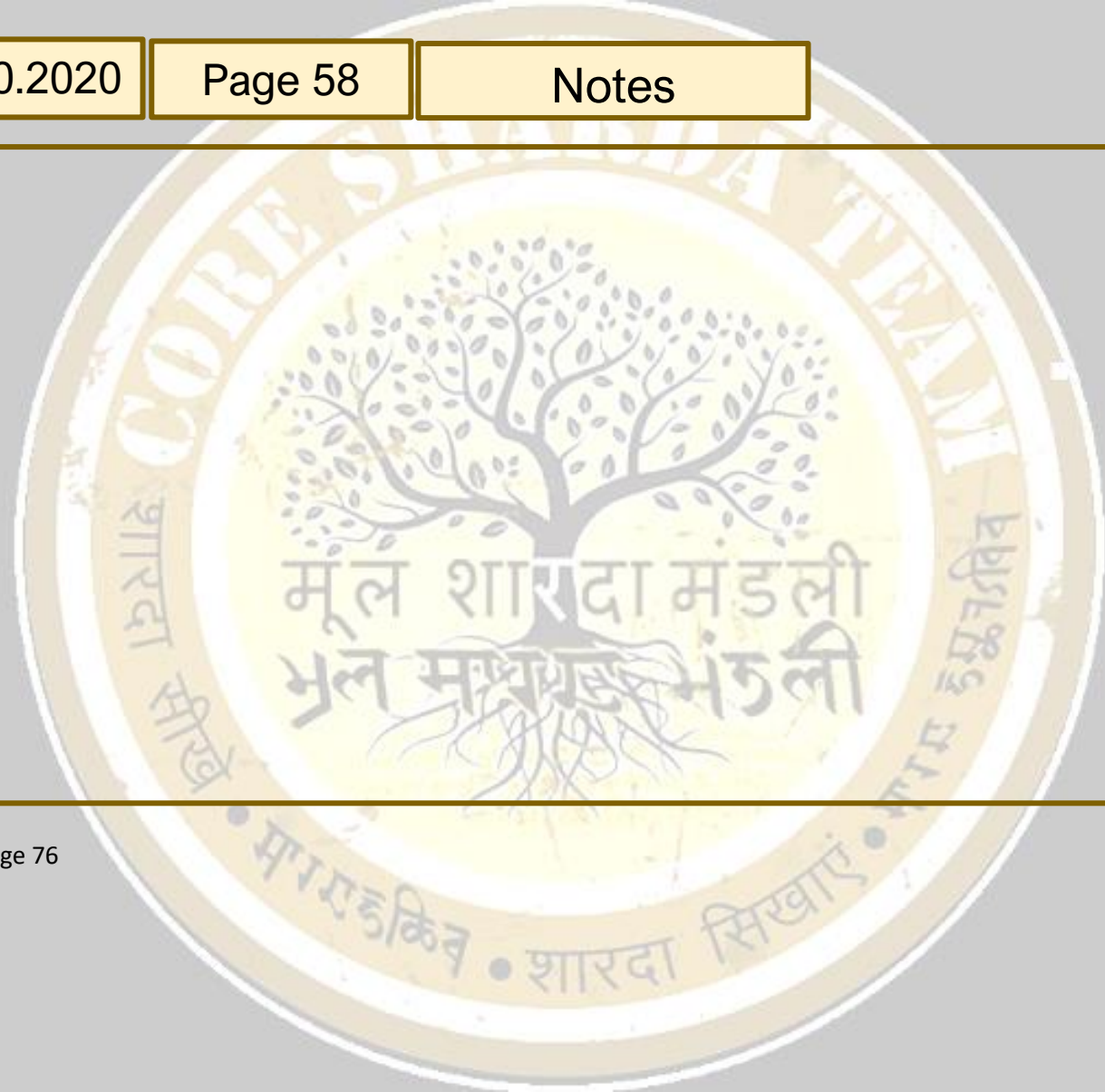
Date – 29.10.2020

Page 58

Notes

1. No notes

Website page link is Page 76





Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 01.11.2020

Page 59

Consonant by consonant transliteration

59

1 इ उ म च ऋ उ र्मु र्गि श्च भ उ मे उ ट्मि व भु र्मु य
 2 नि ग ऋ ने भ ऋ ऋ रः ॥ न भे श्चि य उ क ऋ म्
 3 के ड य भ ऋ ऋि जी ये न श्चि भे न श्चि भ उ डं क
 4 शु ॥ निः भ ऋ नि ग भ ये नि नु ॥ श्चि उ भ ऋ
 5 ॥ म र म ऋ ये थु क भ के य भ ऋ ऋ गु ॥ ऋ द
 6 भि रं रं रं म च ए ग उ न म् ऋ डि नि भि उ
 7 क ल्पं रं क ल्प उ नि ट्म ऋ वि के ॥ क ऋ
 8 ले ऋ ऋ ऋ र्मु यः दे ऋः न ये ऋ वे दे उ द
 9 ष भु र्णे ॥ उ ऋः ॥ न नु ग्द मि ऋ ट्म भ म्
 10 भि नः जी ऋ भ न ऋ ग भ ने ये म् ऋ डि नि उं उं
 11 नि धु र्म किं नि नु ॥ ऋ प गी ऋ उ भि ऋ म्
 12 ॥ उ य ॥ पु ष य ऋ जी ऋ ग ऋ न म् ऋ म्
 13 ग्ग र्म भु र्म र्म न्म नि ॥ मि उ प गे उं
 14 नि थु र्म पु मे ऋ ॥ ऋ ऋ रि ऋ मे न्म र्म
 15 नी ले ॥ उं ॥ ग्द मि ऋ ट्म भ म् ऋ मि रः

द्वै त स र्व भू ते श्व रो अ मृ त चै त न्य शि व स्व रू प
 नि र ञ्ज नो सा क्ष त्का रः ॥ न म् (म रि म् न) श्चि य ते क श्चि दे (को न्ह)
 को हं य स्मा द्द्वि ती यो ना स्ति म् ना पि (म र ण) मृ तो हं क (क न्सि)
 स्य ॥ निः स इगो नि रा म यो नि गु णो स्मि त स्मा त्
 ॥ स द स त्म यो प्य ह मो को य स्मा त्स गु ण श्च ह
 मि दं दे हो स र्व (म र नि छ) ज ग तो ना शो त्प ति नि मि तौ (ल स नि छ)
 क ल्पा दौ कल्पा न्ते नि त्य स्वा भा वि के ॥ क ल्लो
 लौ बु द्बु धा द यः फे णुः ल यो द्भ व हे तु र्य
 था म्बु धौ इ त्य र्थः ॥ न नु ग्ग हा दि कु टा म्भ स न्न्या
 सि नः ती र्थ स्ना ना र्थ ग म ने ये च र न्ति नि त्यं ते षां
 नि ष्ठा च किं न गु णा त्मा प री क्ष्य ता मि त्या श इक्य
 ॥ ३ ५ ॥ प्र थु य् ती र्थ न् ग छा न् स न्न्या सी
 ग्वा रा ण् सु र द र्श न् म्यै लि ॥ चि ता प रे ते म्
 नि ष्य त् आ से द्यो ठो ख् दू रि द्र मो न् ज न्
 नी लो ॥ ३ ६ ॥ (स न्न्य से) ग्ग हा दि कु ट म्भ स न्न्या सि नः



Sarada to Devanagari Transliteration

- Website page link is Page 77. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions

Date – 01.11.2020

Page 59

Line wise sentence

59

- 1 इउमचक्रुतेसुतेसुमउमेउट्टिमिवमुजुये
- 2 निगङ्गनेभाङ्गङ्गः॥नभेभियतेकस्मिन्ने
- 3 केदंयभाङ्गि जीये नभिये नभिये उदंके
- 4 शु॥निःभङ्गे निगभये निनु ल्लि उभङ्ग
- 5 ॥भममङ्गयेथुदभके यभाङ्गुगुल्लुद
- 6 भिरुंरेदेभचएगउ नभेदुडिनिभितु
- 7 कल्दरेकल्दते निट्टभारु विके॥कले
- 8 लेउकुणरुयःदेभः नयेरुवदेउद
- 9 वभुणे ॥उङ्गः॥ननुगुदकिजुएभमवृ
- 10 भिनः जीङ्गनङ्गगभनेयेमडुविउतेभं
- 11 निधुमकिं निनु ल्लुपगेहु उभियमहु
- 12 ॥उप॥पुषुया जीङ्गगळ नभमवृभी
- 13 शुगल्लुभुरमुज्जनाभुलि॥मिडुपगेउभ
- 14 निधुमपुमेहु वेयाउरिउभेनएना
- 15 नीले॥उं॥गुदकिजुएभमवृभि नः

द्वैतसर्वभूतेश्वरो अमृतचैतन्यशिवस्वरूप
 निरञ्जनो साक्षत्कारः ॥ न में (मरिम् न) स्रियते कश्चिदे (कोन्ह)
 कोहं यस्माद् द्वितीयो नास्ति में नापि (मरण) मृतोहं क (कन्सि)
 स्य ॥ निःसङ्गो निरामयो निर्गुणोऽस्मि तस्मात्
 ॥ सद सत्तमयोऽप्यहमो कोयस्मात्स गुणशचाह
 मिदं देहो सर्वजगतो (मर निछ) नाशोत्पत्तिनिमित्तौ (लस निछ)
 कल्पादौ कल्पान्ते नित्य स्वाभाविके ॥ कल्लो
 लौ बुदबुधा दयः फेणुः लयोद् भवहे तुर्य
 थाम् बुधौ इत्यर्थः ॥ ननु ग्रहादि कुटुम्भ सन्न्या
 सिनः तीर्थस्नानार्थं गमने ये चरन्ति नित्यं तेषां
 निष्ठा च किं नर्गुणात्मा परीक्ष्यता मित्याशङ्क्य
 ॥ ३५ ॥ प्रथुय् तीर्थन् गछान् सन्न्यासी
 ग्वाराण् सुर दर्शन् म्यैलि ॥ चित्ता परेतेम्
 निष्पत् आसे द्योठोख् दूरि द्रमोन् जन्
 नीलो ॥ ३६ ॥ (सन्न्यसे) ग्रहादि कुटुम्भ सन्न्यासिनः



Sarada to Devanagari Transliteration

- Website page link is Page 77. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions

Date -01.11.2020

Page 59

Final version

(तथाप्यहमात्मबलस्पर्शात्सर्वगतो एको तद -) द्वैतसर्वभूतेश्वरो
अमृतचैतन्यशिवस्वरूपनिरञ्जनो साक्षात्कारः॥ न मे (मरिम् न) स्त्रियते कश्चिदेकोऽहं (कोन्ह)
यस्माद् द्वितीयो नास्ति मे नापि (मरण) मृतोऽहं कस्य (कन्सि)॥ निःसङ्गो निरामयो
निर्गुणोऽस्मि तस्मात्॥ सद सत्मयोऽप्यहमो कोऽयस्मात्स गुणश्चाहमिदं देहो सर्वजगतो (मर
निछ्) नाशोत्पत्तिनिमित्तौ (लस निछ्) कल्पादौ कल्पान्ते नित्य स्वाभाविके॥ कल्लो लौ बुद्बुधा
दयः फेणुः लयोद् भवहे तुर्यथाम् बुधौ इत्यर्थः॥ ननु ग्रहादि कुटाम्भ सन्न्यासिनः तीर्थस्नानार्थ
गमने ये चरन्ति नित्यं तेषां निष्ठा च किं निर्गुणात्मा परीक्ष्यता मित्याशङ्क्य॥३५॥ प्रथुय्
तीर्थन् गछान् सन्न्यासी ग्वाराण् सुर दर्शन् म्यैलि॥ चित्ता परेतेम् निष्पत् आसे द्योठोख् दूरि
द्रमोन् जन् नीलो ॥३६॥ (सन्न्यसे) ग्रहादि कूटुम्भ सन्न्यासिनः

- Website page link is Page 77. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

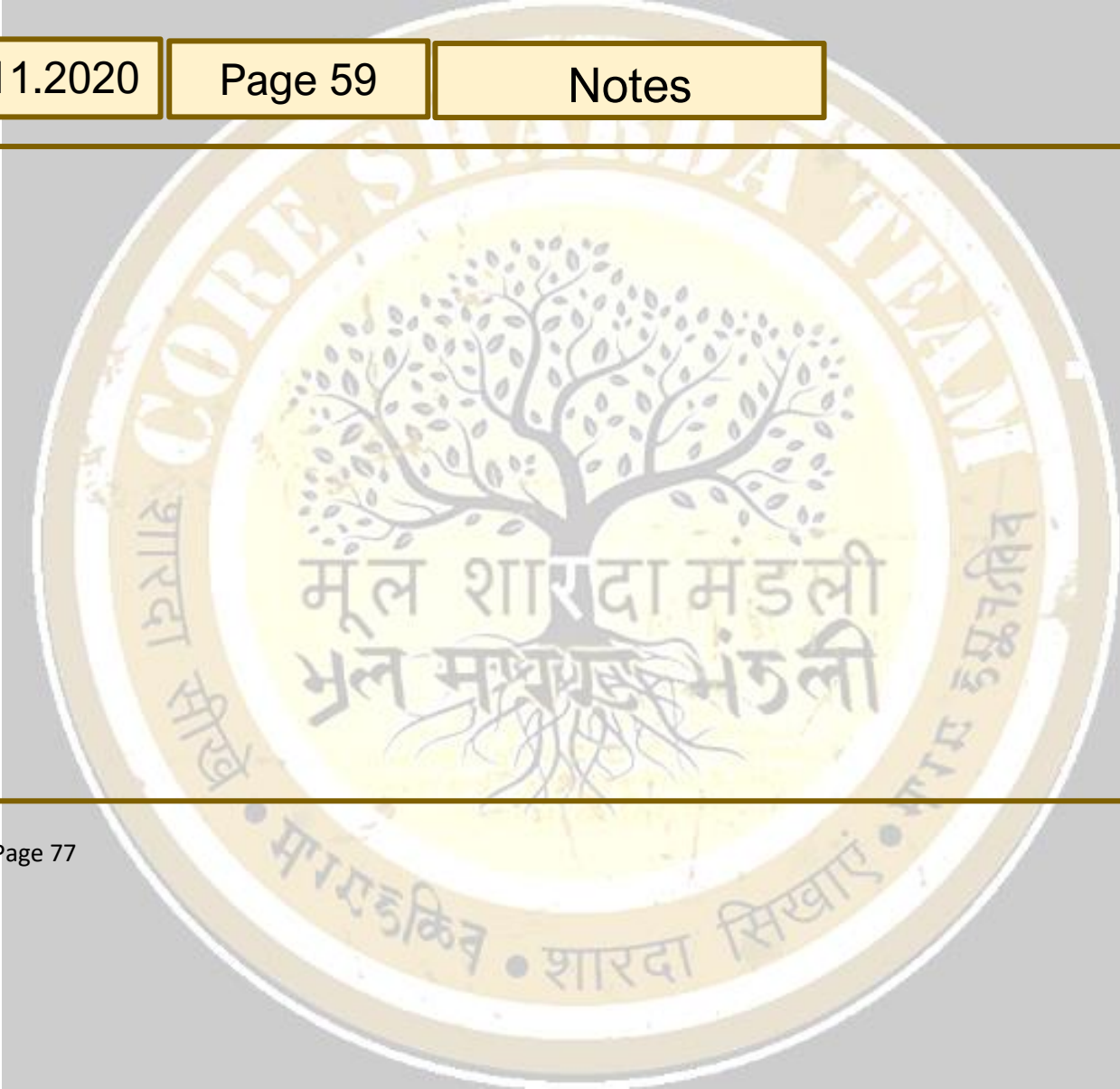
Date – 01.11.2020

Page 59

Notes

1. No notes

Website page link is Page 77





Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 02.11.2020

Page 60

Consonant by consonant transliteration



नः ग छ न्ति (ग छा न्) ती र्थ स्ना ना र्थं (प्र थू य् ती र्थ ण्) दि शा न्त रे च र न्ति (फै रा ण्) प
श्य न्ति चै व पृ थ्वी आ पो अ ग्नि र्वा यु रा का शा दि
प ञ्च म हा भू ता नि य त्र त त्र ॥ ए ता नु त्य ति
स्थि ति सं हा र क सा क्षि स्वरू प ई श्व रं न वि
जा न न्ति ते भ्रा म्य काः ॥ ए कं ज ला श यं त्य क्त्वा
न्य ती र्थं द्र व न्ति ताः ॥ य तो सु र द र्शि नः (सु र द र्श न् मै लि) प्रा
प्ति र्भ व ति इ ति ग म ना ग म ने सं च र न्ति ते
दि ग म्भ रो प मा न्क्तु तो ल भ न्त्या त्म दे वं नि र्गु
णो यः ॥ ता नि न ष्टा त्मा नो (चि ता परे ते) चि तु वि क्षे प
(नि ष्प त्) वि चा र ही ना भ्रा न्त चे त सो भू ताः ॥ य था
क्वा पि दूर्वा (दू रि) श्र ये व स न्त का ले नी ल (द्र मो न् ज न् न्यो लो) तृ
णा भा सं भा ति (द्यों ठो ख) सु न्द र म् ॥ त त्रा श्र म मि च्छ
न्ति ग छ न्ति लो का स्त त्र न भा ति कि ञ्चि त्
भ्रा न्ति मा त्रो भू या त् ॥ पु न श्चा न्या श्र से/मै नि
ल तृ णा भा सं भा ति त त्रा पि इ च्छ न्ति ग छ

- Website page link is Page 78. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 02.11.2020

Page 60

Line wise sentence



नः गच्छन्ति (गछान्) तीर्थस्नानार्थं (प्रथूय तीर्थण्) दिशान्तरे चरन्ति (फैराण्) प
श्यन्ति चैव पृथ्वी आपो अग्निर्वायुरा काशादि
पञ्चमहाभूतानि यत्र तत्र ॥ एतानुत्पत्ति
स्थिति संहारक साक्षिस्वरूप ईश्वरं नवि
जानन्तिते भ्राम्यकाः ॥ एकं जलाशयं त्यक्त्वा
ऽन्यतीर्थं द्रवन्ति ताः ॥ यतो सुरदर्शिनः (सुर दर्शन् मैलि) प्रा
प्तिर्भवति इति गमनागमने संचरन्ति ते
दिगम्भारोपमान् कुतो लभन्त्यात्मदेवं निर्गु
णो यः ॥ तानि नष्टात्मानो (चित्ता परे ते) चित्तविक्षेप
(निष्पत्) विचारहीना भ्रान्तचेतसो भूताः ॥ यथा
क्वापि दूर्वाश्रये (दूरि) वसन्तकाले नीलत् (द्रमोन् जन्योलो)
णाभासं भाति (द्योठोख्) सुन्दरम् ॥ तत्राश्रममिच्छ
न्ति गच्छन्ति लोकास्तत्र न भाति किञ्चित्
भ्रान्ति मात्रो भूयात् ॥ पुनश्चान्याश्रमं नी
लतृणाभा संभाति तत्रापि इच्छन्ति गच्छ

- Website page link is Page 78. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date –02.11.2020

Page 60

Final version

नः गच्छन्ति (गछान्) तीर्थस्नानार्थं (प्रथूय् तीर्थण्) दिशान्तरे चरन्ति (फैराण्) पश्यन्ति
चैव पृथ्वी आपो अग्निर्वायुरा काशादिपञ्चमहाभूतानि यत्र तत्र ॥ एतानुत्पत्ति स्थिति संहारक
साक्षिस्वरूप ईश्वरं न विजानन्ति ते भ्राम्यकाः ॥ एकं जलाशयं त्यक्त्वाऽन्यतीर्थं द्रवन्ति ताः
॥ यतो सुरदर्शिनः (सुर दर्शन् मैलि) प्राप्तिर्भवति इति गमनागमने संचरन्ति ते
दिगम्भरोपमान् कुतो लभन्त्यात्मदेवं निर्गुणो यः ॥ तानि नष्टात्मानो (चित्ता परे ते)
चित्तविक्षेपविचारहीना (निष्पत्) भ्रान्तचेतसो भूताः ॥ यथा क्वापि दूर्वाश्रये (दूरि) वसन्तकाले
नीलतृणाभासं (द्रमोन् जन् न्योलो) भाति सुन्दरम् ॥ तत्राश्रममिच्छन्ति गच्छन्ति लोकास्तत्र
न भाति (द्योठोख्) किञ्चित् भ्रान्ति मात्रो भूयात् ॥ पुनश्चान्याश्रमं नीलतृणाभा संभाति
तत्रापि इच्छन्ति गच्छ

- Website page link is Page 78. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 02.11.2020

Page 60

Notes

1. No notes

Website page link is Page 78



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 06.11.2020

Page 61

Consonant by consonant transliteration

61

1 चिनकिङ्किङ्क उउवउधं मवृभिनं च
2 क्षुत्रुमिष्टः ॥ ननु निनु ७ कुमेवे
3 उंकेरनत्रिकेवे कु द्धि पा भद्रिना ७ मं संकर
4 उपायं मउरुमि ७ द्द ॥ पवनपुत्रे ७
5 येमेषनिवगितभाम्पन्नानकुट्टे ७
6 रेम ॥ उयेभापुत्रुः करे ७ उगिभे
7 भारभारियाननिष्ट ॥ ७ ॥ यः कश्चि
8 वितु ७ उदैवभनीडिविस्तुनकु
9 कंमभामोत्र ॥ उदं उद्ममकुल
10 एरुडिउम्लुलुवयस्ते एदेवि
11 उिऊकंकेउिमः ॥ ननुभुठरुव
12 कंभुकल्प नरुवेउ ॥ उउः मकुडिने
13 मनेऊकः ७ ७ संयमः ॥ सुयंम
14 धिपुत्रुनामसुनेपुनपीरुनभा

न्ति न कि ञ्चि दभू ता त था ते षां स न्न्या सि नां द्र
ष्टा न्त मि त्य र्थः ॥ न नु नि गु णा त्म दे वो दु र्ल भो स्ति
तं के जा नि न्ति क थं ये क्षु ट्पि पा सा ति ना ज न्म सं सा र व्या धि
उ पा यं च त त्रा स्ति कि मि त्या ह ॥ प व न् पू रे त्
यो सो अ नि व गी त स् स्प र्श न् न भु छय त
त्रै श् ॥ ते य स् अ न्तः क रो ण् त गि सो सं
सा र स् जि य न् नि त्य् ॥ ३ ७ ॥ यः क च्चि (यो स)
न्नि गु णं ब्र ह्मै वा स्मी ति वि जा ना त्पू र (प व न् पू रे त्)
कं च स मा च रे त् ॥ इ त्या हं ब्र ह्म स इक ल्पा
ख्या हु ति नै श्च ला त्म भा व य जे पि जु हो त्वि
ति (व गी अ नि) कु म्भ कं क रो ति सः ॥ न तु मू र्ठ भा वा
त्क ष्ट क ल्प ना भ वे त् ॥ त तः स द्दृ ति नै
श्च ल्यं कु म्भ कः प्रा ण सं य मः ॥ अ यं चा
पि प्र बु द्धा नां म जा ना घा न पी ड न स् ॥

- Website page link is Page 79. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 06.11.2020

Page 61

Line wise sentence

61

1 चिनकिङ्किङ्क उखडेयं मनुमिनें च
2 क्षुत्रुमिष्टुः ॥ ननु निनु ७ म्मेवे
3 उंकेरनडि कवेडु दिपाभडिना ॥ मंभंभं
4 उथायंमउरुमि ॥ इदं ॥ पवनापुरेग
5 येभेषनिवगिउभाभजनानकुष्टेउ
6 रेमा ॥ उयेभापुत्रुः करे ॥ उगिभंभं
7 मारभरियनानिष्टा ॥ ३१ ॥ यः कश्चि
8 चित्तु ॥ इदं वैवर्भीडिविस्तु ननु
9 कंमभामो ॥ ३२ ॥ इदं इदं मकुल
10 एरुडिउम्लुला इरुवयले एदेवि
11 डिउ ॥ कंकेरेडिमः ॥ ननु भुचरुव
12 कंभुकल्प नरुवेज ॥ उतः मकुडिने
13 मन्त्रे कंकेः पू ॥ संयमः ॥ अयं यं
14 पिप्रुत्रुनामसुने पू नपी ननुभा

न्ति न किञ्चिदभूता तथा तेषां सन्न्यासिनां द्र
ष्टान्तमित्यर्थः ॥ ननु निर्गुणात्मदेवो दुर्लभोस्ति
तं के जानिन्ति कथं ये क्षुट्पिपासार्तिना जन्म संसार व्याधिः
उपायं च तत्रास्ति किमित्याह ॥ पवन् पूरेत्
योसो अनि वगी तस् स्पर्शन् न भुङ्क्ष्यत
त्रैश् ॥ तेयस् अन्तः करोण् तगि सो सं
सारस् जियन् नित्य् ॥ ३७ ॥ यः कच्चि (योस्)
न्निर्गुणं ब्रह्मैवास्मीति विज्ञानात्पूर (पवन् पूरेत्)
कं च समाचरेत् ॥ इत्याहं ब्रह्मसङ्कल्पा
ख्याहुतिर्नैश्चलात्मभावयज्ञेऽपि जुहोत्व
ति (वगी अनि) कुम्भकं करोति सः ॥ न तु मूढ भावा
त्कष्टकल्पना भवेत् ॥ ततः सद्वृत्ति नै
श्चल्यं कुम्भकः प्राणसंयमः ॥ अयं चा
पि प्रबुद्धा नामज्ञानां घानपीडनम् ॥

- Website page link is Page 79. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date -06.11.2020

Page 61

Final version

न्ति न किञ्चिदभूता तथा तेषां सन्न्यासिनां द्रष्टान्तमित्यर्थः ॥ ननु निर्गुणात्मदेवो दुर्लभोस्ति तंके जानिन्ति कथं ये क्षुट्पिपासार्तिना जन्म व्याधिः संसार उपायं च तत्रास्ति किमित्याह ॥ (पवन् पूरेत् योसो अनि वगी तस् स्पर्शन् न भुङ्ख्य त त्रैश् ॥ तेयस् अन्तः करोण् तगि सो संसारस् जियन् नित्य) ॥ ३७ ॥ यः कच्चिन्निर्गुणं (योस) ब्रह्मैवास्मीति विज्ञानात्पूरकं (पवन् पूरेत्) च समाचरेत् ॥ इत्याहं ब्रह्मसङ्कल्पाख्याहुतिर्नैश्चलात्मभावयज्ञेऽपि जुहोत्विति (वगी अनि) कुम्भकं करोति सः ॥ न तु मूढ भावात्कष्टकल्पना भवेत् ॥ ततः सद्वृत्ति नैश्चल्यं कुम्भकः प्राणसंयमः ॥ अयं चापि प्रबुद्धा नामज्ञानां घानपीडनम् ॥

- Website page link is Page 79. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

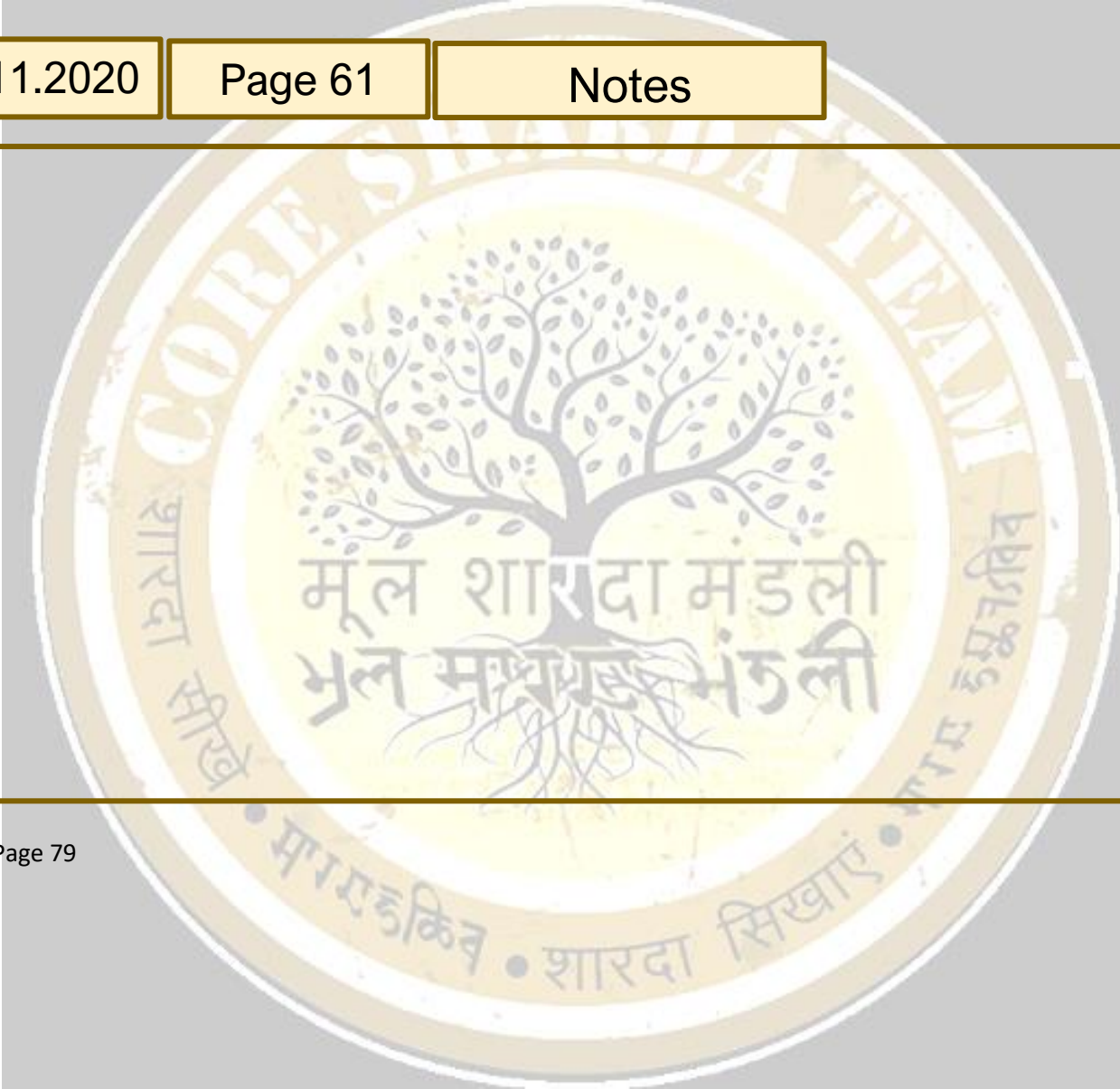
Date – 06.11.2020

Page 61

Notes

1. No notes

Website page link is Page 79





Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 11.11.2020

Page 62

Consonant by consonant transliteration

62

1 इति स्मृतेः ॥ नित्या नित्या दि वि वे
2 क ग ता रे च को पि भ वे त तः ॥ अ त ए व त (त स)
3 स्य पु रु ष स्य ना स्ति भ य दाः (स्पर्च न् न) क्षु इपि पा सा (भु छ्य त तृ ष)
4 द यः ष इत्रो {इ रो} गा दि श री रः ॥ य स्या स्ति (य स् ये)
5 ए त द्भ क्ति स्त द्यु क्ति र न्त रा त्म भा वे नि त्यो द ये (अ न्त क रो ण् त गी)
6 ॥ स सं सा रे षु लो को प का रे षु स र्व भू त द
7 या म य म ज्ञा न दो ष नि वा र णा र्थ ध र्म वा
8 नो नि त्यं (जि य न्) जा य मा नो भू या त् (नि त्य) ॥ य था श्री भ
9 ग वा न्न व ता रं ग्र ही त्वा ॥ प रि त्रा णा य सा
10 धू नां वि ना शा य च दु ष्क्र तां ॥ ध र्म सं स्था
11 प ना र्था य सं भ वा मि यु गे यु गे ॥ इ ति स्मृ
12 तेः ॥ न नु य न्त्र म न्त्रा रा ध णे न चे त्स का म
13 का म ना सि द्धि र्भ वे त् ते न नि र्गु णा त्म दे वो
14 पि ते षां का म का इक्ष ता नां च प्रा प्तो भ व न्ति

इ ति स्मृ तेः ॥ नि त्या नि त्या दि वि वे
का ग ता रे च को पि भ वे त तः ॥ अ त ए व त (त स)
स्य पु रु ष स्य ना स्ति भ य दाः (स्पर्च न् न) क्षु इपि पा सा (भु छ्य त तृ ष)
द यः ष इत्रो {इ रो} गा दि श री रः ॥ य स्या स्ति (य स् ये)
ए त द्भ क्ति स्त द्यु क्ति र न्त रा त्म भा वे नि त्यो द ये (अ न्त क रो ण् त गी)
॥ स सं सा रे षु लो को प का रे षु स र्व भू त द
या म य म ज्ञा न दो ष नि वा र णा र्थ ध र्म वा
नो नि त्यं (जि य न्) जा य मा नो भू या त् (नि त्य) ॥ य था श्री भ
ग वा न्न व ता रं ग्र ही त्वा ॥ प रि त्रा णा य सा
धू नां वि ना शा य च दु ष्क्र तां ॥ ध र्म सं स्था
प ना र्था य सं भ वा मि यु गे यु गे ॥ इ ति स्मृ
तेः ॥ न नु य न्त्र म न्त्रा रा ध णे न चे त्स का म
का म ना सि द्धि र्भ वे त् ते न नि र्गु णा त्म दे वो
पि ते षां का म का इक्ष ता नां च प्रा प्तो भ व न्ति

- Website page link is Page 80. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 11.11.2020

Page 62

Line wise sentence

Line No.	Sarada Script	Devanagari Transliteration
1	ॐ इति स्मृतेः ॥ नित्या नित्यादिविवे	इति स्मृतेः ॥ नित्या नित्यादिविवे-
2	कगतारे चकोपि भवेत्ततः ॥ अत एव त- (तस्)	का गतारे चकोपि भवेत्ततः ॥ अत एव त- (तस्)
3	स्य पुरुषस्य नास्ति भयदाः (स्पर्चन्न) क्षुड्पिपासा- (भुङ्क्ष्य त तृष्)	स्य पुरुषस्य नास्ति भयदाः (स्पर्चन्न) क्षुड्पिपासा- (भुङ्क्ष्य त तृष्)
4	दयः षड्त्रोगादि {षड् रोगादि} शरीरः ॥ यस्यास्ति (यस् ये)	दयः षड्त्रोगादि {षड् रोगादि} शरीरः ॥ यस्यास्ति (यस् ये)
5	एतद्भक्तिस्तद्युक्तिरन्तरात्मभावे नित्योदये (अन्तः करोण् तगी)	एतद्भक्तिस्तद्युक्तिरन्तरात्मभावे नित्योदये (अन्तः करोण् तगी)
6	॥ ससंसारेषु लोकोपकारेषु सर्वभूतद-	॥ ससंसारेषु लोकोपकारेषु सर्वभूतद-
7	यामयमज्ञानदोषनिवारणार्थं धर्म वा	यामयमज्ञानदोषनिवारणार्थं धर्म वा
8	नो नित्यं (जियन्) जायमानो भूयात् (नित्य) ॥ यथा श्रीभ	नो नित्यं (जियन्) जायमानो भूयात् (नित्य) ॥ यथा श्रीभ
9	गवान्न वतारं ग्रहीत्वा ॥ परित्राणाय सा-	गवान्न वतारं ग्रहीत्वा ॥ परित्राणाय सा-
10	धूनां विनाशाय चदुष्कृतां ॥ धर्मसंस्था-	धूनां विनाशाय चदुष्कृतां ॥ धर्मसंस्था-
11	पनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥ इति स्मृ	पनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥ इति स्मृ
12	तेः ॥ ननु यन्त्र मन्त्राराधणेन चेत्सकाम	तेः ॥ ननु यन्त्र मन्त्राराधणेन चेत्सकाम
13	कामनासिद्धिर्भवेत् तेन निर्गुणात्मदेवो	कामनासिद्धिर्भवेत् तेन निर्गुणात्मदेवो
14	ऽपितेषां काम काङ्क्ष तानां च प्राप्तो भवन्ति	ऽपितेषां काम काङ्क्ष तानां च प्राप्तो भवन्ति

- Website page link is Page 80. **Note:** Lines in blue font colour and in brackets are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. Red colour letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date –11.11.2020

Page 62

Final version

इति स्मृतेः ॥ नित्या नित्यादिविवेकागता रेचकोऽपि भवेत्ततः ॥ अत एव तस्य (तस्)
पुरुषस्य नास्ति भयदाः (स्पर्चन् न) क्षुड्पिपासादयः (भुङ्ख्य त तृष) षड्त्रोगादि {षड् रोगादि}
शरीरः ॥ यस्यास्ति (यस् ये) एतद्भक्तिस्तद्युक्तिरन्तरात्मभावे नित्योदये (अन्तः करोण्
तगी) ॥ ससंसारेषु लोकोपकारेषु सर्वभूतदयामयमज्ञानदोषनिवारणार्थं धर्म वा नो नित्यं
(जियन्) जायमानो भूयात् (नित्य) ॥ यथा श्रीभगवान्न वतारं ग्रहीत्वा ॥ परित्राणाय साधूनां
विनाशाय चदुष्क्रतां ॥ धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥ इति स्मृतेः ॥ ननु
यन्त्रमन्त्राराधणेन चेत्सकामकामनासिद्धिर्भवेत् तेन निर्गुणात्मदेवोऽपि तेषां काम काङ्क्ष
तानां च प्राप्तो भवन्ति

- Website page link is Page 80. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 11.11.2020

Page 62

Notes

1. The meaning of the phrase नित्यानित्यादिविवेकागता रेचकोऽपि is not clear.

Website page link is Page 80



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 11.11.2020

Page 63

Consonant by consonant transliteration

63

- 1 येन जन्म मरणादिव्याधि मोचनश्चेत्याशङ्कया
- 2 द॥३७॥ जलथमावोन्हुतवहन
- 3 तूरनावोन्रुव्वगमन्परिवर्जेजि
- 4 नित्य॥काठधेनिद्वदश्रमावोन्अन्तः
- 5 सकलोकपटचरित्॥३८॥ नीरस्तम्भ (जलथमावोन्)
- 6 नंनदीप्रवाहोस्थैर्यकरोत्यथावाजीवानां
- 7 निबद्ध्यतांजाडुंयोसमाचरेत्॥ससकामकर्म॥
- 8 कर्ताभवेत्तुम्भनंकर्मास्ति यथा तथा॥अग्नौच (हुतवहन)
- 9 (रूरनावोन्) शीतलताकरोत्यथवासौस्वस्वमतेनगा
- 10 मिनांभूतानामुन्मत्तमाचरतिसमोहनं
- 11 कर्मकर्ताभवति॥यष्टकर्माणांसाधने
- 12 नवाशत्रूणांहत्वासमारणेनकर्मचर्ता
- 13 विद्यते॥चेत्स्थूलशरीरसहितं (रुवगमन्) गगनेगम
- 14 ना (परिपर्जेजि) गमनंसमाचरेत्तच्छाटनकर्मकर्ता

ये न जन्म मरणादिव्याधि मोचनश्चेत्याशङ्कया
ह ॥ ३ ७ ॥ ज ल थ मा वो न् हु त व ह न्
तूर ना वो न् रु व्व ग म न् प रि व र्जे जि
नि त्य ॥ का ठ धे नि द्वा द् श्र मा वो न् अ न्तः
स क लो क प ट च रि त् ॥ ३ ८ ॥ नी र स्त म्भ (ज ल थ मा वो न्)
नं न दी प्र वा हो स्थै र्य क रो त्य था वा जी वा नां
नि ब द्ध्य तां जा डुं यो स मा च रे त् ॥ स स का म क र्म ॥
कर् ता भ वे त्त तु म्भ नं क र्मा स्ति य था त था ॥ अ ग्नौ च (हु त व ह न्)
(रू र ना वो न्) शी त ल ता क रो त्य थ वा सौ स्व स्व म ते न गा
मि नां भू ता ना मु न्म त्ता मा च र ति स मो ह नं
क र्म क र्ता भ व ति ॥ य ष्ट क र्मा णां सा ध ने
न वा श त्रू णां ह त्वा स मा र णे न क र्म च र्ता
वि द्य ते ॥ चे त्स्थू ल श री र स हि तं (रू व ग म न्) ग ग ने ग म
ना (प रि प र्जे जि) ग म नं स मा च रे त् रु च्छा ट न क र्म क र्ता

- Website page link is Page 81. **Note:** Lines in blue font colour and in brackets are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. Red colour letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 11.11.2020

Page 63

Line wise sentence

63		
1	वेन एनम मरणादिव्याधि मोचनश्चेत्याशङ्क्या-	येन जन्म मरणादिव्याधि मोचनश्चेत्याशङ्क्या-
2	ह ॥ ३७ ॥ जलथमा वोन् हुतवहन्	ह ॥ ३७ ॥ जलथमा वोन् हुतवहन्
3	तूरना वोन् रूव्व गमन् परि वर्जेजि	तूरना वोन् रूव्व गमन् परि वर्जेजि
4	नित्य ॥ काठ धेनि द्द्वद्रमा वोन् अन्तः	नित्य ॥ काठ धेनि द्द्वद्रमा वोन् अन्तः
5	सकलो कपट चरित् ॥ ३८ ॥ नीरस्तम्भ (जल् थमावोन्)	सकलो कपट चरित् ॥ ३८ ॥ नीरस्तम्भ (जल् थमावोन्)
6	नं नदीप्रवाहोस्थैर्यं करोत्यथा वा जीवानां	नं नदीप्रवाहोस्थैर्यं करोत्यथा वा जीवानां
7	निबद्ध्यतां जाड्यं यो समाचरेत् ॥ स सकामकर्म ॥	निबद्ध्यतां जाड्यं यो समाचरेत् ॥ स सकामकर्म ॥
8	कर्ता भवेत्तुम्भनं कर्मास्ति यथा तथा ॥ अग्नौ च (हुत वहन्)	कर्ता भवेत्तुम्भनं कर्मास्ति यथा तथा ॥ अग्नौ च (हुत वहन्)
9	(तूरनावोन्) शीतलता करोत्यथवाऽसौ स्व-स्वमतेन गा-	(तूरनावोन्) शीतलता करोत्यथवाऽसौ स्व-स्वमतेन गा-
10	मिनां भूतानामुन्मत्तमाचरति स मोहनं	मिनां भूतानामुन्मत्तमाचरति स मोहनं
11	कर्मकर्ता भवति ॥ यष्ठकर्माणां साधने	कर्मकर्ता भवति ॥ यष्ठकर्माणां साधने
12	नवाशत्रूणां हत्वा स मारणे न कर्मकर्ता	नवाशत्रूणां हत्वा स मारणे न कर्मकर्ता
13	विद्यते ॥ चेत्स्थूलशरीर सहितं (रूव्व गमन्) गगने गम-	विद्यते ॥ चेत्स्थूलशरीर सहितं (रूव्व गमन्) गगने गम-
14	ना (परिपर्जेजि) गमनं समाचरेत् रुच्छाटन कर्मकर्ता	ना (परिपर्जेजि) गमनं समाचरेत् रुच्छाटन कर्मकर्ता

- Website page link is Page 81. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date –11.11.2020

Page 63

Final version

येन जन्म मरणादिव्याधि मोचनश्चेत्याशङ्क्याह ॥ ३७ ॥ जल् थमावोन् हुतवहन् तूरना वोन्
रूव्व गमन् परिवर्जेजि नित्य ॥ काठ धेनि द्वद् श्रमावोन् अन्तः सकलो कपट चरित् ॥
३८ ॥ नीरस्तम्भ (जल् थमावोन्) नं नदीप्रवाहोस्थैर्यं करोत्यथा वा जीवानां निबद्ध्यतां
जाड्यं यो समाचरेत् ॥ स सकामकर्म ॥ -- कर्ता भवेत्तुम्भनं कर्मास्ति यथा तथा ॥ अग्नौ
च (हुतवहन्) (तूरनावोन्) शीतलता करोत्यथवाऽसौ स्व-स्वमतेन गामिनां
भूतानामुन्मत्तमाचरति स मोहनं कर्मकर्ता भवति ॥ यष्ठकर्माणां साधने नवाशत्रूणां हत्वा
स मारणे न कर्मकर्ता विद्यते ॥ चेत् स्थूलशरीरसहितं (रूव्व गमन्) गगने गमनागमनं
(परिपर्जेजि) समाचरेत्तच्छाटन कर्मकर्ता

- Website page link is Page 81. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 11.11.2020

Page 63

Notes

1. Line **63.08** – The word भवेत्तुम्भनं can be भवेत् उतम्भनम्
2. Line **63.14** – The word समाचरेत्तरुच्छाटनं can be समाचरेत् तरुच्छाटनं or समाचरेत्-तदुच्छाटनम्. But this needs to be validated by scholars

Website page link is Page 81



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 17.11.2020

Page 64

Consonant by consonant transliteration

64

1 लक्ष्मणे॥ कथुपेत्रं नं रुगुं गेगुथिवउडु
2 त्रानं वमत्रवमेकरं कडकडाववेज
3 ॥ एवं भुभु नं भेकनं भागं भुभुटनं व
4 मीकरं सत्रभमकडाः भकनात्रुः भ
5 वां डुल्लभाभः यथाभमभगी
6 मिक॥ उधंगगकुधु कनं त्रभम
7 कडकगकं कुतः निधुले निधुले नि
8 नु॥ डुमेवैधुधु कवतिः डुजगडुडु
9 कभेधेधुतुभेधुधुतुं कं कुं भेलागे
10 लिभाधुलि॥ कवभरगडेरेलिभाभ
11 लरुतुीकभिमनुं सुगवेरि॥ उ॥
12 कुमुभिकुः युधिकः कथितुधुधुतुीके
13 कुभेधुधुतुं भेधुधुतुं देवयनिधुधुतुं
14 यकेनतीरुलेनयुधुकेरुणभितुं

लक्ष्यते॥ काष्ठधेनूनां (काठधेनि) दुग्धं दोग्धा (दुद्गमावो न) पिवातदम्भ
तानां वशतावशेकरणकर्मकर्ताभावयेत्
॥ एवंस्तम्भनं मोहनं मारणमुश्चाटनं व
शीकरणं चतामसकर्माः सकालान्तः (अन्तःसकलो) स
र्वाइन्द्र (कपटगरित) जालभ्रमाभासः यथामरुमरी
चिका॥ तेषां रागद्वेषात्मकानां तामस
कर्मकारकाणां कुतः मुक्तिः निष्कलो निश्चलो नि
र्गुणात्मदेवोकथंताप्राप्तो भवति इत्यर्थः ॥ ३८ ॥
कसोपोषतकुसौषान्यीकंकुसंलागे
जिस्पूजि॥ कवसरगडोदेजिस्ज
लदान्यीकमि मन्त्र ईश्वरवोजि ॥ ३९ ॥
भूस्वामिन्कः (कोस) पुष्पिकः कापितस्य (पोषत) पत्नीकै (कुसपोषान्ये)
(कंकुसं) कुंसमैर्पूज्या (लागेजिस्पूजि) मितस्मै देवाय नित्यामृता
यकेनतीर्थ (कमिसर) जलेनगुडु (गडो) कंदधामितस्मै ॥ (देजिस)

- Website page link is Page 82. **Note:** Lines in blue font colour and in brackets are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. Red colour letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 17.11.2020

Page 64

Line wise sentence

64		<p>लक्षयते॥ काष्टधेनूनां (काठ धे नि) दुग्धं दोग्धापिवात (दुद् श्रमावोन्) द्भू तानां वशतावशेकरण कर्म कर्ता भावयेत् ॥ एवं स्तम्भनं मोहनं मारण मुश्चाटनं व शीकरणं च तामस कर्माः सकलान्तः (अन्तः सकलो) स र्वा इन्द्रजाल (कपट गरित्) भ्रमा भासः यथा मरुमरी चिका ॥ तेषां रागद्वेषात्मकानां तामस कर्म कारकाणां कुतः मुक्तिः निष्कलो निश्चलो नि र्गुणात्म देवो कथंता प्राप्तो भवति इत्यर्थः ॥ ३८ ॥ कसो पोष् त कुसौ पूषान्यी कं कुसं लागे जिस् पूजि॥ कव सर गडो देजिस् ज ल दान्यी कमि मन्त्र ईश्वर् वोजि ॥ ३९ ॥ भूस्वामिन्कः (कोस्) पुष्पिकः (पोष् त) कापि तस्य पत्नी (कुस पोषाण्ये) (कं कुसं) कैर्कु समैर्पूज्या (लागे जिस् पूजि) मि तस्मै देवाय नित्या मृता य केन तीर्थ (कमि सर) जलेन गुडुकं (गडो) दधामि तस्मै ॥ (देजिस्)</p>
----	--	--

- Website page link is Page 82. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date –17.11.2020

Page 64

Final version

लक्ष्यते॥ काष्टधेनूनां (काठ धे नि) दुग्धं दोग्धापि वा त (दुद् श्रमावोन) द्भूतानां वशता वशे
करणकर्म कर्ता भावयेत् ॥ एवं स्तम्भनं मोहनं मारणमुश्चाटनं वशीकरणं च तामस कर्माः
सकलान्तः (अन्तः सकलो) सर्वा इन्द्रजाल (कपट चरित्) भ्रमाभासः यथा मरुमरीचिका ॥
तेषां रागद्वेषात्मकानां तामसकर्म कारकाणां कुतः मुक्तिः निष्कलो निश्चलो निर्गुणात्मदेवो
कथं ता प्राप्तो भवति इत्यर्थः ॥ ३८ ॥ (कसो पोष् त कुसौ पूषान्यी कं कुसं लागेजिस् पूजि॥
कव सर गडो देजिस् जलदान्यी कमि मन्त्र ईश्वर् वोजि ॥ ३९ ॥) भूस्वामिन्कः (कोस्)
पुष्पिकः (पोष् त) कापि तस्य पत्नी (कुस पोषाण्ये) कैर्कुसमैर्पूज्यामि (कं कुसं) (लागेजिस्
पूजि) तस्मै देवाय नित्यामृताय केन तीर्थ (कमि सर) जलेन गुडुकं (गडो) दधामि तस्मै
॥ (देजिस)

- Website page link is Page 82. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 17.11.2020

Page 64

Notes

1. The phrase कैर्कुसमैर्पूज्यामि पूजयामि is not clear. Inputs required
2. The word गुडु is not clear. Inputs required

Website page link is Page 82



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 17.11.2020

Page 65

Consonant by consonant transliteration

65

1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11
12
13
14

कभिभरु ^{उंमुग}
 केनमन्त्रोच्चारणेन (कमिमन्त्र) युक्तेन स ईश्वरः (ईश्वर) मृत्यु
 र्के निजुले निजुलेयः ^{वेरि} मभुहृति
 मेहमहू ॥३७॥ भनपुथेउ ॥ काप्र
 धाहीरुवके कुमंलागेरिभापुलि
 ॥मिसरगंठेरेरिभाएलरुतीक
 धिभत्रुंमुगवेरि ॥२॥ भनेथुधि ^{भनाथेवाउ}
 कप्रथपत्री सुकेकुपुपुइवेर
 गिनीतिनिचुडि ^{उंमुग} सुनरु
 मिः सुकेकुपुपुसभामभुकरुत
 ॥उभ्रुंरुवुरुरुकिनाभानिया ^{रुवके}
 नित्रुनिथुधु ^{रुमे} उभिं मेउट्टुयेथर
 भाद्रुकेवुट्टुयेजयेत्रुत्रिष्टुये ॥३॥
 कभुवेरुडेवेनथधालेनभ्रुये
 ॥रुवेरुविहृडेवेउभ्रुवेयभुसुते ॥

के न म न्त्रो च्चा र णे न (क मि म न्त्र) यु क्ते न स ई श्व रः (ई श्व र) मृ त्यु
 हा
 र को नि र्गु णो नि श्च लो यः स मु द्ये ति (वो जि)
 में त्या श इक्य ॥ ३ ९ ॥ म न् पू षो त इ छ पू
 षा ण्यी भा व के कु सं ला गे जि स् पू जि
 ॥ शि श र स ग डो दे जि स् ज ल दा न्यी छु (स न् पो ष्त)
 पि म न्त्र ई श्व र् वो जि ॥ ४० ॥ म नो पु ष्पि (म न् पो ष् त)
 क स्त स्य प त्नी शु भे च्छा ख्या स्या त्स त्य वै रा (इ छ पो षा ण्यी)
 गि णी ति नि र्वृ ति ध {त्मा} र्मा त् ॥ ज्ञा न भू
 मि : शु भे श्छा ख्या प्र थ मा स सु दा ह्य ता
 ॥ त स्मा त्स द्भा (भा व के) व द्ढ भ क्ति ना मा नि या
 नि ता नि पु (कु सं) ष्पा णि त स्मिं चै त न्य रू पे प र
 मा त्म दे वा ऽव्य (ला गे जि स् पू जि) ये र्च य न्स न्नि त्या द्व ये ॥ न
 का ष्ठे वि द्य ते दे वो न पा षा णे न मृ न्म ये

- Website page link is Page 83. **Note:** Lines in blue font colour and in brackets are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. Red colour letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date –17.11.2020

Page 65

Final version

केन मन्त्रोच्चारणेन (कमि मन्त्र) युक्तेन स ईश्वरः (ईश्वर) मृत्युहारको निर्गुणो निश्चलो
यः (वोजि) समुद्येति मेत्याशङ्क्य ॥ ३९ ॥ मन् पूषो त इछ पूषाण्यी भावके कुसं लागेजिस्
पूजि ॥ शिशरस गडो देजिस् जलदान्यी छुपि मन्त्र ईश्वर् वोजि ॥ ४० ॥ मनो (मन् पोष्
त) पुष्पिकस्तस्य पत्नी (इछ पोषाण्यी) शुभेच्छाख्या स्यात्सत्यवैरागिणीति निर्वृत्ति
{धत्सात} धर्मात् ॥ ज्ञान भूमिः शुभेच्छाख्या प्रथमा समुदाहता ॥ तस्मात्सद्भाव (भावके)
दृढभक्ति नामानि यानि तानि (कुसं) पुष्पाणि तस्मिं चैतन्यरूपे परमात्म देवाऽव्य
(लागेजिस् पूजि) येर्चयन्सन्नित्या द्वये ॥ न काष्ठे विद्यते देवोन पाषाणे न मृन्मये ॥
भावो हि विद्यते देवो तस्माद्भावो यमुच्यते ॥

- Website page link is Page 83. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

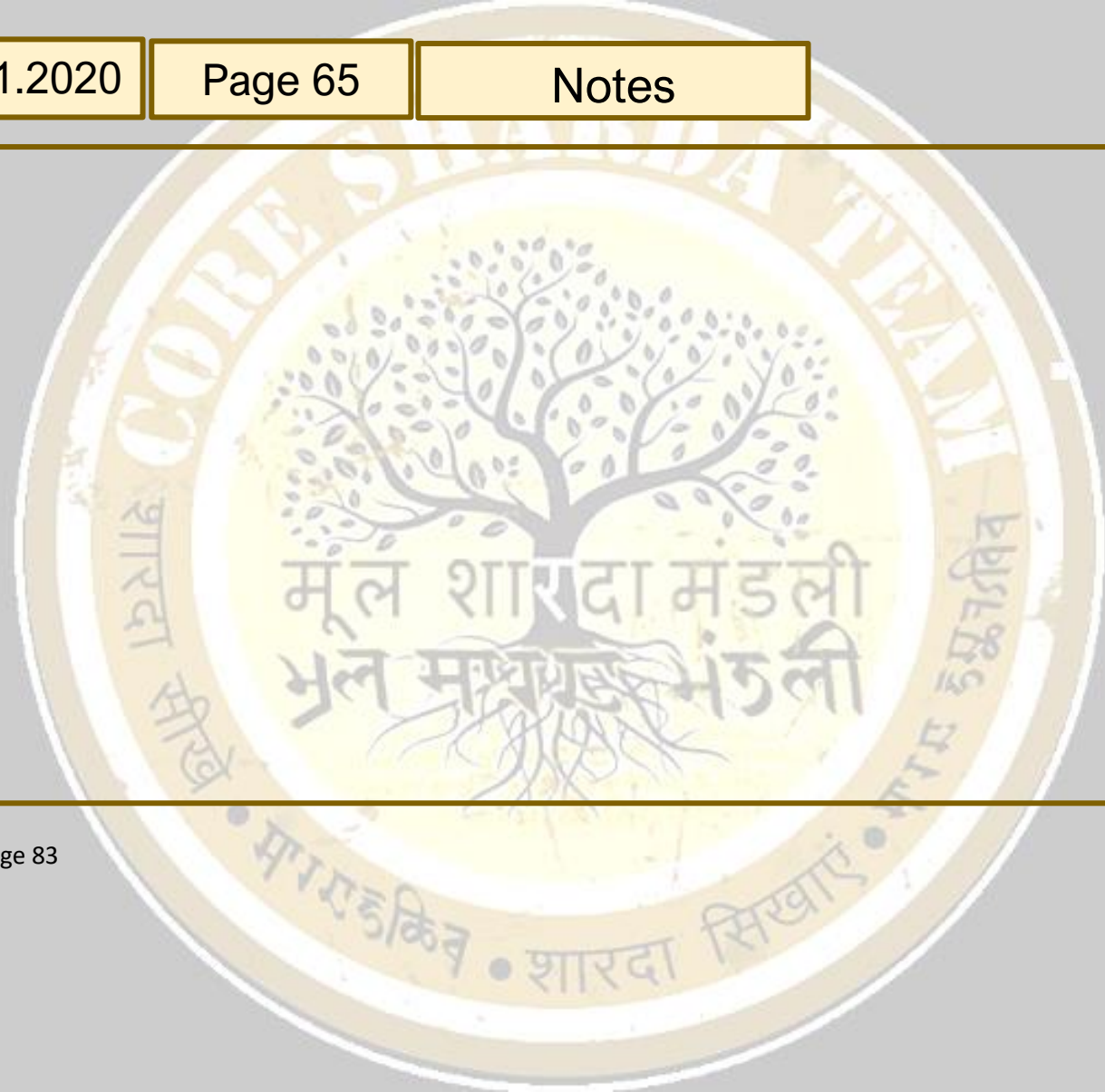
Date – 17.11.2020

Page 65

Notes

1. No notes

Website page link is Page 83





Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 20.11.2020

Page 66

Consonant by consonant transliteration

66

1 अतएवमूळिस्थानेनिश्चलात्मत्वेनस्थिति
 2 र्भवेत्प्राणापानश्चसंयोगभावेननिरोधसा
 3 चरेत्॥येनचिदानन्दरसामृतान्तःशि
 4 शकलाख्योप(शि श र स) जायतेतेनतस्मैअद्वैतात्मने
 5 परमदेवायशाशावातायगुड्तकं(गडोदेजिसु)प्रदातव्य
 6 म्॥आदौमौनमात्मभावमजपा(कुपिमन्त्र)गायत्री
 7 नाम्नामन्त्रोश्चारणेनयुक्तिन्भवेतेनश्व
 8 रःचिदानन्दरूपीनिर्गुणात्मदेवोकै
 9 वल्य(ईश्वरु)स्वर्थ(वोजि)पमुद्येतिचिन्तनमायातियो
 10 चिन्मात्रमित्यर्थः॥ननुश्रीसुन्दरित्वमसि
 11 साक्षादेश्वरीनिसन्देहःकस्माल्लोकात्
 12 वागमनमिहभूता॥पुनश्चप्रयाण
 13 कालेकुतःकस्मिन्लोकेकस्मिन्नाश्रमे
 14 केनसुपन्थायांगन्तव्यंत्वामित्याशङ्क्या॥

अ त ए व मू ळि स्था ने नि श्च ला त्म त्वे न स्थि ति
 र्भ वे त्प्रा णा पा न श्च सं यो ग भा वे न नि रो ध सा
 च रे त् ॥ ये न चि दा न न्द र सा मृ ता न्त ः शि
 श क ला ख्यो प (शि श र स) जा य ते ते न त स्मै अ द्वाै ता त्म ने
 प र म दे वा य शा शा वा ता य गु ड्त कं (ग डो दे जि सु) प्र दा त व्य
 म् ॥ आ दौ मौ न मा त्म भा व म ज पा (कु पि म न्त्र) गा य त्री
 ना म्ना म न्त्रो श्चा र णे न यु क्ति न्भ वे ते न श्व
 रः चि दा न न्द रू पी नि र्गु णा त्म दे वो कै
 व ल्य (ई श्व रु) स्व र्थ (वो जि) प मु द्ये ति चि न्त न मा या ति यो
 चि न्मा त्र मि त्य र्थः ॥ न नु श्री सु न्द रि त्व म सि
 सा क्षा दे श्व री नि स न्दे हः क स्मा ल्लो का त्
 वा ग म न मि ह भू ता ॥ पु न श्च प्र या ण
 का ले कु तः क स्मि न्लो के क स्मि न्ना श्र मे
 के न सु प न्था यां ग न्त व्यं त्वा मि त्या श ङ्क्या ॥

- Website page link is Page 84. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 20.11.2020

Page 66

Line wise sentence

66

1 अत एव मूल्निस्थाने निश्चलात्मत्वे नस्थिति
2 भवेत् प्राणा पानश्च संयोग भावेन निरोध सा
3 चरेत् ॥ येन चिदानन्दर सामृतान्तः शि
4 श कलाख्योप (शिशरस) जायते तेन तस्मै अ द्वैतात्मने
5 परम देवाय शाशवाता यगुड्तकं (गडो देजिस) प्रदा तव्य
6 म् ॥ आदौ मौनमात्म भाव मजपा (कुपि मन्त्र) गायत्री
7 नाम्ना मन्त्रोश् चारणेन युक्तिन् भवेतेन श्व
8 रः चिदानन्द रूपी निर्गुणात्म देवो कै
9 वल्य (ईश्वर) स्वर्थ (वोजि) पमुद्येति चिन्तन मायाति यो
10 चिन्मात्र मित्यर्थः ॥ ननु श्री सुन्दरित्वमसि
11 साक्षा देश्वरीनि सन्देहः कस्माल्लो कात
12 वा गमन मिह भूता ॥ पुनश्च प्रयाण
13 काले कुतः कस्मिन्लोके कस्मिन्ना श्रमे
14 केन सूपन्थायां गन्तव्यं त्वामित्या शङ्क्या ॥

अत एव मूल्निस्थाने निश्चलात्मत्वे नस्थिति
भवेत् प्राणा पानश्च संयोग भावेन निरोध सा
चरेत् ॥ येन चिदानन्दर सामृतान्तः शि
श कलाख्योप (शिशरस) जायते तेन तस्मै अ द्वैतात्मने
परम देवाय शाशवाता यगुड्तकं (गडो देजिस) प्रदा तव्य
म् ॥ आदौ मौनमात्म भाव मजपा (कुपि मन्त्र) गायत्री
नाम्ना मन्त्रोश् चारणेन युक्तिन् भवेतेन श्व
रः चिदानन्द रूपी निर्गुणात्म देवो कै
वल्य (ईश्वर) स्वर्थ (वोजि) पमुद्येति चिन्तन मायाति यो
चिन्मात्र मित्यर्थः ॥ ननु श्री सुन्दरित्वमसि
साक्षा देश्वरीनि सन्देहः कस्माल्लो कात
वा गमन मिह भूता ॥ पुनश्च प्रयाण
काले कुतः कस्मिन्लोके कस्मिन्ना श्रमे
केन सूपन्थायां गन्तव्यं त्वामित्या शङ्क्या ॥

- Website page link is Page 84. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date -20.11.2020

Page 66

Final version

न्ति न किञ्चिदभूता तथा तेषां सन्न्यासिनां द्रष्टान्तमित्यर्थः ॥ ननु निर्गुणात्मदेवो दुर्लभोस्ति तंके जानिन्ति कथं ये क्षुट्पिपासार्तिना जन्म व्याधिः संसार उपायं च तत्रास्ति किमित्याह ॥ (पवन् पूरेत् योसो अनि वगी तस् स्पर्शन् न भुङ्ख्य त त्रैश् ॥ तेयस् अन्तः करोण् तगि सो संसारस् जियन् नित्य) ॥ ३७ ॥ यः कच्चिन्निर्गुणं (योस) ब्रह्मैवास्मीति विज्ञानात्पूरकं (पवन् पूरेत्) च समाचरेत् ॥ इत्याहं ब्रह्मसङ्कल्पाख्याहुतिर्नैश्चलात्मभावयज्ञेऽपि जुहोत्विति (वगी अनि) कुम्भकं करोति सः ॥ न तु मूढ भावात्कष्टकल्पना भवेत् ॥ ततः सद्वृत्ति नैश्चल्यं कुम्भकः प्राणसंयमः ॥ अयं चापि प्रबुद्धा नामज्ञानां घानपीडनम् ॥

- Website page link is Page 84. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 20.11.2020

Page 66

Notes

1. No notes

Website page link is Page 84



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 20.11.2020

Page 67

Consonant by consonant transliteration

	67	
1	॥ र॥ अयम् कभिरेमकभिवडिः	॥ ४० ॥ आ य स् क मि दे श क सि ति स छे
2	नगकिं कडे कडे कवरन॥ अयुः	न् ग छिं क तो क तो क व जा न ॥ अ न्तः र ट
3	यानगोभावि छेनेभाः कभाकुम्	य ल गो म् व ति छय नो स् फु क स् कु स
4	मडा॥ र॥ कयादिमाकेनभने	स त् ॥ ४१ ॥ क या दि शा (क मि दे श) के न मा र्गे णा (क मि व ति)
5	गडां गमिधुमिकभिः वेवरनभि	ग ता हं (अ य स) ग मि ष्या मि (क छो न् ग छिं क तो) क स्मि न् नै व जा ना मि
6	इत्त॥ यम्भरुदेमभिः नसिमे	इ र्थ म् ॥ य स्मा द जो ह म स्मि ना स्ति मे
7	भउभदिभयुः वलिडा॥ भुधि	मृ त मा दि म ध्या न्त वा जि ता त् ॥ स ष्टि
8	भंदाकारं कारं दभगतिः भु	सं हा र का र ण का र णो हं म ग तिः स्ना
9	नत्रवेणयुक्तिः नसिभयिरुमुक्ति	न न्द बो ध यु क्ति त्ना स्ति म यि ब न्धु मु क्ति
10	विच॥ उदुमुकुयेभिः उदुः ॥ इडे	नि र्वा ण त त्व स्व रू पो स्मि त त्व तः ॥ इ त्ये ।
11	वंयेरनतिभभाः कुरेवभुः नसिउभु	वं यो जा ना ति म मा त्म दे व स्य ना स्ति त स्य
12	धनल्लमषवाभरं कुमिः कुमिः	पु न र्ज न्मा थ वा म र णं कु चि त्स्या दि ति
13	भदङ्गनीरुवेडा॥ येभभरुभनकिं	म हा त्म नी भ वे त् ॥ यो मा म ज म ना दिं

- Website page link is Page 85. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 20.11.2020

Page 67

Line wise sentence

67	
1	॥ ४० ॥ आयस् कमि देश कसि तिस छे
2	न् गछिं कतो कतो कव जान ॥ अन्तःर ट
3	यल गोम् वतिछ्यनोस् फुकस् कुस
4	सत् ॥ ४१ ॥ कया दिशा (कमि देश) केन मार्गेणा (कमिवति)
5	गताहं (अयस्) गमिष्यामि (कछोन् गछिं कतो) कस्मिन्नैव जानामि
6	इर्थम् ॥ यस्मा दजोहमस्मि नास्ति मे
7	मृतमादि मध्यान्त वाजितात् ॥ स्रष्टि
8	संहार कारण कारणोहं मगतिः स्ना
9	नन्द बोध युक्तित् नास्ति मयि बन्धु मुक्ति
10	निर्वाण तत्व स्वरूपोस्मि तत्वतः ॥ इत्ये ।
11	वं योजानाति ममात्म देवस्य नास्ति तस्य
12	पुनर्जन्मा थवा मरणं कुचित्स्या दिति
13	महात्मनी भवेत् ॥ योमाम जमनादिं

- Website page link is Page 85. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date -20.11.2020

Page 67

Final version

न्ति न किञ्चिदभूता तथा तेषां सन्न्यासिनां द्रष्टान्तमित्यर्थः ॥ ननु निर्गुणात्मदेवो दुर्लभोस्ति तंके जानिन्ति कथं ये क्षुट्पिपासार्तिना जन्म व्याधिः संसार उपायं च तत्रास्ति किमित्याह ॥ (पवन् पूरेत् योसो अनि वगी तस् स्पर्शन् न भुङ्ख्य त त्रैश् ॥ तेयस् अन्तः करोण् तगि सो संसारस् जियन् नित्य) ॥ ३७ ॥ यः कच्चिन्निर्गुणं (योस) ब्रह्मैवास्मीति विज्ञानात्पूरकं (पवन् पूरेत्) च समाचरेत् ॥ इत्याहं ब्रह्मसङ्कल्पाख्याहुतिर्नैश्चलात्मभावयज्ञेऽपि जुहोत्विति (वगी अनि) कुम्भकं करोति सः ॥ न तु मूढ भावात्कष्टकल्पना भवेत् ॥ ततः सद्वृत्ति नैश्चल्यं कुम्भकः प्राणसंयमः ॥ अयं चापि प्रबुद्धा नामज्ञानां घानपीडनम् ॥

- Website page link is Page 85. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

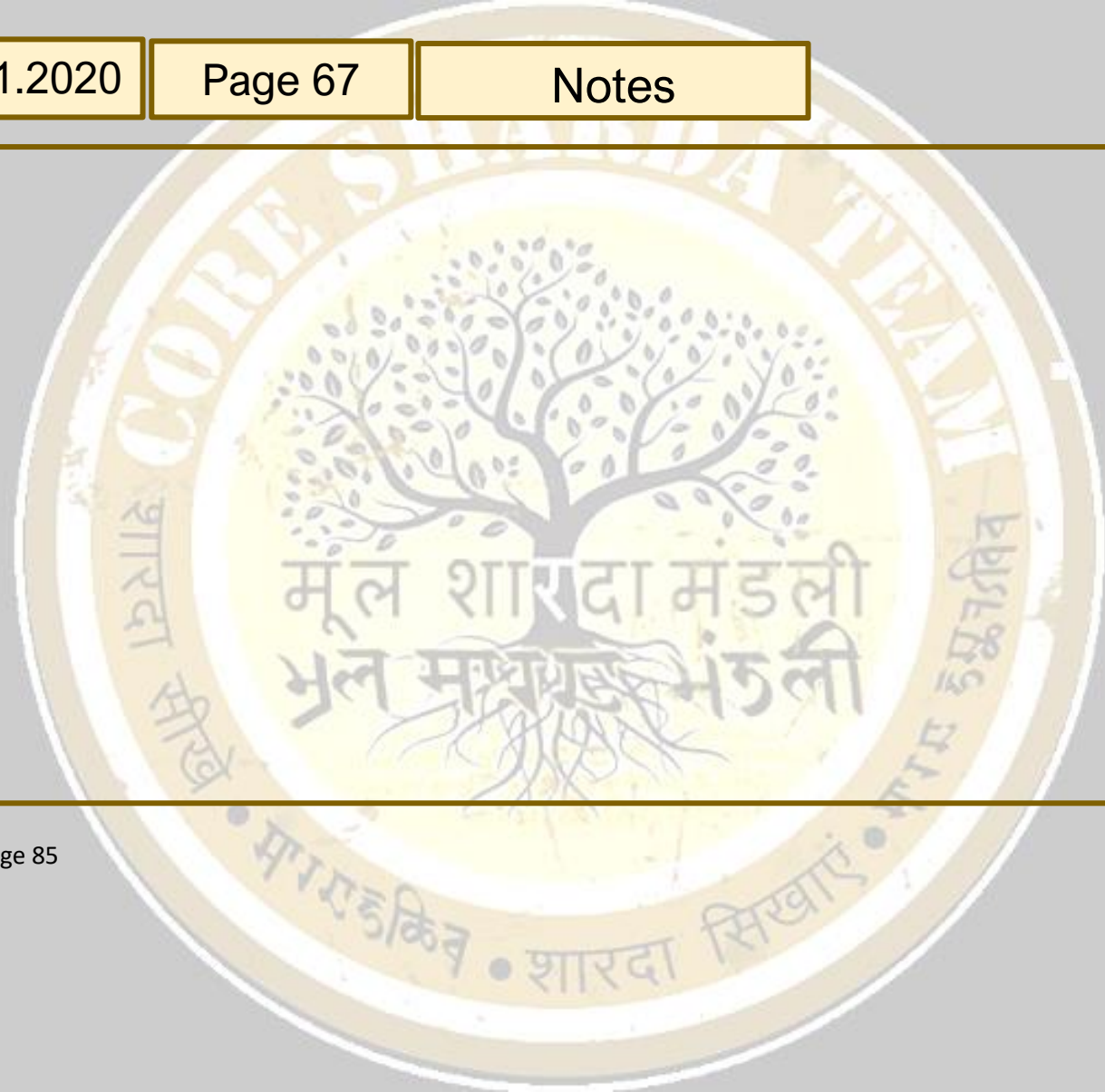
Date – 20.11.2020

Page 67

Notes

1. No notes

Website page link is Page 85





Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 23.11.2020

Page 68

Consonant by consonant transliteration

68

1 म वेडिलेकभदेवुरभा॥सुभंभुःभ
 2 भवेधुमचयथैःधुभुते॥^{भुःकाया}दृथिस्री
 3 रुगवसुहृधुभा^{भुःकाया}॥सुतुदभृठ
 4 वरुगैमग^{भुःकाया}उदुभुऊपमननहृकि
 5 हेवभेक^{भुःकाया}उदुभुजेविभनभायति
 6 उउकिंरुंकेडियेराकुःधु^{भुःकाया}गैम
 7 रः यउभंयडिलियंरुवमेधिमः॥भ
 8 कामभुडेनदीधुवाहमभुंगमुडिन
 9 मरुयदृकूयषा^{भुःकाया}उदुः॥ननुस्रीभुः
 10 विमुतुदभृठवभुउउदुभुऊमेभिक
 11 धमिडिकिंरुदुभुलंकउदुभुऊ
 12 उउभिरुमहृ॥२०॥गगनासुयऊ
 13 उलासुयासुयामिनपररुउरु॥
 14 सुयुमरुनाधुधुसुयामियेभकले

च वै ति लो क म हे श्व र म् ॥ अ सं मू ढः स
 म त्ये षु स र्व पा पैः प्र मु च्य ते ॥ इ त्य पि श्री
 भ ग द्वा क्य प्रा मा ण्या त् ॥ अ न्त र्या स्य (अ न्तः दा य) भा
 वा द गो च रा त्म त त्व स्व रू प द र्श न त्र्य द
 त्ये व मे का न्त त त्व मा र्गे (ल गे स् व ति) वि म र्श मा या ति
 त त्र किं (कु स स त) दृ ढं क रो ति यो ज डः प्रा ण (ढु क स) गो च
 रः य त्र सं या ति वि ल यं ह व शो पि सः ॥ म
 हा स मु द्रे न दी प्र वा ह म स्तं ग च्छ ति ना
 म रू प त्य क्तव य था इ त्य र्थः ॥ न नु श्री सु न्द
 रि अ न्त र्या म्य भा वा मृ तं त त्र्य स्व रू पो स्ति क
 थ मि ति किं द्र व्य म न्य णं क र्त व्य मा त्मा र्च ।
 ण र्थ मि त्या श इक्य ॥ ४ १ ॥ ग ग न् शू य् भू ।
 त ल् शू य् दि न् प र भा त रा त् ॥
 अ र्घ्य च न्द न् पु ष्पा णे चू य् चि ये स क लो

- Website page link is Page 86. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 23.11.2020

Page 68

Line wise sentence

68

1 म वेडिलेकभदेवुरभा॥सुभेमुहःम
2 भट्टेषुमचयथैःधुमुमुते॥इत्यिमी
3 रुगवसु रुधुभा ॥३३॥सुतु दधुठ
4 वाम्गोमरु उदुमुकुयमन द्वादि
5 देवभेकतु उदुभा जेविभजभा यति
6 उउकिंरुं कंगेडियेराकुःधु गेम
7 रः यउभंयडिलिये रुवमेधिमः॥म
8 दमभुके नदीधुवा दमभुंगमु डिन
9 मरुयदुका यष उदुः॥ननुसुभुद
10 विमुतु दधुठ वाम उउदुमुकुभेमुिक
11 धमिडिकिंरुदुभय लंकउदुभा कुच
12 उउमिदुमरु ॥२०॥गगना सुयाकु
13 उला सुया सुयादिना यरुउराज
14 सुमुमरु नाधुधु सुयामियेभकले

चवैति लोक महेश्वरम् ॥ असं मूढः स
मत्येषु सर्व पापैः प्रमुच्यते ॥ इत्यपि श्री
भगद् वाक्य प्रामाण्यात् ॥ अन्तर्यास्य (अन्तः दाय) भा
वाद गोचरात्म तत्व स्वरूप दर्शनत्रय द
त्येवमे कान्त तत्व मार्गे (लगेस् वति) विमर्श मायाति
तत्र किं (कुस सत्) दृढं करोति योजडः प्राण (दुकस) गोच
रः यत्र संयाति विलयं हवशोपिसः ॥ म
हास मुद्रे नदी प्रवाह मस्तं गच्छति ना
म रूपत्य क्त्व यथा इत्यर्थः ॥ ननु श्री सुन्द
रि अन्तर्याम्य भावा मृतं तत्र्य स्वरूपोस्ति क
थ मिति किं द्रव्य मन्पणं कर्तव्य मात्मार्च ।
णार्थ मित्या शङ्क्य ॥ ४ १ ॥ गगन् शूय भू ।
तल् शूय दिन् परभा तरात् ॥
अर्घ्य चन्दन् पृष्पाणे चूय चिये सकलो

- Website page link is Page 86. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date –23.11.2020

Page 68

Final version

न्ति न किञ्चिदभूता तथा तेषां सन्न्यासिनां द्रष्टान्तमित्यर्थः ॥ ननु निर्गुणात्मदेवो दुर्लभोस्ति तंके जानिन्ति कथं ये क्षुट्पिपासार्तिना जन्म व्याधिः संसार उपायं च तत्रास्ति किमित्याह ॥ (पवन् पूरेत् योसो अनि वगी तस् स्पर्शन् न भुङ्ख्य त त्रैश् ॥ तेयस् अन्तः करोण् तगि सो संसारस् जियन् नित्य) ॥ ३७ ॥ यः कच्चिन्निर्गुणं (योस) ब्रह्मैवास्मीति विज्ञानात्पूरकं (पवन् पूरेत्) च समाचरेत् ॥ इत्याहं ब्रह्मसङ्कल्पाख्याहुतिर्नैश्चलात्मभावयज्ञेऽपि जुहोत्विति (वगी अनि) कुम्भकं करोति सः ॥ न तु मूढ भावात्कष्टकल्पना भवेत् ॥ ततः सद्वृत्ति नैश्चल्यं कुम्भकः प्राणसंयमः ॥ अयं चापि प्रबुद्धा नामज्ञानां घानपीडनम् ॥

- Website page link is Page 86. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

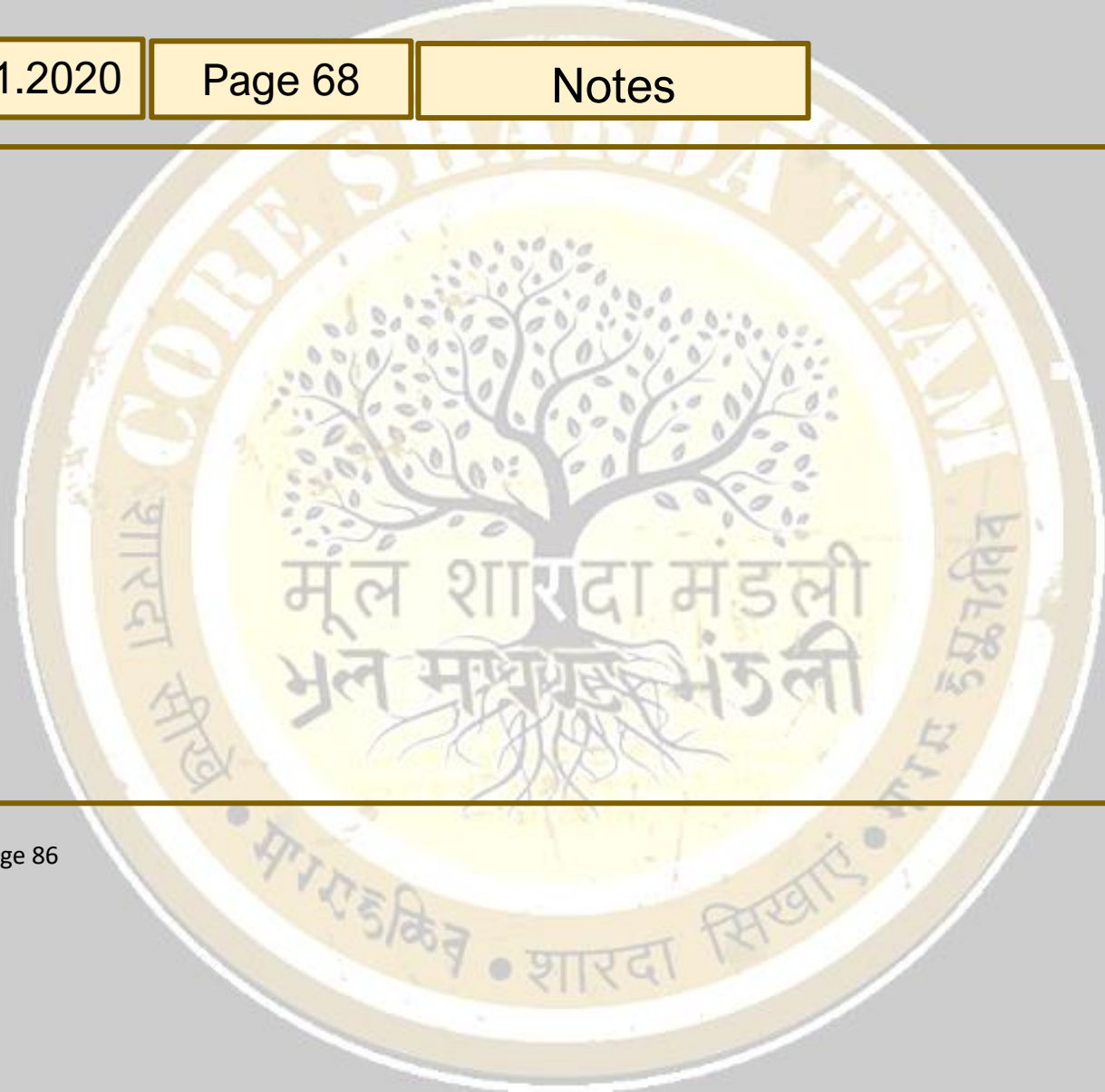
Date – 23.11.2020

Page 68

Notes

1. No notes

Website page link is Page 86





Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 23.11.2020

Page 69

Consonant by consonant transliteration

69

1 लागे जि क्या ह ॥ ४२ ॥ ग ग न (ग ग न) म न्त रि क्षं
2 म ना दिं द शे न्द्रि या नि प ज्य प्रा णा द
3 य श्चै वं सू क्षम श री र व्या प को आ त्मै कं त्व में
4 वा सि प्र त्य क्षः ॥ घृ त स्य ते जौ स्ति य द्वा
5 द्वा प कः ॥ भू त ल श्च प ज्य म हा भू ता
6 द यः स्थू ल श री र लु प्त पि ण्ड व्या प कं
7 त्व में व (शू य) वृ क्षे षु र सं क्षी रे षु घृ त मि व ॥
8 य त्पि ण्डं त द ण्ड श्च प्रो क्तः त स्मा त्व में व (शू य) इ
9 दं दि ना भ सः जा गृ (दि नं) व र्ण ना ना र्थ प वि
10 वि ध प्र का र भा स मा नः ॥ घ ट भे दा द्य
11 भे दो घ ट द्र ष्टो सि य था ॥ त्व में व (शू य) स्थू ल ना म्ना
12 अ में रे (प छं त) छा या ख्यं (रा त) रा त्रि व र्णो व हु धा स्व प्ने
13 ए को सि भो क्त्वा त्व द्वि त्य रि क्तो ना स्ति क श्चि
14 त् ॥ य था ना ना चि त्र का र में को क र्ता रं चि
15 त्व क रः ॥ त में व भा न्त म नु भा ति स र्वं त स्य

लागे जि क्या ह ॥ ४२ ॥ ग ग न (ग ग न) म न्त रि क्षं
म ना दिं द शे न्द्रि या नि प ज्य प्रा णा द
य श्चै वं सू क्षम श री र व्या प को आ त्मै कं त्व में
वा सि प्र त्य क्षः ॥ घृ त स्य ते जौ स्ति य द्वा
द्वा प कः ॥ भू त ल श्च प ज्य म हा भू ता
द यः स्थू ल श री र लु प्त पि ण्ड व्या प कं
त्व में व (शू य) वृ क्षे षु र सं क्षी रे षु घृ त मि व ॥
य त्पि ण्डं त द ण्ड श्च प्रो क्तः त स्मा त्व में व (शू य) इ
दं दि ना भ सः जा गृ (दि नं) व र्ण ना ना र्थ प वि
वि ध प्र का र भा स मा नः ॥ घ ट भे दा द्य
भे दो घ ट द्र ष्टो सि य था ॥ त्व में व (शू य) स्थू ल ना म्ना
अ में रे (प छं त) छा या ख्यं (रा त) रा त्रि व र्णो व हु धा स्व प्ने
ए को सि भो क्त्वा त्व द्वि त्य रि क्तो ना स्ति क श्चि
त् ॥ य था ना ना चि त्र का र में को क र्ता रं चि
त्व क रः ॥ त में व भा न्त म नु भा ति स र्वं त स्य

- Website page link is Page 87. **Note:** Lines in blue font colour and in brackets are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. Red colour letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 23.11.2020

Page 69

Line wise sentence

69

1 लगेलि क्वाह ॥ ४२ ॥ गगन भत्रु रिहं
2 भनदिं रुमेद्रिय निपाकुपु ॥ ५ ॥
3 यश्चैवं सूक्ष्म शरीर व्यापको आत्मैकं त्वमें
4 वसिप्रुहः ॥ ५ ॥ उभृते लेसियसु
5 सुयकः ॥ ५ ॥ उल्लपकु भदकु उ
6 रुयः सु लनगीर लपुपि ५ वृथकं
7 इमेव वहेषु रभंहीरेषु ५ उभिव ॥
8 यद्दि कुं उरु ५ सुपु कुः उभ इमेव
9 दंदि नरुमः ५ उव ले न न उयवि
10 विपुकारुमभनः ॥ ५ ॥ उकेरु
11 हेदेथरु सुभियसा ॥ इमेव सु नपु
12 भुमेरेकयापुं गडिवले वरुण सुपु
13 लकेभिके कु इद्रि टि कु नभिकके
14 ग ॥ यषा नन मि कु रभे के क तु गं मि
15 इकरः ॥ उमेव रु उ भ नु रु ति म चं उष्ट

लागेजि क्याह ॥ ४२ ॥ गगन (गगन) मन्तरिक्षं
मनादिं दशेन्द्रियानि पञ्च प्राणा द
यश्चैवं सूक्ष्म शरीर व्यापको आत्मैकं त्वमें
वासि प्रत्यक्षः ॥ घृतस्यते जौस्ति यद्व
द्व्या पकः ॥ भूतलश्च पञ्च महा भूता
दयः स्थूल शरीर लुप्त पिण्ड व्यापकं
त्वमेंव (शूय) वृक्षेपुर संक्षीरेषु घृत मिव ॥
यत्पिण्डंत दण्डश्च प्रोक्तः तस्मात्व मेंव (शूय) इ
दंदि नाभसः जागृ (दिनं) वर्णं नानार्थं पवि
विध प्रकार भास मानः ॥ घट भेदाद्य
भेदो घट द्रष्टोसि यथा ॥ त्वमेंव (शूय) स्थूल नाम्ना
अमेंरे (पर्छत) छायाख्यं (रात) रात्रि वर्णो बहुधा स्वप्ने
एकोसि भोक्त्वा त्वद् वित्य रिक्तो नास्ति कश्चि
त् ॥ यथा नाना चित्रकार मेंको कर्तारं चि
त्र क रः ॥ त में व भा न्त म नु भा ति स र्वं त स्य

- Website page link is Page 87. **Note:** Lines in blue font colour and in brackets are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. Red colour letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date -23.11.2020

Page 69

Final version

न्ति न किञ्चिदभूता तथा तेषां सन्न्यासिनां द्रष्टान्तमित्यर्थः ॥ ननु निर्गुणात्मदेवो दुर्लभोस्ति तंके जानिन्ति कथं ये क्षुट्पिपासार्तिना जन्म व्याधिः संसार उपायं च तत्रास्ति किमित्याह ॥ (पवन् पूरेत् योसो अनि वगी तस् स्पर्शन् न भुङ्ख्य त त्रैश् ॥ तेयस् अन्तः करोण् तगि सो संसारस् जियन् नित्य) ॥ ३७ ॥ यः कच्चिन्निर्गुणं (योस) ब्रह्मैवास्मीति विज्ञानात्पूरकं (पवन् पूरेत्) च समाचरेत् ॥ इत्याहं ब्रह्मसङ्कल्पाख्याहुतिर्नैश्चलात्मभावयज्ञेऽपि जुहोत्विति (वगी अनि) कुम्भकं करोति सः ॥ न तु मूढ भावात्कष्टकल्पना भवेत् ॥ ततः सद्वृत्ति नैश्चल्यं कुम्भकः प्राणसंयमः ॥ अयं चापि प्रबुद्धा नामज्ञानां घानपीडनम् ॥

- Website page link is Page 87. **Note:** Lines in **blue font colour and in brackets** are Vaak in Kashmiri language and rest is Sanskrit commentary elaborating the meaning of said Vaak. **Red colour** letters, words and sentences represent errors and { } represent correct versions



Sarada to Devanagari Transliteration

Date – 23.11.2020

Page 69

Notes

1. No notes

Website page link is Page 87